शुक्लयजुर्वेदीय
रुद्राष्टाध्यायी

(पार्थिवपूजन - शतरुद्रीसहिता)

डॉ. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

॥ श्रीः ॥

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला
292

पार्थिवपूजन-शतरुद्रीसहिता

शुक्लयजुर्वेदीयरुद्राष्टाध्यायी

संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेता

व्याख्याकारः
डॉ० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी
साहित्य-आयुर्वेद-ज्यौतिष-आचार्य
एम.ए., पी-एच्.डी., डी.एस-सी.ए.

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

शु० य० रुद्राष्टाध्यायी

पृष्ठ : 18+130

प्रकाशक

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक)

के. 37/117 गोपालमन्दिर लेन

पो. बा. नं. 1129, वाराणसी 221001

दूरभाष : +91 542-2335263; 2335264

email : chaukhambasurbharatiprakashan@gmail.com

website : www.chaukhamba.co.in

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

संस्करण 2017 ई०

मूल्य : ₹ 55.00

अन्य प्राप्तिस्थान

चौखम्बा पब्लिशिंग हाउस

4697/2, भू-तल (ग्राउण्ड फ्लोर)

गली नं. 21-ए, अंसारी रोड

दरियागंज, नई दिल्ली 110002

दूरभाष : +91 11-23286537

email : chaukhambapublishinghouse@gmail.com

•

चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान

38 यू. ए. बंगलो रोड, जवाहर नगर

पो. बा. नं. 2113, दिल्ली 110007

चौखम्बा विद्याभवन

चौक (बैंक ऑफ बड़ौदा भवन के पीछे)

पो. बा. नं. 1069, वाराणसी 221001

समर्पण

श्रौतस्मार्तधर्मधुरन्धर ! परमशैव ! पूज्य पितृचरण !

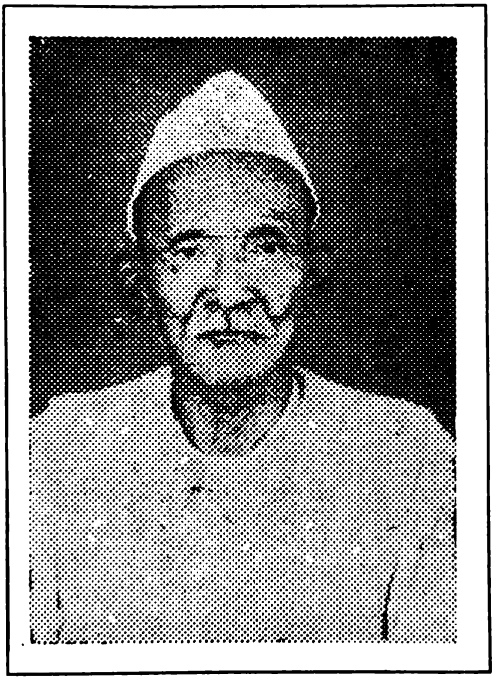

आपके शुभाशीर्वाद का यह सुवासित प्रसून आपको सादर समर्पित है।

—*ब्रह्मानन्द*

प्राक्कथन

'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्'

गणनाथंसरस्वतीरविरुद्रबृहस्पतीन् ।
पञ्चैतान् संस्मरेन्नित्यं वेदवाणीं प्रवर्तये।।

सभी प्रकार के श्रौत-स्मार्त धर्मों का मूल वैदिक वाङ्मय है। यही सर्वविध ज्ञान-विज्ञान का भण्डार है। कहीं-कहीं वेद को साक्षात् नारायण रूप स्वीकारा है, अन्यत्र इसको परमात्मा का निःश्वसित कहा गया है। यही कारण है कि इसको अनादि तथा अपौरुषेय आदि विशेषणों से गौरवान्वित किया गया है। इसमें धर्म के प्रवृत्ति एवं निवृत्ति लक्षण विद्यमान हैं। प्रवृत्ति लक्षण वाला धर्म निष्काम कर्मों का बोध कराकर उनसे चित्तशुद्धि के द्वारा मनुष्यमात्र को निवृत्ति की ओर ले जाता है और निवृत्ति लक्षणवाला धर्म ज्ञान-वैराग्य की प्राप्ति कराकर मोक्ष-प्राप्ति कराने का उत्तम साधन है।

'शुक्लयजुर्वेदसंहिता' का महत्त्वपूर्ण अंश यह 'रुद्राष्टाध्यायी' है। इसका उल्लेख उपनिषदों, स्मृतियों, पुराणों तथा मीमांसासूत्रों में सुलभ है। इसमें १० अध्यायों का संग्रह है। इसका प्रथम से अष्टम अध्याय तक मूल मन्त्र भाग है, अन्तिम दो अध्याय जगन्मंगल की भावना से शान्ति एवं ईश्वर-प्रार्थना स्वरूप संगृहीत हैं।

वैदिक वाङ्मय का ज्ञान उसके षडंगों (शिक्षा-कल्प-व्याकरण-निरुक्त-छन्द-ज्योतिष) के ज्ञान से पूर्ण होता है। इसकी एक स्वतन्त्र परम्परा है, जिसका सम्पूर्ण भार द्विजातियों पर निर्भर है। वेदों के सस्वर पाठ को स्वाध्याय कहते हैं। इसका भी एक विशिष्ट महत्त्व है, परन्तु यह पद्धति एकाङ्गीण है। सर्वांगपूर्ण पाठ के लिए प्रत्येक मन्त्र के ऋषि, छन्द, देवता आदि का उच्चारण कर विनियोग करना और उसके साथ मन्त्र का अर्थज्ञान

होना भी आवश्यक है। अर्थज्ञान के बिना किया हुआ स्वाध्याय भारस्वरूप होता है।

धर्मशास्त्रों में रुद्राष्टाध्यायी के पाठ से सभी प्रकार के पापों का विनाश होने की चर्चा है। इसमें भी पुरुषसूक्त के जप-पाठ का विशेष महत्त्व है। यथा—

चमकं नमकं चैव पुरुषं सूक्तमेव च। नित्यं त्रयं प्रयुञ्जानो ब्रह्मलोके महीयते॥१॥
चमकं नमकं होतृञ्जपेत् पुरुषसूक्तकम्। प्रविशेत् स महादेवं गृहं गृहपतिर्यथा॥२॥
भस्मदिग्धशरीरस्तु भस्मशायी जितेन्द्रियः। सततं रुद्रजाप्योऽसौ परां मुक्तिमवाप्स्यति॥३॥
रोगवान्पापवांश्चैव रुद्रं जप्त्वा जितेन्द्रियः। रोगात्पापाद् विनिर्मुक्तो ह्यतुलं सुखमश्नुते॥४॥

पुरुषसूक्त, नीलसूक्त और चमकाध्याय का जो प्रतिदिन तीन बार पाठ करता है, वह ब्रह्मलोक को प्राप्त करता है। जो उक्त तीन सूक्तों का प्रतिदिन पाठ करता है वह महादेव में उस प्रकार प्रवेश पाता है जिस प्रकार गृहपति अपने घर में। शरीर में भस्म लगाने से, भस्म में शयन करने से, जितेन्द्रिय होकर निरन्तर रुद्री का पाठ करने से मनुष्य मुक्ति प्राप्त करता है। और जो रोगी अथवा पापी इसका श्रद्धापूर्वक पाठ करते हैं वे भी रोगों तथा पापों से मुक्त होकर अनुपम आनन्द का अनुभव करते हैं।

इसमें ब्रह्म के निर्गुण एवं सगुण रूपों का वर्णन, उपासना का प्रकार, भक्ति-महिमा, रोग-शान्तिविधि तथा यज्ञों का विधान आदि विषय भलीभाँति विवेचित हैं। अतः आध्यात्मिक सुख के लिए अर्थ सहित इसका पाठ द्विजाति मात्र को अवश्य करना चाहिए।

विशेषता—आठवें अध्याय के ४, ८, १२, १५, १८, २१, २३, २४, २५ और २७वें मन्त्र के अन्त में न. लिखा है। इनका प्रयोग 'षडङ्ग शतरुद्री' में निम्नोक्त प्रकार से होता है।

षडङ्ग शतरुद्री—सर्वप्रथम प्रारम्भ से ७वें अध्याय तक पढ़ें, फिर ८वें अध्याय के ४ मन्त्रों ('नमस्ते……से……कल्पन्ताम्' तक) को पढ़कर सम्पूर्ण ५वाँ अध्याय पढ़ें, फिर ८वें अध्याय के अगले ४ मन्त्र पढ़ें। इस

प्रकार १० बार आठवें अध्याय के साथ ५वें अध्याय का पाठकर ८वें अध्याय के शेष २८,२९वें मन्त्रों को पढ़कर अन्त में पुन: ५वें अध्याय को पूरा पढ़ें। ऐसा करने से ५वें अध्याय की ११ आवृत्तियाँ हो जायेगीं। इसके साथ शान्तिकाध्याय तथा स्वस्तिप्रार्थना (९वाँ-१०वाँ) अध्याय पढ़कर एक पाठ पूर्ण होता है।

शतरुद्री—रुद्राष्टाध्यायी को साङ्गोपाङ्ग प्रस्तुत करने की दृष्टि से इस संस्करण में सम्बन्धित समस्त विषय जोड़ दिये गये हैं। 'शतरुद्री' का शास्त्रीय क्रम इसके अन्त में अलग से दे दिया गया है।

आभार—इसके सम्पादन में सम्प्रति स्वर्गीय पूज्य-पितृचरणों का शुभाशीर्वाद सहायक रहा है। अत: उनके प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना पवित्र कर्तव्य समझता हूँ।

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन के अधिकारियों के सहयोग से इसका प्रकाशनकार्य सुचारुरूप से सम्पन्न हो सका है, एतदर्थ वे साधुवाद के पात्र हैं।

वेदवेदाऽभ्रयुग्मेऽब्दे शिवरात्रिदिनेऽमले।
शम्भो: कृपाकटाक्षेण भाष्यं सम्पूर्णतामगात्॥१॥
तारादत्ततनूजस्य ब्रह्मानन्दत्रिपाठिन:।
अष्टाध्याय्यां कृतं भाष्यं राजतां पठतां हृदि॥२॥

ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

विषय-सूची

रुद्राभिषेकमाहात्म्यम्	९
रुद्राभिषेकप्रकारा:	१०
भस्मधारणविधि:	१३
रुद्राक्षधारणनिर्देश:	१४
रुद्राक्षधारणप्रकार:	१४
साम्बसदाशिवपूजनम्	१४
रुद्राष्टकपाठसङ्कल्प:	१७
षडङ्गन्यासा:	१७
शुक्लयजुर्वेदरुद्राष्टाध्यायी	१-१०८
परिशिष्टम्—	
पीठमूर्ति:	१०९
पार्थिवपूजनम्	११०
प्रार्थना	१११
नीराजनम्	११२
मानसपूजनम्	११३
पुष्पाञ्जलि:	११४
भाष्यकर्तुर्वंशवर्णनम्	११५

रुद्राभिषेकमाहात्म्यम्

श्री शिव उवाच—

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि रुद्रासेचनकर्मण:।
महिमानं मया प्रोक्तं सनकाय शुचिव्रते ॥१॥

देव्युवाच—

कदा स मुनिशार्दूल: प्राप्तस्त्वां केन हेतुना।
कथं रुद्राभिषेकस्य महिमा वर्णितस्त्वया॥२॥

श्रीशिव उवाच—

एकदा बालरूप: स विचरन् पृथिवीतले ।
ददर्श क्लिष्टकर्माणं लोकं दु:खमवाप ह ॥३॥

तद्दुख:दु:खितो नूनं कैलासं गतवान् द्रुतम् ।
लोकानां दु:खसन्दोहं कथयामास माम्प्रति॥४॥

पप्रच्छ च लघूपायं दु:खनाशाय देहिनाम् ।
मया यत् कथितं भद्रे तच्छृणुष्वावधारय ॥५॥

मुनिसत्तम ते दु:खं दृष्ट्वा मे मानसं ध्रुवम्।
उपकाराय लोकानां शोचते किञ्चिदुत्तमम् ॥६॥

मुहुर्मुहुश्चिन्त्यमानमुपायमेकमेव हि ।
रुद्राभिषेकादितरं नोत्प्रेक्ष्ये साम्प्रतं मुने॥७॥

सर्वकर्माणि सन्त्यज्य सुशान्तमनसो यदा ।
रुद्राभिषेकं कुर्वन्ति दु:खनाशो भवेद् ध्रुवम् ॥८॥

जलेन वृष्टिमाप्नोति व्याधिशान्त्यै कुशोदकै: ।
दध्ना च पशुकामाय श्रियै इक्षुरसेन च ॥९॥

मध्वाज्येन धनार्थी स्यान्मुमुक्षुस्तीर्थवारिणा ।
पुत्रार्थी पुत्रमाप्नोति पयसां चाभिषेचनात्॥१०॥

वन्ध्या वा काकवन्ध्या वा मृतवत्सा च याऽङ्गना।
सद्यः पुत्रमवाप्नोति पयसां चाभिषेचनात् ॥११॥

श्रीरुद्रस्य प्रसादेन बद्धो मुच्येत बन्धनात्।
भीतो भयात् प्रमुच्येत वन्ध्या पुत्रमवाप्नुयात् ॥१२॥

मूर्खो वाचामधीशः स्याद् दरिद्रो धनिनां वरः।
मूको वक्ता भवेत् पङ्गुर्गिरिं लङ्घयते द्रुतम् ॥१३॥

मनसा कर्मणा वाचा शुचिः सङ्गविवर्जितः।
कुर्याद्रुद्राभिषेकञ्च प्रीतये शूलपाणिनः ॥१४॥

सर्वान् कामानवाप्नोति लभते परमां गतिम्।
नन्दते च कुलं पुंसां श्रीमच्छम्भुप्रसादतः ॥१५॥

रुद्राभिषेककर्तृणां विप्राणां प्रीतिहेतवे।
गोभूहिरण्यवासांसि सशक्त्यं प्रतिपादयेत्॥१६॥

वित्तशाठ्यं न कर्तव्यं कर्मण्यस्मिन् द्विजातिभिः।
दातव्यं द्विजवर्य्येभ्यो गृह्णीयादाशिषः शुभाः ॥१७॥

एवं कृते मनुष्याणां वाञ्छासिद्धिः सुनिश्चिता।
मोदन्ते बन्धुभिर्लोके लभन्ते परमं पदम् ॥१८॥

इति रुद्राभिषेकमाहात्म्यं समाप्तम्।

रुद्राभिषेकप्रकाराः

रूपकाऽऽख्ये रुद्रे, एकादशिनीपर्याये रुद्रे, लघुरुद्रे, महारुद्रे, अतिरुद्रे च श्रीमदनन्तदेवविदचिताद् रुद्रकल्पद्रुमात् प्रसङ्गानुसारं यत्किञ्चित् सारं समुद्धृत्य वाजसनेयिनां रुद्रजपे अभिषेके होमे च आवश्यकानां साङ्गमन्त्राणां सङ्ख्याया निर्णय उच्यते। जपाभिषेकहोमैस्त्रिविधो रुद्रः प्रत्येकं पञ्चधोक्तः। रूपं रुद्रो रुद्रीं महारुद्रोऽतिरुद्रश्च। तदुक्तम्—'शृणुष्व भो महाप्राज्ञ ! रुद्रभेदान् वदामि ते। रुद्राः पञ्चविधाः प्रोक्ता देशिकैरुत्तरोत्तरम्॥ साङ्गस्त्वाद्यो रूपकाऽऽख्यः सशीर्षो रुद्र उच्यते। एकादशगुणैस्तद्वद् रुद्रीसंज्ञो द्वितीयकः॥ एकादशभिरेताभिस्तृतीयो लघुरुद्रकः। लघ्वेकादशभिः प्रोक्तो महारुद्रश्चतुर्थकः। पञ्चमः स्यान्महारुद्रैरेकादश-भिरन्तिमः। अतिरुद्रः समाख्यातः सर्वेभ्यो ह्युत्तमोत्तमः' ॥ इति महार्णवे। 'षडङ्गैकादशी

रुद्री रुद्र्येकादशरुद्रत: । एकादशभिरेताभिर्महारुद्रस्तु कथ्यते ॥' बृहत्पाराशरस्मृतौ— 'शिखा तस्य तु रुद्रस्योत्तरं नारायणं स्मृतम् । शिर: पुरुषसूक्तं च शिवसङ्कल्पकं च हृत् । कवचं चाप्रतिरथं नेत्रं विभ्राड्बृहत्स्मृतम् । शतरुद्रियमस्त्रेषु देवस्यास्त्रं प्रकल्पयेत्' ॥ एवं षडङ्गान्युक्त्वा 'पञ्चाङ्गानि स्मरेदष्टप्रणवं प्रजपेद्द्विज: ।' इत्युक्तत्वात् । अत्र अङ्गानां स्मरणं तत्तन्मन्त्रजपादिरूपेण । अत्र च जप्यमन्त्रस्यैव रुद्राध्यायस्यास्त्रन्यासे विनियोगादस्त्रवर्जितान्येव पञ्चाङ्गानि बोध्यानि । अत एव देवयाज्ञिकै: पञ्चाङ्गमन्त्रसाहित्यमेव रुद्रजपे मुख्यत्वेनोक्तं न तु षडङ्गमन्त्रसाहित्यम् । अत्र 'अष्टप्रणवं जपेत्' इति वाक्ये जपग्रहणं होमाभिषेकयोरुपलक्षणम् । तेन रुद्रं जपेत्, रुद्रेणाभिषिञ्चेत्, रुद्रेण जुहुयात्, इत्यर्थो बोध्य: । स च 'वयꣳसोम' इत्यष्टर्चस्य (सप्तर्चस्य) वा महच्छिर:संज्ञकत्वात् सशीर्ष: 'उग्रश्च' इति जटामन्त्रैश्च सहितो ज्ञेय: । अनेन हृदयादिभि: पञ्चभिरङ्गमन्त्रै: शिवसङ्कल्पादिभिर्विभ्राडित्यनुवाकान्तैरुपेतो वयꣳसोममिति शिरोयुतो जटामन्त्रयुतश्च रुद्राध्यायो रूपकाऽऽख्य आद्यो रुद्र: ।

अस्मिन् विषये विधानपारिजाते जाबालश्रुति:—'शिवसङ्कल्पं हृदयं सूक्तं स्यात् पौरुषं शिर: । प्राहुर्नारायणं चैव शिखां तस्योत्तराभिधम् ॥ आशु: शिशान: कवचं नेत्रं विभ्राड्बृहत्स्मृतम् । शतरुद्रियमस्त्रं स्यात् षडङ्गरूप ईरित: ॥ पूर्वमङ्गानि सञ्जप्य रुद्राध्यायं ततो जपेत् । तदन्ते सप्तमन्त्राश्च वयꣳसोम महच्छिर: ॥ उग्रश्चेति यजुर्मन्त्रं जटामाहुर्जपेदिति' ॥ इत्यनेन षडङ्गा अपि रूपकाऽऽख्यादयो रुद्रा: कथिता: ।

ननु परशुरामकारिकानुसारिभिर्विधानपारिजातकारकदीक्षितादिभिरपि तथोक्तत्वात् रुद्राध्यायस्याद्योऽनुवाक: शतरुद्रियम् इति चेन्न । अपरै: 'रुद्राध्याय एव शतरुद्रियम्' इत्युक्तत्वात् । युक्ततममेतद्बृहत्पराशरस्मृतिसम्मतत्वात् । महार्णवकारनारायणभट्टकमलाकरभट्टादिभिरपि तथोक्तन्यासपूजापूर्वकमष्टप्रणवान्वितरुद्राध्यायस्यैव सकृदावर्तनं रूपकाख्यो रुद्र इत्युक्तत्वात् । युक्तं चैतत् पूर्वोदाहृतजाबालिकैवल्यश्रुतिमिताक्षरोदाहृतात्रिबृहत्पराशरशातातपस्मृतिसंहितापुराणहेमाद्र्युदाहृतवायुकालिकापुराणादिवाक्यानां शतरुद्रियरुद्रशब्दान्यतरशब्दवाच्यरुद्राध्यायस्यैव फलार्थतया नित्यतया वा जपविधानपरत्वात् पारस्करगृह्यसूत्रकर्कभाष्यादिसंवादलाभाच्च । तथाग्निपुराणे यजुर्विधाने 'अग्निरुवाच' इत्युपक्रम्य—'वक्ष्ये रुद्रविधानं तु पञ्चाङ्गं सर्वदं परम् । हृदयं शिवसङ्कल्पं शिर:सूक्तं च पौरुषम् ॥ शिखाऽद्भ्य: सम्भृतं सूक्तमाशु: कवचमेव च । वेदवादिभिराख्यातमस्त्रं वै शतरुद्रियम् । शतरुद्रियसंज्ञस्य रुद्रस्याङ्गानि पञ्च हि । पञ्चाङ्गं न्यस्य तं ध्यात्वा जपेद् रुद्राँस्तत: क्रमात्' ॥ इत्यनेनाप्येतदेव स्पष्टमुक्तं रुद्राध्याय एव रुद्र: । एतेन च यै: कैश्चिदुक्तम्—

'पट्षष्टिर्मूलजाप्येन षोडशर्चं पुनर्जपेत्। एष ते द्वे नमस्ते द्वे नतं विद्द्वयमेव च ॥ मीढुष्टमचतुष्कञ्च वयंसोमाष्टकं ततः । वेदवादिभिराख्यातमेतद्वै शतरुद्रियम्' ॥ इत्यस्यापि पूर्वोक्तानेकस्मृतिसूत्रनिबन्धविरोधान्मुख्यत्वं वाजसनेयिनां निरस्तमेव विद्वद्भिः ।

रूपकाख्यो रुद्रप्रकारः

अतः पूर्वोक्तशतरुद्रियस्यादौ पञ्चाङ्गानि षडङ्गानि वा पठित्वा मध्ये चाष्टप्रणवयुक्तं शतरुद्रियवाचकं रौद्राध्यायं पठित्वा चान्ते च 'वयᳪंसोमम्' इति (सप्तमन्त्रात्मकम्) अष्टमन्त्रात्मकं (वा) महच्छिरः, तदनन्तरम् 'उग्रश्च' इति जटामन्त्रान् पठित्वाऽन्ते च 'ऋचं वाचम्' इति शान्त्यध्यायं पठित्वा त्रिवारं ॐ शान्तिरित्युच्चारणम् इति रूपकाख्य आद्यो रुद्रः समाख्यातः । अपि तु रूपकाख्ये रुद्रे शिरोमन्त्राणां जटामन्त्राणां च पठनमयुक्तं 'साङ्गस्त्वाद्यो रूपकाख्यः' इत्यनेन सह विरोधात्, बृहत्पाराशर-स्मृतिप्रभृतिवाक्यविरोधाच्च । तथैव सर्वत्र शान्त्यध्यायात् पूर्वं नमकचमकवाचक-स्यैकोनविंशतिमन्त्रात्मकस्य वाजश्चेत्यस्याप्यपठनम् । सर्वैर्वाजसनेयिभिरयमेव चमकवर्जं पक्षो मुख्यत्वेनादृतो जपाभिषेकहोमात्मके पञ्चविधे रुद्रे ।

एकादशिनी रुद्रः (षडङ्ग-पञ्चाङ्ग-चमकपक्षे च)

'साङ्गमाद्यं जपेद् रुद्रं केवलानि नवान्तरे । साङ्गं सशीर्षकं चान्त्यं निरङ्गमिति केचन' ॥ तेनादौ 'यज्जाग्रतः' इत्यारभ्य 'विभ्राड्बृहत्' इत्यन्तानि पञ्चाङ्गानि षडङ्गानि वा स रुद्राणि पठित्वा मध्ये चाष्टप्रणवयुक्तं रुद्राध्यायं नववारं पठित्वा अन्ते च पुनः 'यज्जाग्रत' इत्यारभ्य 'विभ्राड्बृहत्' इत्यनुवाकान्तैः पूर्वोक्तैरङ्गपञ्चकमन्त्रैः षडङ्गैर्वा समन्वितस्य रुद्राध्यायस्य जपं कृत्वा 'वयᳪंसोमे'त्यष्टानां कण्डिकानाम् 'उग्रश्च' इति सप्तानां रुद्रजटानाम्नी कण्डिकानां च जपं कृत्वा 'ऋचं वाचम्' इति शान्त्यध्यायं जपित्वा ॐ शान्तिः इति त्रिरुच्चारणम् ।

षडङ्गपक्षे—परशुरामकारिकाकारास्तु 'यज्जाग्रतः' इत्यारभ्य 'नमस्ते रुद्र' इति रुद्राध्यायान्तानां षडङ्गमन्त्राणां जपं कृत्वा मध्ये चाष्टप्रणवसंयुक्तस्य रुद्राध्यायस्यैकादशवारं जपं कृत्वा अन्ते च पूर्ववत्साङ्गं रुद्रं पठित्वा 'ऋचं वाचम्' इति शान्त्यध्यायेन शान्तिकरणं चान्ते ॐ शान्तिः इति त्रिरुच्चारणम् ।

पञ्चाङ्गपक्षे—पूर्वं 'यज्जाग्रतः' इत्यारभ्य पञ्चाङ्गानि सरुद्राणि पठित्वा मध्ये नववारं पूर्ववत् रौद्राध्यायं पठित्वा अन्ते च पुनः 'यज्जाग्रतः' इत्यारभ्य सरुद्रं

पञ्चाङ्गं सशीर्षं सजटं जप्त्वा 'ऋचं वाचम्' इति शान्त्यध्यायं पठित्वा ॐ शान्तिः इति त्रिरुच्चारणम्।

चमकानुवाकसमन्वितो रुद्रः—चमकानुवाको नाङ्गीकृतो वाजसनेयिभिः। तथापि ये चमकानुवाकान् पठितुमिच्छन्ति तैरप्येकादशिनीरुद्रपर्याये रुद्रे पूर्ववत् पूर्वं पञ्चाङ्गानि वा पठित्वा मध्ये शतरुद्रियं पठित्वा 'वेद[4]वेदाब्धि[4]रामाश्च[3]राम[3]रा[3]-मद्वि[2]कैक[1]क[1]म्। द्वौ[2]द्वौ[2] पृथक् च मन्त्रेण नमकाश्चमकाः स्मृताः'॥ वाजश्च. (१) सत्यञ्च. (२) ऊर्क्च. (३) अश्मा च. (४) अग्निश्चम इन्द्र. (५) अᳪशुश्च. (६) अग्निश्च मे घर्म. (७) एका च. (८) चतस्रश्च. (९) त्र्यविश्च. (१०) वाजाय स्वाहा (११) इति क्रमेणाष्टप्रणवसंयुक्तं रुद्राध्यायं प्रतिचमकं पठेत्। अन्ते च पूर्ववत् पठित्वा ॐ शान्तिः इति त्रिरुच्चारणम्, 'निरङ्गमिति केचन' इति पक्षे केवलं शतरुद्रियस्यैकादशवारं पठनं बोध्यम्, एता एव मन्त्रसंख्या जपहोमाभिषेकेषु वाजसनेयिनां बोध्याः।

पञ्चाङ्गविषये पक्षद्वयम्—यजुर्विधानोक्तवाक्येन हृ[1]दयशिरः[2]शि[3]खाक[4]-वचा[5]स्त्राण्येव पञ्चाङ्गानि नेत्रवर्ज्याणि। हेमाद्रौ कौशिकोऽपि—'हृदये हृदयं जप्त्वा शीर्ष्णि सूक्तं च पौरुषम्। शिखाऽस्यादुत्तरं षट्कं नारायणमनुत्तमम्॥ कवचे चाप्रतिरथं तदस्त्रे शतरुद्रियम्'। अत्र पञ्चाङ्गानि नेत्रवर्जितानि। प्रचारे पञ्चाङ्गानि अस्त्रवर्जितानि दृश्यन्ते। चमकजपेऽपि नमकानन्तरं चमकजपः। ततः शिरोमन्त्राणां जटामन्त्राणाम्। अप्रतिरथं द्वादशर्चमेव। शिरोमन्त्रास्तु अष्टावेव। सप्तमन्त्रास्तु काण्वशाखिनाम्। 'साङ्गमघम्' इति रुद्रपक्षे आदावन्ते साङ्गे रुद्रजपेऽपि प्रधानभूतशतरुद्रीयस्यैकादशावृत्तिजपाभावादकिञ्चित्कर इत्यपि केचित्। अतः प्रयोगदर्पणोक्तप्रकारेण 'एकादशोर्ध्वरूपाणि त्वङ्गानि च सकृज्जपेत्। अङ्गान्यादौ शिरश्चान्ते रुद्रैकादशिनी स्मृता'॥ इत्यादावङ्गानि जप्त्वा तत एकादशवारं शतरुद्रियमनन्तरं शिरोजटामन्त्राः शान्त्यध्यायश्चेति। अत्रापि बह्वृषिमतं दृश्यते। सम्प्रदायस्तु पूर्वोक्त एव। अष्टप्रणवं जपेत् तत्र सप्रणवानां तिसृणां व्याहृतीनां रुद्राध्यायस्य आदौ अन्ते च जपः।

भस्मधारणविधिः

दक्षिणहस्ते भस्म गृहीत्वा वामहस्तेनाच्छाद्य अभिमन्त्रयेत्। '**ॐ अग्निरिति भस्म वायुरिति भस्म जलमिति भस्म स्थलमिति भस्म व्योमेति भस्म सर्वᳪह वा इदं भस्म मन एतानि चक्षूᳪषि भस्मानि**'। इत्यभिमन्त्र्य जलं प्रक्षिप्य सम्मर्द्य धारयेत्।

भस्मधारणमन्त्रः—ॐ त्र्यम्बकं य्यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ (यजु० ३।६०)

ॐ त्र्यायुषञ्जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् । यद्देवेषु त्र्यायुषन्तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम् ॥ (३।६२) इति ललाटे, ग्रीवायां, दक्षिणेंऽसे, हृदि चेत्याद्यङ्गेषु धारयेत् ।

रुद्राक्षधारणनिर्देशः

स्नाने दाने जपे होमे वैश्वदेवे सुरार्चने ।
प्रायश्चित्ते तथा श्राद्धे दीक्षाकाले विशेषतः ॥१॥
अरुद्राक्षधरो भूत्वा यत्किञ्चित् कर्म वैदिकम् ।
कुर्याद् विप्रस्तु यो मोहात्स च नाप्नोति तत्फलम् ॥२॥

रुद्राक्षधारणप्रकारः

रुद्राक्षान्कण्ठदेशे दशनपरिमितान्मस्तके विंशति द्वे,
षट् षट् कर्णप्रदेशे करयुगलकृते द्वादश द्वादशैव ।
बाह्वोरिन्दोः कलाभिर्नयनयुगकृते ह्येकमेकं शिखायां,
वक्षस्यष्टाधिकं यः कलयति शतकं स स्वयं नीलकण्ठः ॥१॥

साम्बसदाशिवपूजनम्

कर्ता कृतनित्यक्रियः धौते वाससी परिधाय पूर्वाभिमुखः शुद्धासने उपविश्य, दीपम्प्रज्वाल्य आचम्य 'ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा । यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः' ॥ इति मन्त्रेण आत्मानं पूजासामग्रीं च सम्प्रोक्ष्य शान्तिपाठम्पठेत्—

ॐ आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतो दब्धासोऽअपरीतासऽउद्भिदः ।
देवानो यथा सदमिद्वृधेऽअसन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ॥१॥
देवानाम्भद्राः सुमतिर्ऋजूयतान्देवानाꣳ रातिरभिनो निवर्तताम् ।
देवानाꣳ सख्यमुपसेदिमा व्वयन्देवानऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥२॥
तान्पूर्व्वयानिविदा हूमहे व्वयम्भगम्मित्रमदितिन्दक्षमस्त्रिधम् ।
अर्य्यमणं व्वरुणꣳ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगामयस्करत् ॥३॥

तन्नो व्वातो मयो भुव्वातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः ।
तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतन्धिष्ण्या युवम् ॥४॥
तमीशानञ्जगतस्तस्थु षस्पतिन्धियञ्जिन्वमवसे हूमहे व्वयम् ।
पूषा नो यथा वेद सामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥५॥
स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्द्दधातु ॥६॥
पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंय्यवानो व्विदथेषु जग्मयः ।
अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वेनो देवाऽअवसागमन्निह ॥७॥
भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयामदेवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाᳬंसस्तनूभिर्व्व्यशेम हि देवहितं यदायुः ॥८॥
शतमिन्नु शरदोऽअन्तिदेवा यत्रानश्चक्राजरसन्तूनाम् ।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः ॥९॥
अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्म्माता सपिता सपुत्रः ।
व्विश्वेदेवाऽअदितिः पञ्चजनाऽअदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्वम् ॥१०॥

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षᳬं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । व्वनस्पतयः शान्तिर्व्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्वᳬं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥११॥

यतो यतः समीहसे ततो नोऽअभयङ्कुरु।
शन्नः कुरु प्रजाभ्योभयन्नः पशुभ्यः ॥१२॥

ततः सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ समुच्चार्य श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलावाप्तय धर्मार्थकाममोक्षसिद्धिद्वारा सर्वव्याधिनिरासपूर्वकं सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थं श्रीसाम्बसदाशिवप्रीत्यर्थं यथामिलितोपचारैः पूजनं करिष्ये। इति सङ्कल्प्य पूजनं कुर्यात्।

ध्यानम्—ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं, रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्। पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं, विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥ ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय नमः शिवाय च शिवतराय च ॥ श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः ध्यानं समर्पयामि। पञ्चामृतस्नानम्—ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः ।

सरस्वती तु पञ्चधासो देशेऽभवत् सरित् ।। पञ्चामृतं मयानीतं पयो दधि घृतं मधु । शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।। पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि । पयःस्नानम्—ॐ पयः पृथिव्याम्पयऽओषधीषु पयो दिव्व्यन्तरिक्षे पयोधाः । पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ।। साम्बसदाशिवाय नमः पयःस्नानं समर्पयामि । दधिस्नानम्—ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषञ्जिष्णोरश्वस्य व्वाजिनः । सुरभिनोमुखाकरत् प्रणऽआयूᳬंषि तारिषत् ।। दधिस्नानं समर्पयामि । घृतस्नानम्—ॐ घृतम्मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतं वस्य धाम । अनुष्वधमावहमादयस्व स्वाहा कृतं वृषभव्वक्षि हव्यम् ।। घृतस्नानं समर्पयामि । मधुस्नानम्—ॐ मधुव्वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः । मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवᳬ रजः । मधुद्यौरस्तु नः पिता ।। मधुमान्नो वनस्पतिर्म्मधुमाँ अस्तु सूर्य्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः ।। मधुस्नानं समर्पयामि । शर्करास्नानम्—ॐ अपाᳬं रसमुद्वय सᳬ सूर्ये सन्तᳬ समाहितम् । अपाᳬंरसस्यबोरसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोसीन्द्रायत्वा जुष्टङ्गृह्णाम्येषते बोनिरिन्द्रायत्वा जुष्टतमम् ।। शर्करास्नानं समर्पयामि । जलस्नानम्—ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः श्येतः श्येताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णाबामाऽअवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः ।। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । गन्धम्—गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टाङ्करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।। गन्धं समर्पयामि ।। अक्षतान् समर्पयामि । नानापरिमलसौभाग्यद्रव्याणि ऋतुकालोद्भवपुष्पाणि, बिल्वपत्राणि, फलानि च समर्पयामि । धूममाघ्रापयामि । दीपं दर्शयामि । नैवेद्यं समर्पयामि । हस्तप्रक्षालनं सम० । करोद्वर्तनार्थे चन्दनं सम० । मुखवासार्थे पूगीफलताम्बूलं, हिरण्यदक्षिणां, कर्पूरारार्तिक्यं प्रदक्षिणां मन्त्रपुष्पयुक्तनमस्कारं विशेषार्घ्यं प्रार्थनां च समर्पयामि । निर्माल्यं विसृज्य पुनश्च गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्प्य अभिषेकार्थं ब्राह्मणवरणं च कुर्यात् । आदौ विप्रपादप्रक्षालनम् । ॐ त्वाङ्गन्धर्वा इति तिलककरणम् । ॐ अक्षन्नमीमदन्तेति अक्षतान् । ॐ श्रीश्चते इति पुष्पमालां समर्पयेत् । ततो वरणसामग्रीं गृहीत्वा तदभावे निष्क्रयद्रव्यमादाय सङ्कल्पङ्कुर्यात्—अद्येह अमुकगोत्रः अमुकशर्म्माऽहं सङ्कल्पिते रुद्राभिषेककर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः पाठकरणार्थममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं त्वां वृणे । वृताः स्मः, इति ब्राह्मणानाम् उक्तिः । ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् । दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ।। इति वरणसामग्रीं स्वीकुर्यात् । ततः कर्मान्ते रक्षाबन्धनम्—ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणाहिरण्यᳬ शतानीकाय सुमनस्यमानाः । तन्मऽआबध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम् ।। येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः । तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल ।।

रुद्राष्टकपाठसङ्कल्पः

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणो द्वितीये परार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गते ब्रह्मावर्तैकदेशे बौद्धावतारे अमुकसंवत्सरे अमुकायने अमुकर्तौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकवासरे अमुकतिथौ अमुकगोत्रः अमुकराशिः अमुकशर्मा सपत्नीकोऽहं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफल-प्राप्त्यर्थम् ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् अप्राप्तलक्ष्मीप्राप्त्यर्थं प्राप्तलक्ष्म्याश्चिरकाल-संरक्षणार्थं सकलकामनासिद्ध्यर्थं सर्वत्र यशोविजयलाभादिप्राप्त्यर्थं, जन्मजन्मान्तर-दुरितोपशमनार्थम् मम सभार्यस्य सपुत्रस्य सबान्धवस्याखिलकुटुम्बसहितस्य, सपशोः समस्तभयव्याधिजरापीडामृत्युपरिहारद्वारा आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं तथा जन्मराशेः सकाशाद् ये केचिद् विरुद्धाश्चतुर्थाष्टमद्वादशस्थानस्थितक्रूरग्रहा-स्तैस्सूचितं सूचयिष्यमाणं च यत्सर्वारिष्टं तद्विनाशद्वारा एकादशस्थानस्थित-वच्छुभफलप्राप्त्यर्थं पुत्रपौत्रादिसन्ततेरविच्छिन्नवृद्ध्यर्थमाधिदैविकाधिभौतिका-ध्यात्मिकत्रिविधतापोपशमनार्थं चतुर्वर्गफलप्राप्त्यर्थं (षडङ्गन्यासपूर्वकं) रुद्राष्टकपाठं (रुद्राभिषेकं वा) करिष्ये ।

षडङ्गन्यासाः

विनियोगः—ॐ मनोजूतिरिति मन्त्रस्य बृहस्पतिर्ऋषिः, बृहतीच्छन्दः, बृहस्पतिर्देवता हृदयन्यासे विनियोगः ।

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टं य्यज्ञꣳ समिमन्दधातु। विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामोꣳ३॥ प्रतिष्ठ ॥ ॐ हृदयाय नमः ॥१॥

विनियोगः—ॐ अबोध्यग्निरिति मन्त्रस्य बुधगविष्ठिरा ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, अग्निर्देवता शिरोन्यासे विनियोगः ।

ॐ अबोद्ध्यग्ग्निः समिधाजनानाम्प्रतिधेनुमिवायतीमुषासम् । यह्वाऽइवप्प्रवयामुज्जिहानाः प्प्रभानवः सिस्त्रतेनाकमच्छ ॥ ॐ शिरसे स्वाहा ॥२॥

विनियोगः—ॐ मूर्द्धानमिति मन्त्रस्य भरद्वाज ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, अग्निर्देवता शिखान्यासे विनियोगः ।

ॐ मूर्द्धानन्दिवोऽअरतिम्पृथिव्याव्वैश्वानरमृतऽआजातमग्निम् । कविꣳ सम्म्राजमतिथिञ्जनानामासन्नापात्रञ्जनयन्तदेवाः ॥ ॐ शिखायै वषट् ॥३॥

विनियोगः—ॐ मर्माणित इति मन्त्रस्य अप्रतिरथ ऋषिः, विराट् छन्दः, मर्माणि देवता कवचन्यासे विनियोगः ।

ॐ मर्म्माणितेवर्म्मणाच्छादयामिसोमस्त्त्वाराजामृतेनानुवस्ताम्॥ उरोर्व्वरीयोव्वरुणस्तेकृणोतुजयन्तन्त्वानुदेवामदन्तु॥ ॐ कवचाय हुम् ॥४॥

विनियोगः—ॐ विश्वतश्चक्षुरिति मन्त्रस्य विश्वकर्माभौवन ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, विश्वकर्मा देवता नेत्रन्यासे विनियोगः ।

ॐ व्विश्वतश्चक्षुरुतव्विश्वतोमुखोव्विश्वतोबाहुरुतव्विश्वतस्प्पात्॥ सम्बाहुब्भ्यान्धमतिसम्पतत्रैर्द्यावाभूमीजनयन्देवऽएकः ॥ ॐ नेत्रत्रयाय बौषट् ॥५॥

विनियोगः—ॐ मानस्तोक इति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः, जगती छन्दः, एकरुद्रो देवता अस्त्रन्यासे विनियोगः ।

ॐ मानस्तोकेतनयेमानऽआयुषिमानोगोषुमानोऽअश्वेषुरीरिषः ॥ मानोव्वीरान्रुद्रभामिनोव्वधीर्हविष्मन्तःसदमित्त्वाहवामहे॥ॐ अस्त्राय फट्॥६॥

अथ ध्यानम्

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् ।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥

एवम् आवाहनादिनीराजनान्तं सम्पूज्य जलदुग्धादिधारया वक्ष्यमाणमन्त्रैः अभिषेकं कुर्यात् ।

॥ श्रीः ॥

ब्रह्मानन्दीयसंस्कृतभाष्येण हिन्दीटीकया च संवलिता

शुक्लयजुर्वेदीय-रुद्राष्टाध्यायी

अथ प्रथमोऽध्यायः

(शिवसङ्कल्पसूक्तम्)

विनियोगः–ॐ गणानान्त्वा इत्येतस्य प्रजापतिर्ऋषिः, आर्षीबृहतीच्छन्दः लिङ्गोक्ता देवता अश्वपरिक्रमणे विनियोगः।

विनियोगः–व्वसो मम साम्नीपङ्क्तिश्छन्दः, महिष्या अश्वसमीपे संवेशने विनियोगः।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ हरिः ॐ ॥ गणानान्त्वागणपतिꣳ हवामहे प्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनान्त्वानिधिपतिꣳ हवामहे व्वसो मम। आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम्॥ १ ॥

भाष्यम्–हे ब्रह्मणस्पते ! वयं गणानां = कूष्माण्डादीनां मध्ये, गणपतिं = तेषां पालकं, त्वा = त्वां, हवामहे = आह्वयामः। प्रियाणाम् = इष्टमित्रादीनां मध्ये, प्रियपतिम् = प्रियस्य रक्षकं, त्वा = त्वां, हवामहे। निधीनाम् = पद्मादिनिधीनाम्मध्ये, निधिपतिं = निधिरक्षकं, त्वा = त्वां, हवामहे। विघ्नादीनाम् उपशमायेति तात्पर्यः। हे वसो ! = जगत्सर्वस्वभूतदेव ! त्वम् = मम पालकः स्याः। हे प्रजापते ! गर्भधं = गर्भधारकं, रेतः = जलम्, आ अजानि = आकृष्य क्षिपामि, श्रद्धयाङ्गीकृत्य फलोन्मुखतामापादयामि । त्वं = त्वञ्च, गर्भधं = रेतःश्रद्धारूपं जलम्, आ अजासि = आकृष्य क्षिपसि, अर्थात् श्रद्धया आकृष्टा देवा भक्तेभ्यः कर्मफलसमर्पणं नूनं विदधति॥ १॥

हिन्दी–हे प्रजा के रक्षक गणपति ! हम कूष्माण्डादि गणों के बीच में गणपति रूप से विराजमान आपको बुलाते हैं। प्रिय इष्टमित्रों के बीच में प्रियजनों के रक्षक आपको बुलाते हैं। पद्म आदि निधियों के मध्य में सुखनिधि के पालक ! आपको हम विघ्न आदि की शान्ति के लिए बुलाते हैं। संसार के सर्वस्वरूप देव ! आप हमारे रक्षक हों, आपने हमको प्रकट किया है, आप स्वतन्त्रता से प्रकट हुए हैं और आपसे सम्पूर्ण जगत् प्रकट होता है॥१॥

विनियोगः–ॐ गायत्री इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः, उष्णिक् छन्दः, अश्वो देवता, अश्वशरीरे रेखाकरणे विनियोगः।

गायत्रीत्रिष्टुब्जगत्त्यनुष्टुप्पङ्क्त्या सह ।

बृहत्त्युष्णिहाकुकुप्सूचीभिः शम्म्यन्तुत्त्वा ॥२॥

भाष्यम्–हे अश्व ! गायत्री त्रिष्टुप् जगती अनुष्टप् बृहती ककुप् पङ्क्त्या तथा उष्णिहा सह, सूचीभिः = अश्वमेधैः, त्वा = त्वां, शम्यन्तु = शान्तिं ददतु॥२॥

हिन्दी–हे अश्व रूप ईश्वर ! आपको गायत्री, त्रिष्टुप्, जगती, अनुष्टप्, बृहती, ककुप्, पंक्ति तथा उष्णिक्– ये छन्द अश्वमेधयज्ञ द्वारा शान्ति प्रदान करें॥२॥

विनियोगः–ॐ द्विपदा इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः अश्वो देवता अश्वशरीरे रेखाकरणे विनियोगः।

द्विपदाय्याश्चतुष्प्पदास्त्रिपदायाश्चषट्पदाः ।

विच्छन्दायाश्चसच्छन्दाः सूचीभिः शम्म्यन्तुत्त्वा ॥३॥

भाष्यम्–द्विपदाः = पादद्वययुक्ताः, त्रिपदाः = पादत्रययुक्ताः, चतुष्पदाः = पादचतुष्टययुक्ताः, षट्पदाः = षट्पादवन्तः, याः = याः, विच्छन्दाः = छन्दोलक्षणरहिताः, याः = याः, सच्छन्दाः = छन्दोलक्षणसंयुताः, ताः सर्वाः, सूचीभिः = अश्वमेधैः, त्वा = त्वां, शम्यन्तु = शान्तिं ददतु संस्कुर्वन्तु इत्यर्थः।

हिन्दी–दो, तीन, चार, छः पाद वाले छन्दलक्षणों से हीन तथा छन्दलक्षणों से युक्त जो छन्द हैं, वे सब सूची (अश्वमेध) द्वारा तुमको शान्ति प्रदान करें॥३॥

विनियोगः–ॐ सहस्तोमा इत्यस्य याज्ञवल्क्य ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, पयो देवता पाठे विनियोगः।

सहस्तोमाःसहच्छन्दसऽआवृतःसहप्प्रमाऽऋषयःसप्तदैव्याः।

पूर्वेषाम्पन्थामनुदृश्यधीराऽअन्वालेभिरेरत्थ्योनरश्मीन् ॥४॥

भाष्यम्–सहस्तोमाः = त्रिवृत्पञ्चदशादिस्तोमैः सह स्थिताः, सहच्छन्दसः = गायत्र्यादिभिश्छन्दोभिः सह स्थिताः, आवृतः = आवर्तमानाः, सहप्रमाः = यज्ञस्य परिज्ञानेन सह वर्तमानाः, दैव्याः = प्रजापतिसम्बन्धिनः, ऋषयः = मन्त्रद्रष्टारः, सप्त = एतत्सङ्ख्याकाः, पूर्वेषाम् = पूर्वपुरुषाणाम्, अङ्गिरःप्रभृतीनां विश्वसृजां सुराणाम्, पन्थाम् = अनुष्ठानमार्गम्, अनुदृश्य = क्रमशो ज्ञात्वा,धीराः = प्रज्ञावन्तः सन्तः, अन्वालेभिरे = क्रमेण यागाऽनुष्ठानतत्पराः, न = यथा, रथ्यः = रथस्य नेतारः सारथिनः, रश्मीन् = प्रग्रहान्, रथस्य नयनाय हस्तेन आरभन्ते।

हिन्दी–शब्दप्रमाणवेत्ता विद्वान् त्रिवृत्, पंचदश आदि स्तोम, गायत्री आदि छन्द, यज्ञप्रमाण के जानने वाले प्रजापति देव से सम्बन्धित मन्त्रद्रष्टा सात ऋषि अपने पूर्ववर्ती अङ्गिरा प्रभृति महर्षियों द्वारा किये गये यज्ञ में उस प्रकार प्रवृत्त हुए जैसे उत्तम सारथि लगाम द्वारा रथ में जुते हुए घोड़ों को भलीभाँति मार्ग में प्रवृत्त कराता है।।४।।

विनियोगः–ॐ यज्जाग्रत इत्यस्य याज्ञवल्क्य ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, मनो देवता पाठे विनियोगः।

यज्जाग्ग्रतोदूरमुदैति दैवन्तदुसुप्तस्य तथैवैति।

दूरङ्गमञ्ज्योतिषाञ्ज्योतिरेकन्तन्मेमनःशिवसङ्कल्प्पमस्तु॥५॥

भाष्यम्–यत् = मनः, जाग्रतः = चैतन्यपुरुषस्य, दूरम् उदैति = विप्रकृष्टम् उद्गच्छति, यच्च = मनः, दैवम् = आत्मग्राहकं भवति, ततः उ = अत्र यदः स्थाने तच्छब्दः उकारश्चार्थः, यच्च = मनः, सुप्तस्य = निद्राणस्य पुरुषस्य, तथैव एति = यथा गतं तथैव प्रत्यावर्तते, यच्च = मनः, दूरङ्गमं = भूतभविष्यद्वर्तमानविप्रकृष्ट-व्यवहितपदार्थग्राहकं भवति, यच्च = मनः, ज्योतिषाम् = अर्थप्रकाशकानाम् इन्द्रियाणाम्, एकं ज्योतिः = प्रकाशकं भवति, तत् = तादृशम्, मे = मम, मनः = ज्ञानात्मकं हृदिन्द्रियं, शिवसङ्कल्पं = कल्याणकारिधर्मविषययुक्, अस्तु = भवतु।

हिन्दी–जाग्रत् अवस्था में पुरुष का जो मन चक्षु आदि की अपेक्षा अधिक दूर तक जाता है, जो प्रकाशक देव विज्ञानात्मा का ग्राहक है, वही मन सुप्ता-

वस्था में पुनः आगमन करता है। जो मन दूर जानेवाला है और जो प्रकाशक श्रोत्र आदि इन्द्रियों की एक ज्योति है, वह मेरा मन कल्याणकारी सङ्कल्पोंवाला (धर्मविषय में तत्पर) हो ॥५॥

विनियोगः–ॐ येन इत्यस्य याज्ञवल्क्य ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, मनो देवता पाठे विनियोगः।

येनकर्म्माण्ण्यपसोमनीषिणोयज्ञेकृण्ण्वन्तिविदथेषुधीराः।
यदपूर्व्वंयक्षमन्तःप्प्रजानान्तन्मेमनःशिवसङ्कल्प्पमस्तु ॥६॥

भाष्यम्–अपसः = कर्मवन्तः, धीराः = बुद्धिमन्तः, यज्ञे = एतत् कर्मणि, येन = मनसा सता, कर्म्माणि = यज्ञाद्यनुष्ठानानि, कृण्वन्ति = कुर्वन्ति, विदथेषु = हविरादिपदार्थानां ज्ञानेषु सत्सु, यत् = मनः, अपूर्वम् = इन्द्रियेभ्यः पूर्वम्, मनसः सृष्टेः आम्नाता, यच्च यक्षं = यष्टु समर्थम्, यच्च प्रजानाम् = प्राणिमात्राणाम्, अन्तः = शरीरान्तर्वर्ति आस्ते, तत् = तादृशम्, मे = मम, मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।

हिन्दी–यज्ञकर्म के अनुष्ठान में लगे हुए बुद्धिमान् पुरुष यज्ञ में जिस मन से पवित्र कार्यों को करते हैं, जो मन प्राणिमात्र के शरीर के भीतर स्थित है, वह मेरा मन कल्याणकारी सङ्कल्पों वाला हो ॥६॥

विनियोगः–ॐ यत्प्रज्ञानमित्यस्य याज्ञवल्क्य ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, मनो देवता पाठे विनियोगः।

यत्प्रज्ञानमुतचेतोधृतिश्चयज्ज्योतिरन्तरमृतम्प्रजासु ।
यस्म्मान्नऽऋतेकिञ्चनकर्म्मक्क्रियतेतन्मेमनःशिवसङ्कल्प्पमस्तु॥७॥

भाष्यम्–यत् = मनः, प्रज्ञानं = विशेषज्ञानजनकम्, उत = अपि, यत् = मनः, चेतः = सामान्यविशेषज्ञानकारकं, च = यच्च मनः, धृतिः = धैर्यरूपं, यत् = यच्च, अमृतम् = आमरणधर्मि, प्रजासु = जनेषु, अन्तः = हृदन्तर्वर्तमानं सत्, ज्योतिः = सर्वेन्द्रियप्रकाशकं, यस्मात् = मनसः, ऋते = विना, किञ्चन = किमपि, कर्म = कार्यं, न क्रियते = कर्तुं प्रवृत्तिर्न भवति, तत् मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।

हिन्दी–जो मन विशेष ज्ञान का उत्पादक है, जो भलीभाँति सामान्य एवं विशेष का ज्ञान कराने में समर्थ है, जो सत्-चित्-आनन्द स्वरूप और अविनाशी होने के कारण प्राणियों के हृदय में वर्तमान तथा उसका प्रकाशक है, जिसके

बिना प्राणिमात्र कोई कार्य नहीं कर सकता, वह मेरा मन कल्याणकारी सङ्कल्पों वाला हो ॥७॥

विनियोगः–ॐ येनेदमित्यस्य याज्ञवल्क्य ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, मनो देवता पाठे विनियोगः।

येनेदम्भूतम्भुवनम्भविष्यत्त्परिगृहीतममृतेन सर्व्वम् ।
येनयज्ञस्तायतेसप्तहोतातन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥८॥

भाष्यम्–येन अमृतेन = अनश्वरेण मनसा, इदं सर्वम् = अखिलं, भूतं = परोक्षकालसम्बन्धिवस्तु, भुवनं = भवतीति भुवनं (वर्तमानकालसम्बन्धि), भविष्यत् = आगामिकालसम्बन्धि, परिगृहीतं = त्रिकालसम्बद्धवस्तु सर्वतो विदितं भवति, एतेन मनसः परोक्षज्ञानेऽपि समर्थता सिद्ध्यति । येन = मनसा, सप्तहोता = मैत्रावरुणादिदेवानाम् आह्वाता, यज्ञः = अग्निष्टोमादिः, तायते = विस्तार्यते, तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ।

हिन्दी–जिस अविनाशी (तीनों कालों में स्थिर रहने वाले) मन द्वारा ये सम्पूर्ण भूत, वर्तमान, भविष्यत् कालसम्बन्धी वस्तुएँ ग्रहण की जाती हैं। जिसके द्वारा मैत्रावरुण आदि सात होता (हवनकर्ताओं) द्वारा यज्ञ का विस्तार किया जाता है, वह मेरा मन कल्याणकारी सङ्कल्पों वाला हो ॥८॥

विनियोगः–ॐ यस्मिन्नित्यस्य याज्ञवल्क्य ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, मनो देवता पाठे विनियोगः।

यस्मिन्नृचः सामयजूँषियस्मिन्प्रतिष्ठितारथनाभाविवाराः ।
यस्मिँश्चित्तँ सर्व्वमोतम्प्रजानान्तन्मेमनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥९॥

भाष्यम्–यस्मिन् = मनसि, ऋचः = ऋग्वेदस्थमन्त्राः, प्रतिष्ठिताः = स्थिताः, यस्मिन् = मनसि, साम = सामानि प्रतिष्ठितानि, यजूंषि = यजुर्मन्त्राः प्रतिष्ठिताः, रथनाभौ = रथचक्रनाभौ तन्मध्ये, इव = यथा, आराः = आराः प्रतिष्ठिताः, किञ्च प्रजानाम् = प्रकृतीनां, सर्वम् = अखिलं, चित्तं = सर्वपदार्थसम्बन्धिज्ञानं, यस्मिन् = मनसि, ओतम् = प्रोतं, तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ।

हिन्दी–जिस मन में ऋचाओं से पूर्ण ऋग्वेद अवस्थित है, जिसमें सामवेद तथा यजुर्वेद स्थित है । जिस प्रकार रथचक्र की नाभि में तिल्लियाँ स्थित होती हैं,

उसी प्रकार मन में शब्दजाल स्थित है, ऐसा वह मेरा मन कल्याणकारी सङ्कल्पों वाला हो ॥९॥

विनियोगः-ॐ सुषारथिरित्यस्य याज्ञवल्क्य ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, मनो देवता पाठे विनियोगः।

सुषारथिरश्वानिवयन्मनुष्यान्नेनीयतेभीशुभिर्वाजिनऽइव ॥
हृत्प्रतिष्ठँयदजिरञ्जविष्ठन्तन्मेमनःशिवसङ्कल्पमस्तु ॥१०॥

इति रुद्रे प्रथमोऽध्यायः ।

भाष्यम्—यत् = मनः, मनुष्यान् = पुरुषान्, नेनीयते = अतिशयेन इतस्ततो नयति, इव = यथा, सुषारथिः = शोभनः सारथिः, अभीषुभिः = प्रग्रहैः, वाजिनः = वेगयुक्तान्, अश्वान् = घोटकान्, नेनीयते । यत् = मनः, अजिरं = जरारहितं, यच्च जविष्ठम् = अतिवेगवत्, यच्च = मनः, हत्प्रतिष्ठम् = हृदि स्थितम् उपलभ्यते, तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ।

हिन्दी—जो मन समस्त प्राणियों को इधर-उधर ले जाता है, जैसे योग्य सारथी लगाम द्वारा वेगवान् घोड़ों को अपनी इच्छानुसार ले जाता है, जो मन वृद्धावस्था से रहित अत्यन्त वेगवान् होकर हृदय में स्थित है, वह मेरा मन कल्याणकारी सङ्कल्पोंवाला हो॥१०॥

इति नैनीतालमण्डलाभिजन-श्रौतस्मार्तधर्मधुरन्धर**पण्डिततारादत्तात्मज**-**श्रीब्रह्मानन्दत्रिपाठि**कृत-श्रीरुद्राष्टाध्याय्यां संस्कृतभाष्य-हिन्दीटीकाभ्यां संवलितः प्रथमोऽध्यायः ॥१॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः

(उत्तरनारायणसूक्तं पुरुषसूक्तं वा)

विनियोगः–ॐ सहस्रशीर्षा इत्यस्य नारायण ऋषिः, निच्यृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दः, पुरुषो देवता स्तुतिकरणे विनियोगः।

हरिः ॐ ॥ सहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥
स भूमिꣳ सर्व्वतस्पृत्त्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥१॥

भाष्यम्–सहस्रशीर्षा = सहस्रमित्युपलक्षणम् असङ्ख्येयस्य, असङ्ख्यसर्वप्राणिशीर्षवान्, सहस्राक्षः = असङ्ख्यनेत्रयुक्तः, सर्वज्ञानेन्द्रियसंयुत इति भावः, सहस्रपात् = असङ्ख्यपादयुक्तः, सर्वकर्मेन्द्रियसंयुत इति भावः, एवम्प्रकारकः सः पुरुषः = परमात्मा, भूमिम् = पृथिव्यादिपञ्चभूतात्मिकां सर्वां भूमिम्, इत्युपलक्षणं भूतानां, सर्वतः = परितः, स्पृत्वा = परिवेष्ट्य नाभितः, दशाङ्गुलं = दशाङ्गुलपरिमितं स्थानम्, अत्यतिष्ठत् = अतिक्रम्य संस्थितः।

हिन्दी–विराट् भगवान् अव्यक्त आदि गुणों से विलक्षण, चैतन्यमूर्ति, वेदात्मा, ब्रह्माण्डरूप देह में समस्त प्राणियों को समष्टिरूप से धारण किया है, वही सहस्र (अनन्त) शिरों, नेत्रों तथा पैरों से सम्पन्न है, वही पुरुष ब्रह्माण्डरूप भूमि को सब ओर से व्याप्त करके दश अंगुल परिमित स्थान का अतिक्रमण करके स्थित है। यह दशाङ्गुल ब्रह्माण्ड का सांकेतिक शब्द है अर्थात् यह नाभि से दश अंगुल ऊपर हृदय में स्थित है, हृदय में शयन करने के कारण उसको 'पुरुष' कहते हैं॥१॥

विनियोगः–ॐ पुरुष इत्यस्य नारायण ऋषिः, निच्यृदार्षीजगती छन्दः, पुरुषो देवता स्तुतिकरणे विनियोगः।

पुरुषऽएवेदꣳसर्व्वंय्यद्भूतंय्यच्चभाव्यम् ॥
उतामृतत्त्वस्येशानोयदन्नेनातिरोहति ॥२॥

भाष्यम्–इदं = यत् किञ्चिद् वर्तमानकालिकं, यद्भूतं = यत् परोक्षकालिकं, यच्च भाव्यं = यद् भविष्यत्कालिकं, तत् सर्वं = सम्पूर्णं, पुरुष एव = परमात्मा एव, उत = अपि, अमृतत्वस्य = देवत्वस्य, ईशानः = स्वामी सः पुरुषः, यत् = यस्मात्, अन्नेन = निमित्तभूतफलेन, अतिरोहति = कारणावस्थामतिक्रम्य जगदवस्थां प्राप्नोति ।

हिन्दी–अतीत, वर्तमान और भविष्यत् जो यह त्रिकाल में विभाजित जगत् है, वही सम्पूर्ण पुरुष है। जैसे वर्तमान कल्प में प्राणियों के देह ही विराट् पुरुष के अवयव हैं, उसी प्रकार भूत और भविष्यत् कल्पों के भी जानने चाहिए। जो प्राणियों के भाग्य से अथवा अन्नरूपी फल के कारण से अपनी कारण अवस्था को पार करके संसार की अवस्था को प्राप्त होता है ॥२॥

विनियोगः–ॐ एतावानस्येत्यस्य नारायण ऋषिः, निच्यृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दः, पुरुषो देवता स्तुतिकरणे विनियोगः ।

एतावानस्य महिमातोज्ज्यायाँश्च पूरुषः ॥
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥३॥

भाष्यम्–एतावान् = कालत्रयावच्छिन्नं जगत् यावदस्ति तत् सर्वः अपि, अस्य = विराट्पुरुषस्य, महिमा = सामर्थ्यविशेषः अस्ति, च = तथा, पुरुषः = अशेषशक्तिसम्पन्नः पुरुषः, अतः = अतः महिम्नोऽपि, ज्यायान् = अधिकः, अस्य = पुरुषस्य, विश्वा = सर्वाणि, भूतानि = प्राणिनः, पादः = तुरीयांशः, अस्य = पुरुषस्य, अवशिष्टं त्रिपात् = पादत्रयस्वरूपम्, अमृतम् = अविनाशि सत्, दिवि = प्रकाशात्मके स्वकीयस्वरूपे सन्तिष्ठते ।

हिन्दी–भूत, भविष्यत्, वर्तमान काल से सम्बद्ध यह सम्पूर्ण जगत् इस विराट् पुरुष का सामर्थ्य-विशेष ऐश्वर्य है, न कि उसका वास्तविक स्वरूप है। विराट् पुरुष तो इस महिमावान् जगत् से अत्यन्त महान् है। उक्त तीन कालों में वर्तमान प्राणिसमूह इस पुरुष का मात्र चतुर्थांश है। इस पुरुष का अवशिष्ट त्रिपात्स्वरूप अविनाशी, प्रकाशयुक्त एवम् अपने वास्तविक स्वरूप में अवस्थित है ॥३॥

विनियोगः–ॐ त्रिपादूर्ध्व इत्यस्य नारायण ऋषिः, आर्ष्यनुष्टुप् छन्दः, पुरुषो देवता स्तुतिकरणे विनियोगः ।

त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः ॥
ततो विष्वङ्व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि ॥४॥

भाष्यम्–त्रिपात् = योऽयं पादत्रयसंयुक्तः, पुरुषः = संसारस्पर्शरहितः साक्षात् परब्रह्मरूपः, ऊर्ध्वः = अस्माद् अज्ञानजन्यजगतो बहिर्भूतः किंवा अत्रत्यगुण-दोषैरस्पृष्ट इति भावः, उदैत् = स्थितवान्, अस्य = पुरुषस्य, पादः = अंशरूपः, इह = मायायां, पुनः = पुनरपि, आभवत् = आगच्छति, ततः = मायायाम् आगमनानन्तरं, विष्वङ् = देवतिर्यगादिरूपेण विविधरूपं दधत् सन्, साशनानशने = भोजनादिव्यवहारसम्पृक्तं प्राणिजातं लक्ष्यते, अनशनम् अचेतनं पर्वतादिकं यथा तथा अभि = स्वयमेव विविधरूपमास्थाय, व्यक्रामत् = व्याप्तवान् ।

हिन्दी–जो यह संसारस्पर्श रहित तीन पादयुक्त परब्रह्म इस अज्ञानकार्यरूप संसार से बहिर्भूत है, इसका अंशरूप संसार इस माया में पुनः प्राप्त हुआ, माया में आने के बाद विविधरूप होकर चेतन प्राणिसमूह से रहित तथा अचेतन गिरि, नदी आदि स्थावर-जंगम को देखकर अनेक रूप से व्याप्त हुआ ॥४॥

विनियोगः–ॐ तत इत्यस्य नारायण ऋषिः, आर्ष्यनुष्टुप् छन्दः, पुरुषो देवता स्तुतिकरणे विनियोगः।

ततो विराडजायत विराजोऽअधिपूरुषः ॥
सजातोऽअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥५॥

भाष्यम्–ततः = अनन्तरम् आदिपुरुषात्, विराट् = ब्रह्माण्डरूपदेहः, अजायत = उत्पन्नोऽभवत्, विराजः = विविधानि वस्तूनि राजन्ते यत्र स विराट्, अधि = देहस्य उपरि, पूरुषः = तद्देहाभिमानी कश्चिद् देवात्मा जीवोऽभवत्, सः = विराट्-पुरुषः, जातः = उत्पन्नः सन्, अत्यरिच्यत = विराड् अतिरिक्तोऽभूत्, पश्चात् = देवादि-जीवभावानन्तरं, भूमिं = धरां ससर्ज, ततः पुरः = पूर्यन्ते सप्तधातुभिरिति पुरः = शरीराणि ससर्ज ।

हिन्दी–तदनन्तर उस आदिपुरुष से अनेक वस्तुओं से विराजमान ब्रह्माण्डदेह प्रकट हुआ, उससे उसी देह को आधार मानकर उक्त देह का अभिमानी एक पुरुष (देवात्मा जीवरूप) उत्पन्न हुआ और वह विराट् पुरुष प्रकट होकर देवता, पशु-पक्षी, मनुष्य आदि के रूप में परिणत हुआ, तदनन्तर उसने भूमि की रचना की, तत्पश्चात् जड़-चेतन शरीरों की भी सृष्टि की॥५॥

विनियोगः–ॐ तस्मादित्यस्य नारायण ऋषिः, आर्चीपङ्क्तिश्छन्दः, पुरुषो देवता स्तुतिकरणे विनियोगः।

तस्म्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्ज्यम् ॥

पशूँस्ताँश्चक्रेव्वायव्व्यानारण्ण्याग्ग्राम्म्याश्च ये ॥६॥

भाष्यम्–तस्मात् सर्वहुतः = सर्वात्मकः पुरुषः यस्मिन् यज्ञे हूयते सोऽयं सर्वहुतः, तस्मात् मानसात्, यज्ञात् = पुरुषमेधाभिधयज्ञात् सर्वव्यापकपुरुषचतुर्थ-पादात्, पृषदाज्यं = दधिमिश्रितघृतं, सम्भृतं = समुद्भूतं, सर्वं भोगजातं निष्पादित-मिति भावः, तथा तान् वायव्यान् = वायुदेवतासम्बन्धीन्, पशून् चक्रे = पशून् उत्पादितवान्, ये आरण्याः = वने भवाः, हरिणादयः, च ग्राम्याः = छागादयः, तानपि चक्रे = उत्पादितवान्।

हिन्दी–उससे सर्वात्मा पुरुष, जिस पुरुषमेध यज्ञ में हवन द्वारा पूजे जाते हैं, उससे दधिमिश्रित घृत उत्पन्न हुआ, उससे समस्त भोग्यजात वस्तु (खान-पान की सामग्रियाँ) प्रकट हुईं और उस विराट् पुरुष ने वायु देवता वाले उन पशुओं को पैदा किया जो वन के पशु हरिण आदि तथा ग्राम के पशु गाय, घोड़े, बकरा आदि यज्ञोपयोगी हैं ॥६॥

विनियोगः–ॐ तस्मादित्यस्य नारायण ऋषिः, आर्ष्यनुष्टुप् छन्दः, पुरुषो देवता स्तुतिकरणे विनियोगः।

तस्म्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे ॥

छन्दाᳬसिजज्ञिरेतस्म्माद्यजुस्तस्म्मादजायत ॥७॥

भाष्यम्–तस्मात् सर्वहुतः = सर्वैर्हूयमानात्, यज्ञात् = यज्ञपुरुषात्, ऋचः = ऋग्वेदाः, सामानि = सामवेदाः, जज्ञिरे = जाताः, तस्मात् = पुरुषात्, छन्दांसि = गायत्र्यादीनि, जज्ञिरे = जातानि, तस्मात् = परब्रह्मणः, यजुः = यजुर्वेदोऽपि, अजा-यत = प्राकट्यमवापेत्यर्थः।

हिन्दी–उस सर्वहुत यज्ञपुरुष से क्रमशः ऋग्वेद और सामवेद आविर्भूत हुए। उसी से छन्द, अथर्ववेद तथा यजुर्वेद प्रकट हुआ ॥७॥

विनियोगः–ॐ तस्मादित्यस्य नारायण ऋषिः, निच्यृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दः, पुरुषो देवता स्तुतिकरणे विनियोगः।

तस्म्मा॒दश्श्वाऽअजायन्त॒ येकेचौभ॒यादतः ॥
गावोहजज्ञिरे॒तस्म्मा॒त्तस्म्माज्जा॒ताऽअजा॒वयः ॥८॥

भाष्यम्-तस्मात् = पूर्वोक्तात्, यज्ञात् = यज्ञपुरुषात्, अश्वा: = यज्ञीयाऽश्वा:, अजायन्त = प्रकटीभूता:, च ये के उभयादत: = उभयभागयोर्दन्तयुक्ता: गर्दभादय: अजायन्त, ह इति प्रसिद्धौ, तस्मात् = पुरुषात्, गाव: = धेनव:, जज्ञिरे = अजायन्त, तस्मात् = सर्वव्यापकात्, अजावय:—अजा: = छागा:, अवय: = मेषा: च, जाता: = समुत्पन्ना:।

हिन्दी-उस यज्ञपुरुष से यज्ञीय घोड़े उत्पन्न हुए, तदनन्तर ऊपर-नीचे दाँतों वाले गधा आदि प्राणी उत्पन्न हुए। सर्वविदित है कि उसी से गायें, भेड़, बकरी आदि प्राणियों का भी प्रादुर्भाव हुआ ॥८॥

विनियोग:-ॐ तं यज्ञमित्यस्य नारायण ऋषि:, निच्यृदार्ष्यनुष्टुप् छन्द:, पुरुषो देवता स्तुतिकरणे विनियोग:।

तँय्य॒ज्ञम्ब॒र्हिषि॒प्प्रौक्क्ष॒न्पुरुषञ्जा॒तमग्ग्र॒तः ॥
तेनं दे॒वाऽअयजन्तसा॒द्ध्याऽऋषयश्च॒ ये ॥९॥

भाष्यम्-अग्रत: जातम् = सृष्टे: पूर्वम् पुरुषरूपेण उत्पन्नं, तं यज्ञं = यज्ञ-साधनभूतम्, पुरुषं = यज्ञपुरुषं, बर्हिषि = मानसयज्ञे, प्रौक्षन् = प्रोक्षितवन्त:, तेन = पुरुषेण, साध्या: = सृष्टिकरणसमर्था:, देवा: = सुरा:, च ऋषय: = तत्तन्मन्त्रद्रष्टार:, अयजन्त = यागं चक्रु:।

हिन्दी-सृष्टि के पहले प्रादुर्भूत उस यज्ञसाधनभूत पुरुष को मानस यज्ञ में प्रोक्षणादि संस्कारों से संस्कार युक्त करते हुए, उसी पुरुष से सृष्टिसाधनयोग्य प्रजापति आदि देवता और मन्त्रद्रष्टा ऋषियों ने मानस यज्ञ को किया ॥९॥

विनियोग:-ॐ यत्पुरुषमित्यस्य नारायण ऋषि:, निच्यृद् छन्द:, पुरुषो देवता स्तुतिकरणे विनियोग:।

यत्पुरुषं॒ व्व्यदधुः कति॒धाव्व्यकल्प्पयन् ॥
मुख॒ङ्किमस्यासी॒त्किम्बा॒हूकिमू॒रूपादाऽउच्च्येते ॥१०॥

भाष्यम्-यत् = यदा, पुरुषं = विराड्रूपं, व्यदधुः = प्रजापतेः प्राणरूपाः सुराः सङ्कल्पेन उत्पादितवन्तः, तदा = तदानीं, कतिधा = कतिभिः प्रकारैः, व्यकल्पयन् = विविधं कल्पितवन्तः, अस्य = पुरुषस्य, मुखम् = आस्यम्, किम् आसीत् = किमाकारकमासीत्, किं बाहू = कौ बाहू अभूतां, किम् ऊरू = कौ ऊरू, पादौ = कौ च पादौ, उच्येते = कथ्येते।

हिन्दी-जिस समय विराट् पुरुष को प्रजापति के प्राणरूप देवगणों ने संकल्प द्वारा प्रकट किया, उस समय कितने प्रकार की कल्पना करते हुए इस पुरुष के मुख, भुजा, जाँघ और चरण कौन कहे जाते हैं ॥१०॥

विनियोगः-ॐ ब्राह्मणोऽस्येत्यस्य नारायण ऋषिः, निच्यृद् छन्दः, पुरुषो देवता स्तुतिकरणे विनियोगः।

ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीद्बाहूराजन्यःकृतः ॥
ऊरूतदस्ययद्वैश्यःपद्भ्याᳪशूद्रोऽअजायत ॥११॥

भाष्यम्-ब्राह्मणः = एतज्जातिविशिष्टः पुरुषः, अस्य = प्रजापतेः, मुखं = वक्त्रम्, आसीत् = मुखादुद्भूत इत्याशयः, राजन्यः = क्षत्रियः, बाहूकृतः = बाहुत्वेन निर्मितः, अस्य यत् = यौ, ऊरू तद् वैश्यः = तद्रूपो वैश्यः समजनि, वैश्यवर्णस्योत्पत्तिस्थानम् ऊरू, पद्भ्यां = चरणाभ्यां, शूद्रः = तुरीयवर्णजः शूद्रः समभवत्, इति।

हिन्दी-इस विराट् पुरुष के मुख से ब्राह्मण वर्ण की, भुजाओं से क्षत्रिय-वर्ण की, जाँघों से वैश्यवर्ण की और चरणों से शूद्रवर्णविशिष्ट पुरुष की उत्पत्ति हुई। कृष्णयजुर्वेद के सप्तम काण्ड में भी इसका समर्थन प्राप्त होता है। यथा—'स मुखतस्त्रिवृतं निरमिमीत'॥११॥

विनियोगः-ॐ चन्द्रमा इत्यस्य नारायण ऋषिः, आर्ष्यनुष्टुप् छन्दः, पुरुषो देवता स्तुतिकरणे विनियोगः।

चन्द्रमामनसोजातश्चक्षोःसूर्य्योऽअजायत ॥
श्श्रोत्राद्वायुश्चप्प्राणश्चमुखादग्निरजायत ॥१२॥

भाष्यम्-अस्य प्रजापतेः, मनसः = एतद्विशिष्टेन्द्रियसकाशात्, चन्द्रमाः = सोमः, जातः = समुत्पन्नः, चक्षोः = चक्षुषः, सूर्यः = दिवाकरः, अजायत = उत्पन्नः,

च = तथा, श्रोत्रात् = कर्णकुहरात्, वायुः = पवनः, प्राणः च = प्राणाः अपि, मुखात् = वक्त्रात्, अग्निः = वैश्वानरः, अजायत = जातः।

हिन्दी–उस विराट् पुरुष के मन से चन्द्रमा, नेत्रों से सूर्य, कानों से वायु और प्राण प्रकट हुए तथा मुख से अग्नि प्रकट हुई॥१२॥

विनियोगः–ॐ नाभ्या इत्यस्य नारायण ऋषिः, आर्ष्यनुष्टुप् छन्दः, पुरुषो देवता स्तुतिकरणे विनियोगः।

नाब्भ्र्याऽआसीदुन्तरिक्षꣳशीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत ॥

पद्भ्यांम्भूमिर्द्दिशःश्रोत्रात्तथालोकाँ२॥ऽअकल्प्पयन्॥१३॥

भाष्यम्–सृष्टिक्रमं विवृण्वन् पुनर्निरूपयति— नाभ्याः = विराट्पुरुषस्य नाभेः, अन्तरिक्षम् = आकाशम्, आसीत् = अभवत्, शीर्ष्णः = शिरसः, द्यौः = द्युलोकः, समवर्तत = उत्पन्नः, पद्भ्यां = चरणाभ्यां, भूमिः = पृथिवी, श्रोत्रात् = कर्णयुगलात्, दिशः = सर्वाः दिशः समुत्पन्नाः, तथा = एवम्प्रकारेण, लोकान् = अन्तरिक्षप्रभृति-चतुर्दशभुवनानि, अकल्पयन् = उत्पादितवन्तः।

हिन्दी–सृष्टिक्रम का वर्णन करते हुए आगे कहते हैं— उस विराट् पुरुष की नाभि से आकाश, शिर से स्वर्ग, पैरों से पृथिवी, कानों से सम्पूर्ण दिशाएँ तथा भूः, भुवः आदि चतुर्दश लोकों की उत्पत्ति हुई ॥१३॥

विनियोगः–ॐ यत्पुरुषेणेत्यस्य नारायण ऋषिः, निच्यृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दः, यज्ञो देवता स्तुतिकरणे विनियोगः।

यत्पुरुषेण हुविषा देवायुज्ञमतन्न्वत ॥

व्वसन्तोऽस्यासीदाज्ज्यङ्ग्रीष्मऽइध्मःशुरद्धविः ॥१४॥

भाष्यम्–यत् = यदा, देवाः = देवशरीरेषु सम्भवाः, पुरुषेण = पुरुषाभिधानेन, हविषा = हविर्भूतेन, यज्ञम् = मानसं यज्ञम्, अतन्वत = अतनिषत, तदानीं वसन्तः = वसन्तर्तुः, अस्य = यज्ञस्य, आज्यं = घृतम्, आसीत् = अभूत्, ग्रीष्मः = ग्रीष्मर्तुः, इध्मः = समित् आसीत्, शरत् = शरदर्तुः, हविः = हविर्द्रव्यमासीत्, इति।

हिन्दी–जिस समय उत्तरसृष्टि के निर्माणार्थ बाह्यद्रव्यों के अभाव में विराट् पुरुष ने ही मन से हविष् के द्वारा संकल्प कर उस यज्ञ का विस्तार किया, उस

समय वसन्त ऋतु घृत, ग्रीष्म ऋतु समिधा (लकड़ी), शरद् ऋतु हवि रूप हुई । पुनः वसन्त आदि ऋतुओं की आज्य-विशेष रूप से कल्पना की गयी है॥१४॥

विनियोगः–ॐ सप्तास्यासन्नित्यस्य नारायण ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, यज्ञो देवता स्तुतिकरणे विनियोगः।

सप्प्तास्यासन्न्परिधयस्त्रिः सप्प्तसमिधः कृताः ॥
देवायद्यज्ञन्तन्वानाऽअबध्नन्पुरुषम्पशुम् ॥१५॥

भाष्यम्–अस्य = यज्ञस्य, सप्त = गायत्रीप्रभृतीनि सप्त छन्दांसि, परिधयः = ऐष्टिकस्य आहवनीयस्य च त्रयः परिधयः, त्रिसप्त = एकविंशतिः, सप्त छन्दांसि, सप्त उपछन्दांसि, सप्त व्याहृतयश्च एकविंशः, एतानि समिधः कृताः = याः काष्ठत्वेन भाविताः, यत् = यदा, देवाः = प्राणेन्द्रियरूपाः, यज्ञम् = मानसं यज्ञं, तन्वानाः = कुर्वाणाः, पुरुषं = विराट्पुरुषम्, पशुम् = पशुरूपेण, अबध्नन् = भावितवन्तः।

हिन्दी–इस सांकल्पिक यज्ञ की गायत्री आदि सात छन्द परिधियाँ हैं । इस यज्ञ की इक्कीस (गायत्री आदि सात छन्द, अतिजगती आदि सात उपछन्द और सात व्याहृतियाँ) समिधाएँ बनाकर जब देवताओं ने प्रजापति के प्राणेन्द्रिय के स्वामियों ने मानस यज्ञ का विस्तार करते हुए विराट् पुरुष को पशुरूप से भावित कर बाँधा ॥१५॥

विनियोगः–ॐ यज्ञेनेत्यस्य नारायण ऋषिः, ब्राह्म्युष्णिक् छन्दो यज्ञो देवता स्तुतिकरणे विनियोगः।

यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवास्तानिधर्म्माणिप्प्रथमान्यासन्॥
तेहनाकम्महिमानः सचन्तयत्रपूर्व्वेसाद्ध्याः सन्तिदेवाः ॥१६॥

भाष्यम्–देवाः = सिद्धसङ्कल्पाः प्रजापतिप्राणात्मकाः, यज्ञेन = यज्ञसाधनभूत-सङ्कल्पेन, यज्ञं = यज्ञस्वरूपं विष्णुम्, अयजन्त = समर्चितवन्तः, तानि = ते, धर्माणि = धर्माः, प्रथमानि = अग्र्याणि, आसन् = बभूवुः, यत्र = दिराट्पुरुषाश्रिते स्वर्गे, पूर्वे साध्याः = प्रत्ने साध्यादयो देवाः, सन्ति = वर्तन्ते, तं नाकं = स्वर्गं, ह = निश्चयेन, ते महिमानः = तद् उपासकाः,सचन्ते = प्राप्नुवन्ति ।

हिन्दी–सिद्धसंकल्पवाले देवताओं ने मानस यज्ञ से यज्ञस्वरूप विष्णु का पूजन किया, उसके फल से प्राचीन धर्म प्रमुख माने गये । जिस स्वर्ग में प्राचीन

उपाधिसाधक देवता रहते हैं, निश्चय करके विराट्-प्राप्तिसाधन स्वर्ग को वे ही उपासक प्राप्त करते हैं ॥१६॥

विनियोगः–ॐ अद्भ्य इत्यस्योत्तरनारायण ऋषिः, भुरिगार्षीत्रिष्टुप् छन्दः, आदित्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

अ॒द्भ्यः सम्भृ॑तः पृथि॒व्यै रसा॑च्च वि॒श्वक॑र्म्मणः॒ सम॑वर्त्त॒ताग्रे॑ ॥
तस्य॒ त्वष्टा॑ वि॒दध॑द्रू॒पमे॑ति॒ तन्मर्त्य॑स्य देव॒त्वमा॒जान॒मग्रे॑ ॥१७॥

भाष्यम्–पृथिव्यै = पृथिव्या अपि, अत्र पृथिवीशब्दः पञ्चभूतोपलक्षणार्थम्। च, अद्भ्यः = जलात्, सम्भृतः = स्फीतः, विश्वकर्मणः = कालस्य, विश्वं कर्म यस्य तस्येति विग्रहः, रसात् = प्रीतेः, अग्रे = पूर्वं, समवर्तत = समभवत्। तस्य = रसस्य, रूपं = तद्रूपं, विदधत् = धारयन्, त्वष्टा = आदित्यः, एति = प्रतिदिनम् उदयाय गच्छति, अग्रे = सर्वप्रथमं, मर्त्यस्य = पुरुषमेधयाजिनः पुरुषस्य, आजानम् = प्रधानं, तत् देवत्वं = सूर्यरूपेण धारयन् एति। द्विविधा भवन्ति देवाः = तपस्यादिभिरुत्कृष्टकर्मभिर्देवत्वं गताः कर्मदेवाः, सृष्ट्यादौ समुत्पन्ना आजानदेवाः।

हिन्दी–पृथिवी आदि की सृष्टि के लिए पञ्चमहाभूतों से जो रस पुष्ट हुआ और जिसका विश्वनिर्माण ही कर्म है उस काल की प्रीति का रस इन सबके प्रति कारण होने से पुरुषमेधयाजी के लिङ्गशरीर में पाँच भूत और काल का परितोष होता है। इनके परितोष से कोई रस फल-विशेषरूप उत्तम जन्म का देने वाला उत्पन्न हुआ वही यह आदित्य रूप धारण कर प्रतिदिन उदय को प्राप्त होता है। प्रथम मनुष्य रूप उस पुरुषमेधयाजी के सूर्य रूप से देवत्व को प्राप्त करता है।

देवता दो प्रकार के कहे गये हैं— कर्मदेव और आजानदेव। जो अपने तप आदि उत्कृष्ट कर्मों से देवत्व को प्राप्त करते हैं वे कर्मदेव और जो सृष्टि के आदि में उत्पन्न हुए वे आजानदेव कहे जाते हैं। सूर्य की गणना आजानदेवों में है ॥१७॥

विनियोगः–वेदाहमित्यस्य नारायण ऋषिः, निच्यृदार्षीत्रिष्टुप् छन्दः, पुरुषो देवता स्तुतिकरणे विनियोगः।

वेदा॒हमे॒तं पुरु॑षं म॒हान्त॑मादि॒त्यव॑र्णं॒ तम॑सः पु॒रस्ता॑त् ॥
तमे॒व वि॑दि॒त्वाति॑ मृ॒त्युमे॑ति॒ नान्यः पन्था॑ विद्य॒तेऽय॑नाय ॥१८॥

भाष्यम्–अहम् एतम् = प्रस्तुतम्, महान्तं = सर्वोत्कृष्टम्, आदित्यवर्णं = सूर्यसदृशं, तमसः = अन्धकारस्य, परस्तात् = विप्रकृष्टम् अज्ञानान्धकाराद् विच्युतम्, पुरुषं = सूर्यमण्डलस्थं पुरुषमेधयाजिनं पुरुषं, वेद = जानामि, तम् = आदित्यम्, एव विदित्वा = सम्यग् विज्ञाय, मृत्युम् = मरणम्, अत्येति = निष्क्रम्य पारे ब्रह्मणि प्राप्नोति। अयनाय = आश्रयणाय, अन्यः = अपरः, पन्था = मार्गः, न विद्यते = नैवास्तीति।

हिन्दी–मैं इस सर्वश्रेष्ठ अंधकार रूपी अविद्या से दूर रहनेवाले आदित्यरूपी पुरुष को जानता हूँ। उस आदित्यमण्डल में स्थित पुरुष को जानकर मनुष्य परब्रह्म को प्राप्त कर लेता है। इसके अतिरिक्त मोक्षप्राप्ति का कोई दूसरा उपाय नहीं है ॥१८॥

विनियोगः–ॐ प्रजापतिरित्यस्य नारायण ऋषिः, भुरिगार्षीत्रिष्टुप् छन्दः, पुरुषो देवता स्तुतिकरणे विनियोगः।

प्रजापतिश्चरतिगर्ब्भेऽअन्तरजायमानो बहुधाव्विजायते ॥
तस्ययोनिम्परिपश्श्यन्तिधीरास्तस्मिन्हतस्त्थुर्ब्भुवनानिव्विश्श्वा ॥१९॥

भाष्यम्–प्रजापतिः = प्रजानाम्पतिः, अन्तः = अन्तर्हृदि स्थितः सन्, गर्भे = मध्ये, चरति = प्रविशति, जीवानाम्मध्ये आत्मरूपत्वेन वसतीत्याशयः, अजायमानः = अजन्मा, बहुधा = विभिन्नप्रकारेण, जायते = चराचरदेहेषु जन्म प्राप्नोति, किं वा अजायमानोऽपि रामकृष्णादिशरीरमास्थाय बहुधा गर्भात् समुत्पद्यते। धीराः = विद्वांसो ब्रह्मविदः, तस्य = प्रजापतेः, योनिम् = उत्पत्तिस्थानम्, परिपश्यन्ति = अहं ब्रह्मास्मीति जानन्ति, ह = निश्चयेन, तस्मिन् = ब्रह्मणि, विश्वा = सर्वाणि, भुवनानि = भूतजातानि, तस्थुः = स्थितानि, इति।

हिन्दी–प्रजापति हृदय के भीतर स्थित होकर प्रत्येक गर्भ के भीतर प्रविष्ट होता है। उत्पन्न न होने वाला भी यह सर्वात्मा प्रजापति कार्य-कारण रूप से उत्पन्न होता है। ब्रह्मज्ञानी उस रूप को देखते हैं और 'अहं ब्रह्मास्मि' = 'मैं ब्रह्म हूँ' इस रूप से जानते हैं। सम्पूर्ण प्राणी उसी ब्रह्म में स्थित हैं, वही सबमें व्याप्त होकर अनेक रूप धारण करता है ॥१९॥

विनियोगः–ॐयो देवेभ्य इत्यस्य नारायण ऋषिः, आर्ष्यनुष्टुप् छन्दः, पुरुषो देवता स्तुतिकरणे विनियोगः।

योदेवेब्भ्यऽआतपतियोदेवानाम्पुरोहितः ॥
पूर्व्वोयोदेवेब्भ्योजातोनमोरुचायब्ब्राह्मये ॥२०॥

भाष्यम्–यः आदित्यरूपः प्रजापतिः, देवेभ्यः = देवानाम्प्रयोजनाय, आतपति = समन्ताद् द्योतते, यः देवानां = सुराणाम्, पुरोहितः = कार्येषु अग्रणीर्भवति, यः देवेभ्यः = यः सुरेभ्यः, पूर्वः जातः = प्राग् उत्पन्नः, तस्मै, रुचाय = कान्तियुक्ताय, ब्राह्मये = ब्रह्मभूताय, नमः = प्रणामः।

हिन्दी–जो आदित्यरूप प्रजापति देवताओं के लिए चारों ओर से प्रकाशित होता है, जो देवताओं के सभी कार्यों में अग्रगण्य है और जो सब देवताओं से प्रथम प्रकट हुआ उस ब्रह्म को नमस्कार है ॥२०॥

विनियोगः–ॐ रुचमित्यस्य नारायण ऋषिः,आर्ष्यनुष्टुप् छन्दः, पुरुषो देवता स्तुतिकरणे विनियोगः।

रुचम्ब्राह्मञ्जनयन्तोदेवाऽअग्ग्रेतदब्ब्रुवन्॥
यस्त्वैवम्ब्राह्मणोव्विद्यात्तस्यदेवाऽअसन्वशे ॥२१॥

भाष्यम्–देवाः = दीप्यमानाः प्राणाः, रुचं = शोभनं, ब्राह्मं = ब्रह्मणः अपत्यम् आदित्यं, जनयन्तः = उत्पादयन्तः, अग्रे = प्रथमं, तद् अब्रुवन् = अयमेव अस्माकं प्रमुख इति कथितवन्तः, यः ब्राह्मणः = द्विजातिः, त्वा = त्वाम्, एवम् = उक्तविधिना, विद्यात् = जानीयात्, तस्य = ब्राह्मणस्य, देवाः = देवगणाः, वशे = अधिकारे, असन् = भवन्ति ।

हिन्दी–दीप्तिमान् इन्द्रियों वाले देवता ने परब्रह्म ज्योतिष्मान् ब्रह्मपुत्र आदित्य को प्रकट करते हुए सर्वप्रथम इस प्रकार कहा— हे आदित्य ! जो ब्राह्मण आपको पूर्वोक्त विधि से प्रकट हुआ जानता है उस आदित्योपासक ब्राह्मण के वश में देवता रहते हैं ॥२१॥

विनियोगः–ॐ श्रीश्चत इत्यस्य नारायण ऋषिः, निच्यृदार्षीत्रिष्टुप् छन्दः, पुरुषो देवता स्तुतिकरणे विनियोगः।

श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रे पार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तम्।
इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाणसर्व्वलोकम्मऽइषाण ॥२२॥

इति रुद्रे द्वितीयोऽध्यायः ।

भाष्यम्–हे देव ! श्रीः = सम्पत्तिः, लक्ष्मीः = शोभा, ते = तव, पत्न्यौ = जाया-स्थानीये, च = तथा, अहोरात्रे = दिवानक्तम्, पार्श्वे = पार्श्वस्थानीये स्तः, नक्षत्राणि = तारकाः, रूपं = तव मूर्तिः, अश्विनौ = द्यावापृथिव्यौ, व्यात्तं = विवृतमुखम्, इष्णन् = कर्मफलमभिलषन् सन्, इषाण = अभिलष, अमुम् = परलोकम्, मे = मम, इषाण = समीचीनोऽस्तु, सर्वं = पशुपुत्रादिधनयुक्तम्, मे = मह्यम्, इषाण = इच्छेत्याशयः।

हिन्दी–हे पुरुषोत्तम ! श्री और लक्ष्मी आपकी पत्नी रूप हैं, दिन-रात आपके पार्श्वस्थानीय हैं, सभी तारे आपका रूप हैं, आकाश और पृथिवी आपके मुखस्थान में व्याप्त हैं, कर्मफल की इच्छा करते हुए मेरे निमित्त परलोक की इच्छा करो और मैं सर्वलोकात्मक हो जाऊँ, ऐ प्राणियो! ऐसी मेरे निमित्त तुम सब इच्छा करो ॥२२॥

इति नैनीतालमण्डलाभिजन-श्रौतस्मार्तधर्मधुरन्धर**पण्डिततारादत्त .मज-ब्रह्मानन्दत्रिपाठि**कृत-श्रीरुद्राष्टाध्याय्यां संस्कृतभाष्य-हिन्दीटीकाभ्यां संवलितः द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

अथ तृतीयोऽध्यायः

(अप्रतिरथसूक्तम्)

विनियोगः–ॐ आशुरित्यस्य अप्रतिरथ ऋषिः, आर्षीत्रिष्टुप् छन्दः, इन्द्रो देवता पाठे विनियोगः।

हरिः ॐ। आशुःशिशानोव्वृषभोनभीमोघनाघनःक्षोभणश्चर्षणीनाम्।
सङ्क्रन्दनोनिमिषऽएकवीरःशतꣳसेनाऽअजयत्साकमिन्द्रः ॥१॥

भाष्यम्–आशुः = शीघ्रकार्यकरणशीलः, शिशानः = शातनकर्ता, वृषभः = वर्षणशीलः, न = इव, भीमः = भयानकः, घनाघनः = शत्रुघातकः, चर्षणीनाम् = मनुष्याणां, क्षोभणः = सञ्चालकः, सङ्क्रन्दनः = सम्यक् क्रन्दयिता, अनिमिषः = अनलसः, सावधान इत्यर्थः, एकवीरः = अनन्यसहायोऽपि सर्वकार्यक्षमः, इन्द्रः = शचीपतिः, शतं सेनाः = प्रभूताः सेनाः, साकं = सकृदेव, अजयत् = जितवानित्याशयः।

हिन्दी–शीघ्रगामी, तीक्ष्ण वज्रवाला, वृषभ की भाँति वर्षणशील, शत्रुओं का घातक, मनुष्यों में हलचल मचाने वाला, बार-बार गरजने वाला, देवता होने से पलकों से रहित अतएव जागरूक, उस अद्वितीय वीर इन्द्रदेव ने सैकड़ों शत्रुओं की सेनाओं को अकेले पराजित कर दिया ॥१॥

विनियोगः–ॐ सङ्क्रन्दनेनेत्यस्य अप्रतिरथ ऋषिः, विराड्ब्राह्मयनुष्टुप् छन्दः, इन्द्रो देवता पाठे विनियोगः।

सङ्क्रन्दनेनानिमिषेणजिष्ष्णुनायुत्कारेण दुश्च्यवनेनधृष्ष्णुना ॥
तदिन्द्रेणजयततत्त्सहद्ध्वँ युधोनरऽइषुहस्तेनव्वृष्ष्णा ॥२॥

भाष्यम्–युधः = हे योद्धारः ! नरः = पुरुषाः, धृष्णुना = निर्भयेन, सङ्क्रन्दनेन = शब्दकारिण", युत्कारेण = युद्धकर्त्रा, अनिमिषेण = निमेषरहितेन, सावधानेन तत्परेण वा, इषुहस्तेन = धृतबाणेन, जिष्णुना = जयशीलेन, दुश्च्यवनेन = अच्युतस्वभावेन,

वृष्णा = वर्षणशीलेन, इन्द्रेण = शचीपतिना, तत् = युद्धं, जयत = विजयं लभध्वं, तत् = शत्रुबलं, सहध्वम् = अभिभवत।

हिन्दी–हे वीर मनुष्यो ! तुम निर्भीक हो पापी मनुष्यों को दुःख देने वाले और भक्तजनों को अपनी आत्मा में स्थान देने वाले, सर्वदा सावधान, बाण हाथ में धारण करने वाले जयशील मनुष्य तथा अजेय भगवान् इन्द्र की सहायता से युक्त होकर युद्ध द्वारा शत्रुओं को पराजित करो ॥२॥

विनियोगः–ॐ सऽइषुहस्तैरित्यस्य अप्रतिरथ ऋषिः, आर्षीत्रिष्टुप् छन्दः, इन्द्रो देवता पाठे विनियोगः।

सऽइषुहस्तैःसनिषङ्गिभिर्व्वशीसꣳस्स्रष्टासयुधऽइन्द्रोगणेन ॥
सꣳसृष्टजित्सोमपाबाहुशर्द्ध्युग्ग्रधन्न्वाप्प्रतिहिताभिरस्ता ॥३॥

भाष्यम्–सः = इन्द्रः, वशी = जितेन्द्रियः, इषुहस्तैः = धृतबाणैः, निषङ्गिभिः = खड्गहस्तैर्भटैश्च, संस्रष्टा = सम्पर्कशीलः, सः = देवः, गणेन = शत्रुसङ्घेन सह, युधः = युद्धकर्ता, स इन्द्रः = पूर्वोक्तः शचीपतिः, संसृष्टजित् = युद्धोद्यतशत्रूञ्जयति, सोमपाः = सोमपानशीलः, बाहुशर्द्धी = भुजबलसमृद्धः, उग्रधन्वा = उत्कृष्टधनुष्मान्, प्रतिहिताभिः = प्रेरितबाणैः, अस्ता = विनाशकः, अस्तीति शेषः।

हिन्दी–वह इन्द्र जितेन्द्रिय, शत्रुओं के ऐश्वर्य को ग्रहण करने वाला, बाण और तलवार हाथ में लिये योधाओं का मुकाबला करनेवाला, शत्रुओं को जीतनेवाला, सोमपान करनेवाला, बाहुबल से युक्त, बहुत बड़े धनुष वाला और अपने बाणों से शत्रुओं का विनाश करने वाला इन्द्र हमारी रक्षा करे ॥३॥

विनियोगः–ॐ बृहस्पत इत्यस्य अप्रतिरथ ऋषिः, आर्षीत्रिष्टुप् छन्दः, बृहस्पतिर्देवता पाठे विनियोगः।

बृहस्प्पतेपरिदीयारथेनरक्षोहामित्राँ२॥ऽअपबाधमानः ॥
प्प्रभञ्जन्त्सेनाःप्प्रमृणोयुधाजयन्नस्म्माकमेद्ध्यविताारथानाम् ॥४॥

भाष्यम्–बृहस्पते = बृहतां पते देव ! रक्षोहा = रक्षसां विनाशकः, रथेन = स्यन्दनेन, परिदीयाः = परिगच्छ, अमित्रान् = शत्रून्, अपबाधमानः = परितो विनाशयन्, सेनाः = शत्रूणां सेनाः, प्रभञ्जन् = प्रकर्षेण घातयन्, युधा = युद्धेन,

प्रमृणः = प्रमर्दकान्, जयन् = स्ववशीकुर्वन् सन्, अस्माकम् = अस्मत्सम्बन्धिनां, रथानां = स्यन्दनानाम्, अविता = रक्षिता, एधि = भव ।

हिन्दी–हे बृहस्पतिदेव ! आप राक्षसों के विनाश करनेवाले हैं, रथ द्वारा चारों ओर गमन करनेवाले शत्रुओं तथा शत्रुसेना को पीड़ित कर युद्ध द्वारा हिंसकों को जीतते हुए हमारे रथों के रक्षक हों ॥४॥

विनियोगः–ॐ बलविज्ञाय इत्यस्य अप्रतिरथ ऋषिः, आर्षीत्रिष्टुप् छन्दः, इन्द्रो देवता पाठे विनियोगः।

बलविज्ञायस्थविरः प्रवीरः सहस्वान्वाजीसहमानऽउग्रः ॥
अभिवीरोऽअभिसत्त्वासहोजाजैत्रमिन्द्ररथमातिष्ठगोवित् ॥५॥

भाष्यम्–इन्द्र = देवराट् ! त्वम्, बलविज्ञायः = सकलप्राणिबलवेत्तासि, स्थविरः = सर्वज्येष्ठः सर्वानुशासकश्चासि, प्रवीरः = वीरश्रेष्ठः, सहस्वान् = प्रकृष्ट-बलवान्, वाजी = अन्नसमृद्ध्या सम्पन्नः, उग्रः = अत्यन्तबलवान्, अभिवीरः = बलवद्भिरभितः संवृतः, अभिसत्त्वा = सत्त्वगुणभूयिष्ठः, सहोजाः = ओजसा संयुतः, गोवित् = स्तुतिज्ञः, सहमानः = शत्रुतिरस्कर्ता, जैत्रं = जयिनं, रथं = स्यन्दनम्, आतिष्ठ = आगत्य विराजमानो भवेति ।

हिन्दी–हे इन्द्रदेव ! आप सब प्राणियों के बल को जानने वाले, पुराणपुरुष, सबको अनुशासित करनेवाले, अत्यन्त शूरवीर, अन्न के स्वामी, बलवान्, वीरों से घिरे हुए, सत्त्वगुणप्रधान, बल से उत्पन्न, स्तुति को स्वीकार करने वाले और शत्रुओं को पराजित करनेवाले हैं। आप जयशील रथ में आरूढ हों ॥५॥

विनियोगः–ॐ गोत्रभिदमित्यस्य अप्रतिरथ ऋषिः, भूरिगार्षीत्रिष्टुप् छन्दः, इन्द्रो देवता पाठे विनियोगः।

गोत्रभिदङ्गोविदंवज्रबाहुञ्जयन्तमज्ज्मप्रमृणन्तमोजसा ॥
इमꣳसजाताऽअनुवीरयद्ध्वमिन्द्रꣳसखायोऽअनुसꣳरभद्ध्वम् ॥६॥

भाष्यम्–सजाता = सहोत्पन्नाः, अदितेः पुत्रा आदित्या देवाः इत्याशयः, सखायः = अत एव परस्परं मित्रत्वमापन्नाः, इयं = वर्ण्यविषयताङ्गतं, गोत्रभिदम् = पर्वतपक्षविनाशकं, गोविदं = सर्वशास्त्रवेत्तारं, वज्रबाहुम् = अशनिहस्तम्, अज्मजयन्तं =

युद्धे जयशीलम्, ओजसा = स्वोत्कृष्टबलेन, प्रमृणन्तम् = मर्दयन्तम्, इन्द्रं = शचीपतिम्, अनुवीरयध्वं = वीरकर्म कुरुद्ध्वम्, अनुसंरभद्ध्वम् = अनुगम्य त्वरत ।

हिन्दी–हे सहोदर देवताओ ! पर्वतों के पंख काटनेवाले वैदिक वाङ्मय के ज्ञाता, हाथ में वज्र धारण करनेवाले, युद्ध में विजयी, अपने पराक्रम से शत्रुओं का संहार करनेवाले इन्द्र का उत्साहवर्धन करो और उसे वेगवान् बनाओ ।।६।।

विनियोगः–ॐ अभिगोत्राणीत्यस्य अप्रतिरथ ऋषिः, निच्यृदार्षीत्रिष्टुप् छन्दः, इन्द्रो देवता पाठे विनियोगः।

अभिगोत्राणिसहसागाहमानोदयोव्वीरश्शतमन्न्युरिन्द्रः ।।
दुश्च्यवनश्पृतनाषाडयुद्धयोस्म्माकꣳसेनाऽअवतुप्प्रयुत्त्सु ।।७।।

भाष्यम्–अदयः = दयारहितः, वीरः = प्रक्रान्तः, शतमन्युः = क्रोधनः, शतयज्ञः वा, दुश्च्यवनः = शत्रुभिरचाल्यः, पृतनाषाट् = शत्रुसैन्यानां तिरस्कर्ता, अयुध्यः = परैरजेयः, इन्द्रः = परमैश्वर्यसम्पन्नः, युत्सु = सङ्ग्रामेषु, गोत्राणि = पर्वतकुलानि असुरकुलानि वा, सहसा = बलेन, अभिगाहमानः = प्रविशन्, अस्माकं सेनाः = अस्मदीयाः पृतनाः, प्रावतु = प्रकर्षेण रक्षतु ।

हिन्दी–शत्रुओं पर निर्दयी होकर पराक्रम दिखलाने वाला, अत्यन्त क्रोधी, सौ यज्ञ करनेवाला, जिसको युद्धभूमि में कोई पराजित नहीं कर सकता, शत्रुसेना का तिरस्कार करनेवाला और जिसके साथ कोई युद्ध नहीं कर सकता ऐसा वह देवराज इन्द्र असुरसमूह में प्रवेश कर हमारी सेना की रक्षा करे ।।७।।

विनियोगः–ॐ इन्द्र इत्यस्य अप्रतिरथ ऋषिः, ब्राह्म्युष्णिक् छन्दः, इन्द्रो देवता पाठे विनियोगः।

इन्द्रऽआसान्नेताबृहस्प्पतिर्द्दक्षिणायज्ञश्पुरऽएतुसोमः ।।
देवसेनानामभिभञ्जतीनाञ्जयन्तीनाम्मरुतोयन्त्वग्ग्रम् ।।८।।

भाष्यम्–आसाम् = अस्मत्सहायकानां, देवसेनानां = सुरचमूनाम्, इन्द्रः = शचीपतिः, नेता = नायकः, बृहस्पतिः = गुरुः अस्तु, पुरः = अग्रे, एत = आयातु, दक्षिणा = दक्षिणस्यां दिशि, यज्ञः = यज्ञपुरुषः विष्णुः, सोमः पुरः एतु = पुरस्ताद् आगच्छतु, अभिभञ्जतीनां = शत्रून् विनाशयन्तीनां, जयन्तीनां = स्ववशे कुर्वतीनां तासाम्, मरुतः = देवगणः, अग्रम् = पुरः, यन्तु = गच्छतु ।

हिन्दी–हमारी सहायता के लिए आयी हुई देवसेनाओं के इन्द्र नेता हैं और बृहस्पति गुरु हैं। इन शत्रुविनाशक सेनाओं के आगे यज्ञपुरुष विष्णु गमन करें। सोमदक्षिणा आगे गमन करे, गण-देवता इसके आगे गमन करें, इसी प्रकार सेना आगे की ओर बढ़े ॥८॥

विनियोगः–ॐ इन्द्रस्येत्यस्य अप्रतिरथ ऋषिः, ब्राह्म्युष्णिक् छन्दः, इन्द्रो देवता पाठे विनियोगः।

इन्द्रस्यव्वृष्ष्णोव्वरुणस्यराज्ञऽआदित्यानाम्मरुताᳫंशर्द्धऽउग्ग्रम् ॥
महामनसाम्भुवनच्च्यवानाङ्घोषोदेवानाञ्जयतामुदस्त्थात् ॥९॥

भाष्यम्–वृष्णः = वर्षतुः वर्षणशीलस्य वा, इन्द्रस्य = शचीपतेः, राज्ञः = वरुणस्य, जलदेवस्य, आदित्यानाम् = आदित्यसंज्ञकानाम्, मरुताम् = मरुद्गणानां, शर्द्धः = बलम्, उग्रम् = उद्गीर्णशस्त्रम् उद्बभूव, जयतां = जयशालिनाम्, महामनसाम् = उत्कृष्टचेतोवताम्, भुवनच्यवानां = त्रैलोक्यविद्रावणक्षमाणां, देवानां = सुराणां, घोषः = जयजयारावः, उदस्थात् = समुत्तिष्ठति।

हिन्दी–वर्षा करनेवाले इन्द्र, राजा वरुण और आदित्यसंज्ञक देवगणों का उत्कृष्ट बल हाथी, घोड़ा, रथ, पैदलों की सेना त्रैलोक्यनाश करने की शक्ति वाले देवताओं की विजयशील सेना का उच्च स्वर से जयघोष करते हैं ॥९॥

विनियोगः–ॐ उद्धर्षयेत्यस्य अप्रतिरथ ऋषिः, ब्राह्म्युष्णिक् छन्दः, इन्द्रो देवता पाठे विनियोगः।

उद्धर्ष्षयमघवन्नायुधान्युत्त्सत्त्वनाम्मामकानाम्मनाᳫंसि ॥
उद्वृत्रहन्वाजिनांव्वाजिनान्युद्रथानाञ्जयताँय्यन्तुघोषाः ॥१०॥

भाष्यम्–मघवन् = हे इन्द्र! आयुधानि = शस्त्राणि, उद्धर्षय = उद्गतहर्षाणि प्रहरणयोग्यानि कुरु, मामकानाम् = अस्मत्सम्बन्धिनां, सत्त्वानां = युद्धप्रशिक्षित-प्राणिनाम्, मनांसि = चेतांसि, उद्धर्षय = उच्चैः प्रीणय, वृत्रहन् = वृत्रासुरविनाशक, वाजिनाम् = अश्वानां, वाजिनानि = बलानि, उद्धर्षय, तथा जयतां = लब्धविजयानां, रथानां = स्यन्दनानां, घोषाः = शब्दाः, उद्यन्तु = उच्चैः श्रुतिपथं यान्तु।

हिन्दी–हे इन्द्र! अपने शस्त्रों को तेज करके युद्ध के योग्य बनाइए, हमारे युद्धवीरों के मनों को पर्याप्त हर्षित कीजिए, घोड़ों की सेना को

प्रसन्न कर शीघ्रगामी बनाइए और विजयी रथों की ध्वनियाँ चारों ओर सुनाई दें ॥१०॥

विनियोगः–ॐ अस्माकमित्यस्य अप्रतिरथ ऋषिः, निच्यृदार्षीत्रिष्टुप् छन्दः, इन्द्रादयो देवताः पाठे विनियोगः।

अस्माकमिन्द्रः᳭समृतेषुद्ध्वजेष्ष्वस्म्माकंय्याऽइषवस्ताजयन्तु ॥
अस्म्माकंव्वीराऽउत्तरेभवन्त्वस्म्माँ२॥ऽउंदेवाऽअवताहवेषु ॥११॥

भाष्यम्–अस्माकम् = अस्मत्सम्बन्धिष्वेव, समृतेषु = शत्रुसेनां सम्प्राप्तेषु, ध्वजेषु = ध्वजयुक्तेषु सैनिकेषु, इन्द्रः = शचीपतिः, रक्षकः भवतु, अस्माकम् = अस्मत्सम्बन्धिनः, या इषवः = ये बाणाः सन्ति, ताः = ते एव बाणाः, जयन्तु = विजयिनो भवन्तु, तथा अस्माकं वीराः = नः सैनिकाः, भटाः = योद्धारः, उत्तरे = उपरि, भवन्तु = शत्रूणामुपरि वर्तमानाः विजयिनो भवन्तु, किञ्च देवाः = सुराः, हवेषु = सङ्ग्रामेषु, अस्मान् उ = नः निश्चयेन, अवत = रक्षत ।

हिन्दी–युद्ध में जब हमारी रणपताका शत्रुओं की रणपताका से सम्मिलित हो, उस समय हमारी इन्द्र रक्षा करें। हमारे बाण शत्रुसेना के बीच विजयी हों। हमारे सैनिक शत्रुसैनिकों से सदा उत्कृष्ट हों और युद्धभूमि में देवता हमारी रक्षा करें ॥११॥

विनियोगः–ॐअमीषामित्यस्य अप्रतिरथ ऋषिः, बाह्मयुष्णिक् छन्दः, इन्द्र-सेना देवता पाठे विनियोगः।

अमीषाञ्चित्तम्प्रतिलोभयन्ती गृहाणाङ्गान्यप्प्वेपरेहि ॥
अभिप्प्रेहिनिर्द्दहहृत्सुशोकैरन्धेनामित्त्रास्तमसासचन्ताम् ॥१२॥

भाष्यम्–अप्वे = रोगरूपेणाधिष्ठितदेवते, त्वम्, अमीषां = योद्धुमुद्यतशत्रूणां, चित्तं = मनांसि, प्रतिलोभयन्ती = मोहयन्ती सती, अङ्गानि = पादादारभ्य शिरः-पर्यन्ताङ्गानि, गृहाण = अङ्गीकुरु, ततः परेहि = दूरं व्रज, अभिप्रेहि = अभिगच्छ, तत्र गत्वा च, हृत्सु = चित्तेषु, शोकैः = दुःखैः, निर्दह = भस्मसात् कुरु, अमित्राः = अस्मच्छत्रवः, अन्धेन तमसा = गाढान्धकारेण, सचन्तां = भजन्ताम् ।

हिन्दी–अप्वा रोग की अधिष्ठात्री देवता का नाम है। हे अप्वे ! तुम शत्रुओं के हृदय को मोहित करती हुई शरीरों को लेकर दूर चली जाओ। शत्रुओं के धन-

पुत्रादि का नाश करके उनके हृदयों को जला डालो। हमारे सभी शत्रु जन अन्धकार में प्रविष्ट हों ॥१२॥

विनियोगः–ॐ अवसृष्टेत्यस्य अप्रतिरथ ऋषिः, आर्ष्यनुष्टुप् छन्दः, इषुर्देवता इषुप्रयोगे विनियोगः।

अवसृष्टा परापत शरव्ये ब्रह्मसꣳशिते ॥
गच्छामित्रान्प्रपद्यस्व मामीषां कञ्चनोच्छिषः ॥१३॥

भाष्यम्–ब्रह्मशंसिते = मन्त्रेण तीक्ष्णीकृते, शरव्ये = हिंसाकर्मणि तत्परे बाणे, त्वम्, अवसृष्टा = प्रक्षिप्ता सती, परापत = अस्मात्स्थानान्निर्गच्छ, गच्छ = गत्वा च, अमित्रान् = रिपून्, प्रपद्यस्व = प्राप्नुहि, अमीषां = रिपूणां मध्ये, कञ्चन = किञ्चिदपि, मा उच्छिषः = अवशिष्टं मा विधेहि ।

हिन्दी–ब्राह्म मन्त्र से तेज किये हुए बाण रूप ब्रह्मास्त्र हमारे द्वारा प्रयुक्त तुम शत्रुओं पर प्रहार करो और इनके शरीरों में प्रवेश कर इन सबका विनाश करो ॥१३॥

विनियोगः–ॐ प्रेत इत्यस्य अप्रतिरथ ऋषिः, विराडार्ष्यनुष्टुप् छन्दः, योधा देवता वीरोत्तेजने विनियोगः।

प्रेता जयता नर इन्द्रो वः शर्म्म यच्छतु ॥
उग्रा वः सन्तु बाहवोऽनाधृष्या यथासथ ॥१४॥

भाष्यम्–नरः = हे योद्धारः मनुष्याः ! प्रेत = प्रकर्षेण गच्छत,गत्वा च, जयत = प्रतिभटान् विनाशयत, इन्द्रः = शचीपतिः, वः = युष्माकं, शर्म = कल्याणं, यच्छतु = प्रददातु, किञ्च वः = भवताम्, बाहवः = भुजाः, उग्राः = प्रवृद्धबलयुक्ताः, सन्तु = भवन्तु, तथा अनाधृष्याः = अन्यैः धर्षितुमशक्याः, यथा = यूयम्, असथ = भविष्यथ, तथा वो बाहवः उग्राः सन्तु ।

हिन्दी–हे योधा मनुष्यो ! शत्रुसेनाओं में पहुँचकर विजय प्राप्त करो, आपको विजयश्री प्राप्त होगी। देवराज इन्द्र विजय से प्राप्त सुख तुमको प्रदान करें। तुम्हारी हृष्ट-पुष्ट भुजाएँ तेज शस्त्रों से युक्त हों, जिससे तुम्हारा कहीं तिरस्कार न हो सके ॥१४॥

विनियोगः–ॐ असौ या इत्यस्य अप्रतिरथ ऋषिर्निच्यृदार्षी त्रिष्टुप् छन्दः, मरुतो देवता सेनोत्तेजने विनियोगः।

असौयासेनामरुतःपरेषामभ्यैतिनऽओजसास्पर्द्धमाना ॥
ताङ्गूहततमसापव्रतेनयथामीऽअन्न्योऽअन्न्यन्नजानन् ॥१५॥

भाष्यम्–मरुत: = एतन्नामका देवा:, असौ या सेना = वाहिनी, न: = अस्मान्, ओजसा = बलेन, स्पर्द्धमाना = स्पर्धां कुर्वाणा, परेषां = रिपूणाम्, अभ्येति = सम्मुखम्प्राप्नोति, ताम् = अनीकिनीम्, अपव्रतेन = अपगतकर्मणा, तमसा = अन्धकारेण, तथा गूहत = आच्छादय, यथा = येन, अमी = युद्धकर्तार:, अन्य: अन्यम् = परस्परं, न जानन् = न जानीयुरित्याशय:।

हिन्दी–हे मरुत्संज्ञक देवताओ ! यह जो सेना स्पर्धावश हमारे सामने उपस्थित है, उस सेना को कर्मरहित अन्धकार से इस प्रकार ढँक दो जिससे वे आपस में ही एक-दूसरे पर प्रहार कर नष्ट हो जाय ॥१५॥

विनियोग:–ॐ यत्रेत्यस्य अप्रतिरथ ऋषि:, पङ्क्तिश्छन्द:, ब्रह्मणस्पति-रदितिश्च देवते पाठे (प्रार्थने) विनियोग:।

यत्रबाणाः सम्पतन्ति कुमाराविशिखाऽइव ॥
तन्नऽइन्द्रोबृहस्प्पतिरदितिःशर्म्मयच्छतुव्विश्श्वाहाशर्म्मयच्छतु ॥१६॥

भाष्यम्–यत्र = सङ्ग्रामे, विशिखा: = मुण्डितशिरस्का:, कुमारा: = बालका:, इव बाणा: = शरा:, सम्पतन्ति = सम्यक्तया पतन्ति, तत् = तत्र, इन्द्र: = शचीपति:, बृहस्पति: = बृहतां पति:, अदिति: = देवतानां जननी, शर्म = सुखं, न: = अस्माकं, यच्छतु = ददातु, विश्वाहा = सर्वदा, शर्म = सुखं, यच्छतु = ददातु ।

हिन्दी–जिस युद्धभूमि में वीरों के द्वारा छोड़े गये बाण छोटे बालकों की भाँति इधर-उधर गिरते हैं, उस युद्ध में बृहस्पति देवता, देवमाता तथा इन्द्र हमको कल्याण प्रदान करे । वह सभी शत्रुओं को मारने वाला कल्याण प्रदान करे ।

विनियोग:–ॐ मर्माणीत्यस्य अप्रतिरथ ऋषि:, त्रिष्टुप् छन्द:, सोमवरुणौ देवते कवचप्रयच्छने विनियोग:।

मर्म्माणितेव्वर्म्मणाच्छादयामिसोमस्त्वाराजामृतेनानुवस्ताम्॥
उरोर्व्वरीयोव्वरुणस्तेकृणोतुजयन्तन्त्वानुदेवामदन्तु ॥१७॥

इति रुद्रे तृतीयोऽध्याय: ।

भाष्यम्–ते = त्वदीयानि, मर्माणि = मृत्युस्थानानि, वर्म्मणा = कवचेन, छादयामि = आच्छादनं करोमि, सोमः राजा = सोमोराजा, त्वा = त्वाम्, अनु = छादनानन्तरम्, अमृतेन = अमृतरूपद्रव्येण, वस्ताम् = आच्छादयतु, वरुणः = जलाधिष्ठातृदेवोऽपि, ते = तव, वर्म = कवचम्, उरोर्वरीयः = सर्वोत्कृष्टं, कृणोतु = करोतु, जयन्तं = जयशालिनं, त्वा = त्वां, देवाः = सुराः, अनुमदन्तु = मुदमनुभवन्तु ।

हिन्दी–मैं कवच से आपके मर्मस्थानों को आच्छादित करता हूँ। राजा सोम आपको अमृत से आच्छादित करे, वरुणदेव आपके कवच को श्रेष्ठ बनाये और आपको विजययुक्त देखकर देवता प्रसन्न हों ॥१७॥

इति नैनीतालमण्डलाभिजन-श्रौतस्मार्तधर्मधुरन्धर**पण्डिततारादत्तात्मज-ब्रह्मानन्दत्रिपाठि**कृत-श्रीरुद्राष्टाध्याय्यां संस्कृतभाष्य-हिन्दीटीकाभ्यां संवलितः तृतीयोऽध्यायः ॥३॥

अथ चतुर्थोऽध्यायः

(मैत्रसूक्तम्)

विनियोगः—ॐ विभ्राडित्यस्य विभ्राड् ऋषिः, जगती छन्दः, सूर्यो देवता सौर्यपुरोरुकमन्त्रपाठे विनियोगः।

हरिः ॐ ॥ व्विभ्भ्राड्बृहत्पिबतुसोम्म्यम्मद्ध्वायुर्द्दधद्यज्ञपतावविहुतम्॥ व्वातजूतोयोऽअभिरक्षतित्त्मनाप्प्रजाःपुपोष पुरुधाव्विराजति ॥१॥

भाष्यम्—विभ्राट् = सूर्यः, बृहत् = महत्, सोम्यं = सोममयम्, मधु पिबतु = मधुपानं करोतु, यज्ञपतौ = यजमाने, अविह्रुतम् = अकुटिलम्, आयुः = आयुष्यं, दधत् = स्थापयत्, यः = सूर्यः, वातजूतः = पवनेन प्रेर्यमाणः सन्, त्मना = आत्मना, स्वयमेव, अभिरक्षति = पालयति, सः = सूर्यः, प्रजाः = प्राणीन्, पुपोष = पोषयति, पुरुधा = बहुधा, विराजति = विभ्राजते।

हिन्दी—हे सूर्यदेव ! स्वादपूर्ण सोमरस का पान कर यजमान को दीर्घायुष्य प्रदान कीजिए। जो सूर्य वायु से प्रेरित होकर प्रजा का पालन-पोषण करता है, वह अनेक प्रकार से विराजमान है। वह सूर्य आज इस सोमरस का पान कर यजमान के आयु की वृद्धि करे ॥१॥

विनियोगः—ॐ उदुत्यमित्यस्य प्रष्कण्व ऋषिः, भुरिगार्षी छन्दः, सूर्यो देवता आज्येन शालाद्वार्येऽग्नौ हवने विनियोगः।

उदुत्त्यञ्जातवेदसन्देवंव्वहन्तिकेतवः ॥
दृशे व्विश्श्वाय सूर्य्यम् ॥२॥

भाष्यम्—केतवः = सूर्यरश्मयः, जातवेदसम् = अग्नितेजोमयं, त्यम् = प्रसिद्धं तम्, सूर्य्यं देवं = द्योतमानं सूर्यं, विश्वाय = विश्वस्य, दृशे = दर्शनाय, उद्वहन्ति = ऊर्ध्वं वहन्ति।

हिन्दी–इस जातवेदस् सूर्यदेवता को ब्रह्मज्योति ऊर्ध्वभाग में निरन्तर वहन करती है। जिसने सूर्य को प्रकाशित किया है, उस परमात्मा की विद्वान् पुरुष उपासना करता है ॥२॥

विनियोगः–ॐ येनेत्यस्य प्रष्कण्व ऋषिः, गायत्री छन्दः, सूर्यो देवता पाठे (हवने) विनियोगः।

येनापावकचक्षसाभुरण्यन्तञ्जनाँ२॥ऽअनु ॥
त्वं व्वरुण पश्श्यसि ॥३॥

भाष्यम्–पावक = शोधक, वरुण = वरुणदेव, त्वं येन चक्षसा = दर्शनेन, जनान् = प्राणिनः, भुरण्यन्तं = धारयन्तम्, अनुपश्यसि = अनुक्रमेण प्रकाशयसि, तेन ज्ञानेन अस्मानपि पश्य।

हिन्दी–सबको पवित्र करनेवाले वरुण(जल)देव ! आप सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को अपनी जिस प्रकाश रूप दृष्टि से देखते हैं, उसी दृष्टि से हम आत्मीय जनों को भी देखिए ॥३॥

विनियोगः–ॐ दैव्यावित्यस्य प्रष्कण्व ऋषिः, गायत्री छन्दः, दैव्यावध्वर्यू देवते आज्येन हवने विनियोगः।

दैव्व्यावद्ध्वर्य्यूऽआगतधरथेनसूर्य्यत्त्वचा ॥ मद्ध्वायज्ञधसमञ्जाथे ॥
तम्प्रत्क्रथाऽयंव्वेनश्श्चित्रन्देवानाम् ॥४॥

भाष्यम्–दैव्यौ = देवसम्बन्धिनौ, अध्वर्यू = हे अश्विनौ ! युवाम्, सूर्यत्वचा = सूर्यतुल्यकान्तिमता, रथेन = स्यन्दनेन, आगतम् = आगच्छतम् अत्रागत्य च, मध्वा = मधुरस्वादयुक्तेन हविषा, यज्ञम् = अस्मद् अध्वरं, समञ्जाथे = संरक्षयतम्।

हिन्दी–हे अश्विनीकुमारो ! आप सूर्य के समान प्रकाशयुक्त रथ से आइए, स्वाद युक्त हवि द्वारा यज्ञ को सींचकर हवि की वृद्धि कीजिए।

विनियोगः–ॐ तम्प्रत्क्रथा इत्यस्य अवत्सार ऋषिः, निच्यृदार्षी जगती छन्दः, विश्वेदेवा देवता शुक्रग्रहग्रहणे विनियोगः।

तम्प्रत्क्रथापूर्व्वथाव्विश्श्वथेमथाज्ज्येष्ठतातिम्बर्हिषदंस्व्वर्व्विदम् ॥
प्रतीचीनंव्वृजनन्दोहसेधुनिमाशुञ्जयन्तमनुयासुवर्द्धसे ॥५॥

भाष्यम्–प्रत्नथा: = पुरातना: यजमाना: इव, पूर्वथा: = पूर्वजा:, विश्वथा = विश्वस्मिन् सर्वे प्राणिन: यथा, इमथा: = सम्प्रतिवर्तमाना:, यजमाना यथा देवेन्द्रस्य स्तवनेन स्वर्गप्राप्तिरूपं फलं लभन्ते तद्वत् हे सर्वान्तर्यामिन्! ज्येष्ठतातिम् = प्रशंसार्हम्, बर्हिषदम् = बर्हिषि विराजमानं, स्वर्विदं = सर्वज्ञम्, प्रतीचीनम् = आत्मन: सम्मुखं, वृजनम् = बलसंयुतम्, आशुं = शीघ्रगामिनं, जयन्तं = शत्रून् पराजयन्तं, धुनिं = शत्रूणां कम्पयितारम्, इन्द्रं = स्तुत्या, दोहसे = पूरयसि, यासु = स्तुतिषु, वर्द्धसे = वर्द्धयसि।

हिन्दी–हे इन्द्र! जैसे प्राचीन भृगु आदि ऋषियों ने, पूर्ववर्ती पितर आदि ने, अतीत स्थित यजमानों ने तथा इस समय के यजमानों ने तुम्हारी स्तुति की है उसी प्रकार हम करते हैं। जो तुम सर्वश्रेष्ठ यज्ञ के समीप में स्थित यजमान के देने योग्य स्वर्ग को जानते हो ॥५॥

विनियोग:–ॐ अयंव्वेन इत्यस्य कश्यप ऋषि:, निच्यृदार्षीत्रिष्टुप् छन्द:, सोमो देवता मन्थीग्रहणे विनियोग:।

अयंव्वेनश्चोदयत्पृश्निगर्ब्भाज्ज्योतिर्ज्जरायूरजसोव्विमानें ॥
इममपाठंसङ्गमे सूर्य्यस्य शिशुन्नविप्प्रामतिभीरिहन्ति ॥६॥

भाष्यम्–ज्योतिर्जरायु:—ज्योति: = प्रकाशलक्षणं, जरायु: = वेष्टनं यस्य स:, अयं वेन: = कान्तश्चन्द्र:, रजस: = उदकस्य, विमाने = रचनाकाले, पृश्निगर्भा: = द्युलोकस्था:, अप: = जलानि, चोदयत् = प्रेरयति, विप्रा: = विद्वांस: ब्राह्मणा:, इमं सोमं = सोमाख्यं रसम्, अपां = जलानां, सूर्यस्य = देवस्य, सङ्गमे सति, शिशुं न = बालकमिव, मतिभि: = वाग्भि:, रिहन्ति = स्तुवन्ति।

हिन्दी–यह तेजस्वी चन्द्रदेव जलवर्षण के लिए सूर्य और द्युलोक के सम्पूर्ण रस को सूर्य की किरणों से खींचकर बरसाते हैं। इस मेघरूप गर्भ के पिता सूर्य और माता द्युलोक हैं और ज्योतिर्जरायु वृष्टि को प्रेरित करते हैं, अत: विद्वान् लोग इनको सूर्य का पुत्र मानकर इनकी स्तुति करते हैं ॥६॥

विनियोग:–ॐ चित्रमित्यस्य कुत्स ऋषि:, भुरिगार्षीत्रिष्टुप् छन्द:, सूर्यो देवता शालाद्वार्येऽग्नौ हवने विनियोग:।

चित्रन्देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्म्मित्रस्य व्वरुणस्याग्ग्नेः ॥
आप्प्राद्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षठंसूर्य्यऽआत्त्माजगतस्तस्थुषश्च ॥७॥

भाष्यम्–देवानां = दीव्यत्स्वभावानाम्, अनीकं = तेजःसमूहात्मकं, चित्रम् = आश्चर्यप्रदम्, मित्रस्य वरुणस्य अग्नेः = एतत् त्रयाणां देवानां, चक्षुः = जगच्चक्षुः सूर्यः, उदगात् = उदयं गतः, तदनन्तरञ्च, द्यावापृथिवी = स्वर्गम्, पृथिवीञ्च, अन्तरिक्षम् = आकाशम्, आप्राः = आपूरितवान्, सूर्यः = सूर्यदेवः, जगतः = चरात्मकस्य संसारस्य, तस्थुषः = स्थावरात्मकस्य, आत्मा = स्वरूपात्मकः, अयमेव सूर्य इत्याशयः ।

हिन्दी–यह प्रकाशात्मक देव सूर्य प्रतिदिन उदय होता है। इनका प्रकाश तीनों लोकों में फैल रहा है। यह स्थावर तथा जंगम का प्रकाशक सूर्य नाम से प्रसिद्ध है। इस देवता के निमित्त दिया हुआ हवि सुन्दर प्रकाश से ग्रहण किया जाय ॥७॥

विनियोगः–ॐ आनऽइडाभिरित्यस्य अगस्त्य ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, सविता देवता हवने विनियोगः।

आनुऽइडाभिर्व्विदथेसुशुस्तिव्विश्श्वानरःसवितादेवऽएतु ॥
अपियथांयुवानोमत्सथानोव्विश्श्वञ्जगदभिपित्वेमनीषा ॥८॥

भाष्यम्–विश्वानरः = विश्ववर्तिजनरक्षकः, सवितादेवः = सूर्यदेवः, नः = अस्माकं, विदथे = यज्ञे, सुशस्तिभिः = प्रशंसाभिः, इडाभिः = यज्ञकारणभूताभिः, तथा आ एतु = आयातु, युवानः = वृद्धत्वरहिताः देवाः, अपि निश्चितम्, अभिपित्वे = आगमनसमये, यथा = येन हेतुना, मत्सथ = तृप्यथ, तथा नः = अस्माकं, विश्वं = सर्वं, जगत् = पतिपुत्रस्त्रीपशुप्रभृतिरूपम्, मनीषा = मनीषया तर्पयथ ।

हिन्दी–प्राणियों का हितकारी सर्वप्रेरक देव हमारे यज्ञगृह में स्तुतियों के साथ प्रवेश करें। युवावस्था युक्त देवताओ ! आप स्वयं तृप्त होकर हमारे पुत्र, पशु आदि से युक्त परिवार को तृप्त करें ॥८॥

विनियोगः–ॐ यदद्येत्यस्य श्रुतकक्षसुकक्षौ ऋषी, गायत्री छन्दः, सूर्यो देवता हवने विनियोगः।

यदुद्यकच्चंव्वृत्रहन्नुदगाऽअभिसूर्य्य॥ सर्व्वन्तदिन्द्रतेव्वुशे ॥९॥

भाष्यम्–वृत्रहन् = मेघविनाशक, सूर्य = सूर्यात्मकेन्द्रदेव, अद्य = अस्मिन् दिने, यत् कच्च = यत् किमपि पदार्थजातम्, अभि = सम्मुखीकृत्य, उदगाः = उत्पन्नोऽसि,

इन्द्र = सर्वैश्वर्यसम्पन्न, तत् = सर्वं स्थावरजङ्गमात्मकं जगत्, ते = तव, वशे = अधीनं भवति ।

हिन्दी–अन्धकारविनाशक सूर्यदेव ! आप जब जिस लोक में उदय होते हैं उस समय वह लोक आपके वश में होता है । अत: त्रैलोक्य आपके अधिकार में है ॥९॥

विनियोग:–ॐ तरणिरित्यस्य प्रष्कण्व ऋषि:, गायत्री छन्द:, सूर्यो देवता हवने विनियोग:।

तरणिर्व्विश्श्वदर्शतोज्ज्योतिष्कृदसिसूर्य्य ॥
व्विश्श्वमाभासि रोचनम् ॥१०॥

भाष्यम्–सूर्य = देव, त्वं, तरणि: = महतोऽध्वनो गन्तासि, यथा— "योजनानां सहस्रे द्वे द्वेशते द्वे च योजने । एकेन निमिषार्द्धेन क्रममाण नमोऽस्तु ते"॥ किं वा उपासकान् रोगात्तारयसि । यथा— "आरोग्यं भास्करादिच्छेत्"। विश्वदर्शत: = सर्वप्राणिदर्शनीय:, ज्योतिष्कृत् = प्रकाशस्य कर्ता, असि = वर्तसे, विश्वं = व्याप्तं, रोचनम् = प्रकाशयुक्तमन्तरिक्षं समन्तात्, आभासि = प्रकाशयसि, यथा श्रुति:— "तमेव भान्तमनुभाति सर्वम्"। इति ।

हिन्दी–हे सूर्यदेव ! आप अत्यन्त शीघ्रगामी हैं, रोगों को दूर करनेवाले एवं सबके दर्शनीय हैं, अथवा चन्द्रमा, नक्षत्र आदि को प्रकाशित करनेवाले हैं । आप ही संसार-सागर से प्राणियों को पार लगाते हैं । अतएव आप साक्षात् करने योग्य (दर्शनीय) हैं ॥१०॥

विनियोग:–ॐ तत्सूर्य्येत्यस्य कुत्स ऋषि:, त्रिष्टुप् छन्द:, सूर्यो देवता हवने विनियोग:।

तत्सूर्य्यस्यदेवत्वन्तन्महित्वम्मद्ध्याकर्त्तोर्व्विततꣳसञ्जभार ॥
यदेदयुक्तहरित꞉सधस्थादाद्द्रात्रीव्वासस्तनुतेसिमस्म्मै ॥११॥

भाष्यम्–सूर्यस्य = आदित्यस्य, तत् देवत्वम् = ईश्वरत्वम्, महित्वम् = माहात्म्यं, यत् कर्तो: = कर्मणो:, मध्या = मध्ये, विततं = विकीर्णं किरणसमूहं, सञ्जभार = प्रत्यहम् उपसंहरति, यदा = यस्मिन् काले, हरित: = किरणान्, हरिद्वर्णानश्वान्वा, सधस्थात् = पार्थिवलोकात् आदाय, ईत् = एव, अयुक्त = संयुक्तान् करोति, आत् = तदनन्तरमेव, रात्री = निशा, वास: = तम:, सिमस्मै = सर्वस्मै, तनुते = विस्तारयति ।

हिन्दी–सूर्यदेव का वही देवत्व तथा वही महत्व है जिससे वह सम्पूर्ण जगत् के मध्य में स्थित समस्त ग्रहमण्डल को प्रकाशित किये हैं। जब हरे वर्ण की किरणों को सूर्य अपने से युक्त करता है तब रात होती है ॥११॥

विनियोगः–ॐ तन्मित्रस्येत्यस्य कुत्स ऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः, सूर्यो देवता हवने विनियोगः।

तन्मित्रस्यवरुणस्याभिचक्षेसूर्य्योरूपङ्कृणुतेद्योरुपस्थे ॥
अनन्तमन्यद्रुशदस्यपाजःकृष्णमन्यद्धरितःसम्भरन्ति ॥१२॥

भाष्यम्–सूर्यः = आदित्यः, द्यो: = द्युलोकस्य, उपस्थे = सङ्गमे, मित्रस्य = मित्रदेवस्य, वरुणस्य = वरुणदेवस्य, तत् रूपं = तत्स्वरूपं, कृणुते = कुरुते, येन = रूपेण जनान्, अभिचक्षे = पश्यति, अस्य = सूर्यस्य, अन्यत् = एकम्, पाजः = रूपम्, अनन्तं = कालतः, देशतः च परिच्छेद्यम्, रुशत् = शुक्लम्, अन्यत् = कृष्णम्, इत्युभयात्मकं रूपं, हरितः = दिशः, इन्द्रियकर्माणि वा, सम्भरन्ति = धारयन्ति।

हिन्दी–सूर्य का देशकाल से अपरिच्छेद्य रूप शुक्ल है, दूसरा रूप कृष्ण है, इसको दिशाएँ तथा इन्द्रियाँ धारण करती हैं। इस प्रकार शुद्धचैतन्य परब्रह्म सगुण और निर्गुण रूप से उभयात्मक है ॥१२॥

विनियोगः–ॐ बण्महानित्यस्य जमदग्निर्ऋषिः, बृहती छन्दः, सूर्यो देवता हवने विनियोगः।

बण्णमहाँ२॥ऽअसिसूर्य्यबडादित्यमहाँ२॥ऽअसि ॥
महस्तेसतोमहिमापनस्यतेऽद्धादेवमहाँ२॥ऽअसि ॥१३॥

भाष्यम्–सूर्यदेव, त्वं बट् = सत्यम्, महान् = तेजसा श्रेष्ठः, असि = महानसि, आदित्य = आदित्याभिधदेव, बट् = सत्यम्, महान् असि = बलादप्यधिकोऽसि, महः = महतः, सतः ते = तव, महिमा = महद्भाग्यम्, पनस्यते = सर्वैः प्राणिभिः स्तूयते, अतः देव = दानादिशक्तिसंयुत, अद्धा = यथार्थतः, त्वं महान् असि = वीर्यतोऽप्यधिकोऽसि।

हिन्दी–हे सूर्यदेव ! आप सबसे अधिक हैं और सबसे बड़े होने के कारण ही आपकी महान् महिमा है। अतएव लोकों में आपकी स्तुति की जाती है। सचमुच आप सबसे श्रेष्ठ हैं ॥१३॥

विनियोगः–ॐ बट्सूर्य्येत्यस्य जमदग्निर्ऋषिः, सतो बृहती छन्दः, सूर्यो देवता मन्थीग्रहणे विनियोगः।

बट्सूर्य्यश्श्रवसामहाँ२॥ऽअसिसत्रादेवमहाँ२॥ऽअसि॥
मह्नादेवानामसुर्य्यः पुरोहितोव्विभुज्ज्योतिरदाब्भ्यम्॥१४॥

भाष्यम्–सूर्य = सूर्यदेव, बट् = सत्यं, श्रवसा = श्रवणीयेन बलेन, महान् असि = सर्वश्रेष्ठः असि, देव = हे प्रकाशयुक्त ! सत्रा = सत्यम्, महान् असि = अधिको वर्तसे, मह्ना = निजमहत्त्वेन, देवानां = सुराणाम्मध्ये, असुर्य्यः = असुर-विनाशकः, पुरोहितः = प्रथमपूज्यः, विभुः = व्यापकः, ते = तव, ज्योतिः = प्रकाशः, अदाभ्यं = सर्वैरप्यहिंस्यम्।

हिन्दी–हे सूर्य ! आप सत्य ही धन और अन्न से महान् हैं, आप महत्त्व से देवताओं के बीच में महान् हैं, आप असुरों के विनाशक हैं। आप देवताओं के मध्य में सर्वप्रथम पूज्य हैं। आपके तेज का कोई तिरस्कार नहीं कर सकता॥१४॥

विनियोगः–ॐ श्रायन्त इत्यस्य नृमेध ऋषिः, बृहती छन्दः, सूर्यो देवता मन्थीग्रहणे विनियोगः।

श्रायन्तऽइव सूर्य्यंव्विश्श्वेदिन्द्रस्य भक्षत॥
व्वसूनिजातेजनमानऽओजसाप्प्रतिभागन्नदीधिम॥१५॥

भाष्यम्–सूर्य्यं = सूर्य्यदेवं, श्रायन्त इव = आश्रिताः सन्तः सूर्यं सेवन्ते तथा, इन्द्रस्य = शचीपतेरनुज्ञातानि, विश्वेत् = सम्पूर्णानि धनानि, भक्षत = उपभोगं कुरुत, वसूनि = द्रविणानि, जनमाने = जनिष्यमाणे भविष्यत्काले, ओजसा = बलेन, प्रतिभागं = विभागं कृत्वा, न = इव, दीधिमः = स्थापयामः।

हिन्दी–सूर्य की किरणें इन्द्र की धन-सम्पत्ति का सेवन करती हैं। हम धनों को पुत्रादि के उत्पन्न होने में अपने भाग के समान तेज के सहित स्थापन करते हैं॥१५॥

विनियोगः–ॐ अद्येत्यस्य कुत्स ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, देवा देवता दध्नादित्यग्रहश्रयणे विनियोगः।

अद्यादेवाऽउदितासूर्य्यस्यनिरंहसः पिपृतानिरवद्यात्॥
तन्नोमित्रोव्वरुणोमामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवीऽउतद्यौः॥१६॥

भाष्यम्–देवा: = द्योतमाना:, अद्या = अस्मिन्समये, सूर्यस्य = भास्करदेवस्य, उदिता: = उदयकालसम्बन्धिन:, अंहस: = पापात्, निष्पिपृत: = पृथक् कुरुत, अवद्यात् = पापात् त्रायत, न: = अस्मदीयं, तत् मित्र: = सूर्य:, वरुण: = जलाधिप:, अनिष्टनिवारक:, अदिति: = देवतानां जननी, सिन्धु: = उदकाधिपति:, पृथिवी = भूलोकस्य स्वामिनी, द्यौ: = द्युलोकस्वामी, उत = समूहे, मा = माम्, महन्ताम् = पूजयन्तु सत्कुर्वन्तु इति ।

हिन्दी–सूर्यकिरणों से प्रकाशित देवताओ ! सूर्य का उदय आज अपयश तथा पापों से हमारी रक्षा करे । मित्र, वरुण, देवमाता, सिन्धुनदी, पृथिवी और स्वर्ग हमारी बातों का समर्थन करें ।।१७।।

विनियोग:–ॐ आकृष्णेन इत्यस्य हिरण्यस्तूप ऋषि:, त्रिष्टुप् छन्द:, सविता देवता सावित्रग्रहग्रहणे विनियोग:।

आकृष्ष्णेनरजसावर्त्तमानोनिवेशयन्नमृतम्मर्त्त्यञ्च ।।
हिरण्ण्ययेनसवितारथेनादेवोयातिभुवनानिपश्श्यन् ।।१७।।

इति रुद्रे चतुर्थोऽध्याय: ।।

भाष्यम्–सविता = देवानां प्रेरयिता, देव: = दीप्तियुक्त:, कृष्णेन = कृष्णवर्णेन, रजसा = अन्तरिक्षलोकेन, आवर्तमान: = परागच्छन् सन्, अमृतं = देवं, मर्त्यम् = मानवं च, निवेशयन् = स्वे स्वे कर्मणि प्रवर्तयन्, भुवनानि = सर्वलोकान्, अपश्यन् = प्रकाशयुक्तान् कुर्वन् सन्, हिरण्ययेन = सुवर्णमयेन, रथेन = स्यन्दनेन, आयाति = पूर्वां दिशमलङ्करोति ।

हिन्दी–देवता आदि समस्त प्राणिवर्ग को अपने-अपने कार्य में प्रेरित करने वाले अत्यन्त प्रकाशयुक्त सूर्यदेव कृष्णवर्ण के अन्तरिक्ष लोक से लौटते हुए सुवर्णमय रथ में आरूढ होकर सभी लोकों का निरीक्षण कर पूर्वदिशा में उदय हो रहे हैं ।।१७।।

इति नैनीतालमण्डलाभिजनश्रौतस्मार्तधर्मधुरन्धर**पण्डिततारादत्तात्मज**-**श्रीब्रह्मानन्दत्रिपाठि**कृत-श्रीरुद्राष्टाध्याय्यां संस्कृतभाष्य-हिन्दीटीकाभ्यां संवलित: चतुर्थोऽध्याय: ।।४।।

अथ पञ्चमोऽध्यायः

(शतरुद्रियम्)

विनियोगः–ॐ नमस्त इत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः, गायत्री छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

हरिः ॐ ॥ नमस्तेरुद्रमन्न्यवऽउतोतऽइषवेनमः ॥

बाहुब्भ्यामुत ते नमः ॥१॥

भाष्यम्–रुद्र ! = परमेश्वर ! रु दुःखं द्रावयति रुद्रः, रवणं रुत् ज्ञानं भावे क्विप् तुगागमश्च । यद्वा—पापिनः दुःखभोगेन रोदयतीति रुद्रः, ते = तव, मन्यवे = क्रोधाय, नमः = नमस्कारः अस्तु, उत = अपि च, ते = तव, इषवे = शराय, नमः = प्रणामः अस्तु, उत = अपि च, ते = तव, बाहुभ्याम् = भुजाभ्यां, नमः = नतिरस्तु ।

हिन्दी–दुःखविनाशक, ज्ञानप्रदायक, पापात्माओं को दण्ड देने वाले रुद्रदेव ! आपके क्रोध के निमित्त, बाणों के निमित्त और भुजाओं के लिए नमस्कार है। आपके क्रोधपूर्ण एवं बाणयुक्त हाथ शत्रुविनाशकारक हों, जिससे हमको शान्ति मिले—यही प्रार्थना है ॥१॥

विनियोगः–ॐ यात इत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः, आर्षी स्वराडनुष्टुप् छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

या ते रुद्र शिवातनूरघोरा पापकाशिनी ॥

तयानस्तन्न्वाशन्तमयागिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥२॥

भाष्यम्- रुद्र ! = देव, या ते = तव, अघोरा = सौम्या, अपापकाशिनी = पुण्यफलप्रदायिनी, शिवा = मङ्गलरूपा, तनूः = शरीरम् अस्ति, गिरिशन्त = कैलासवासी, तयाशन्तमया = सुखतमया, तन्वा = शरीरेण, नः = अस्मान्, अभिचाकशीहि = अभिपश्य ।

हिन्दी–कैलास पर्वत पर स्थित होकर प्राणियों को सुख देने वाले हे रुद्र ! आपका शान्तरूप सौम्य पुण्यफल का देनेवाला ही यह शरीर है, उस सुखपूर्ण शरीर से हमारे ऊपर दृष्टिपात करें ॥२॥

विनियोगः–ॐ यामिषुमित्यस्य परमेष्ठी ऋषिः, विराडार्ष्यनुष्टुप् छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

यामिषुङ्गिरिशन्तहस्तेबिभर्ष्यस्तवे ॥
शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरुमाहिꣳसीःपुरुषञ्जगत् ॥३॥

भाष्यम्–गिरिशन्त = देव, याम् इषुम् = बाणम्, अस्तवे = शत्रून् विनाशयितुं, हस्ते = करे, बिभर्षि = धारयसि, गिरित्र = कैलासपर्वतरक्षक, ताम् = इषुं = बाणं, शिवां = कल्याणकारिणीं, कुरु = विधेहि, किञ्च पुरुषम् = पुत्रपौत्रादिकरूपं, जगत् = जङ्गमं, गवाश्वादिकम्, मा हिंसीः = मा विनाशय, अस्माकं रक्षां कुर्विति ।

हिन्दी–हे जगत् का कल्याण करनेवाले कैलासवासी देव ! आप जिस बाण से शत्रुओं का विनाश और जगत् का प्रलय करते हैं, उस बाण से हमारा कल्याण करें, हमारे पुत्र-पशु आदि की तथा जगत् की रक्षा करें ॥३॥

विनियोगः–ॐ शिवेन इत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः, निच्यृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

शिवेनवचसात्त्वागिरिशाच्छावदामसि ॥
यथानःसर्व्वमिज्जगदयक्ष्मꣳसुमनाऽअसत् ॥४॥

भाष्यम्–गिरिश = कैलासवासिन्, शिवेन = कल्याणकारकेण, वचसा = वाण्या, त्वा = त्वाम्, अच्छ = प्राप्तुं, वदामसि = वदामः, स्तुतिं कुर्म इत्यर्थः, नः = अस्माकं, सर्वम् = अखिलं, जगत् = चराचरात्मकं जगत्, यथा = येन प्रकारेण, अयक्ष्मं = नीरोगं, सुमनः = प्रसन्नं चेतः, असत् = भवेत्, तथा कुरु ।

हिन्दी–हे कैलासवासिन् ! कल्याणकारी स्तुतियों के द्वारा हम आपकी प्रार्थना करते हैं। हमारे पुत्र-पशु आदि जिस प्रकार स्वास्थ्ययुक्त एवं प्रसन्नचित्त हों, आप ऐसी कृपा करें ॥४॥

विनियोगः–ॐ अध्यवोचदित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः, भुरिगार्षी बृहती छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

अद्ध्यवोचदधिवक्ताप्प्रथमोदैव्व्योभिषक् ॥
अहीँश्च्चसर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वाश्चयातुधान्न्योधराचीःपरासुव ॥५॥

भाष्यम्–अधिवक्ता = वेदोपदेशमुखरः, प्रथमः = अग्रः पूज्यः, दैव्यः = देवेभ्यः हितः, भिषक् = स्मरणादेव रोगनाशकः, अध्यवोचत् = अधिकं कथयति, एष यजमानः सर्वाधिकः यज्ञकर्त्ता स्यादित्याशयः। च = तथा, सर्वान् = अखिलान्, अहीन् = सर्पादिहिंसकान्, जम्भयन् = विनाशयन्, सर्वाः = सकलाः, अधराचीः = निम्नमार्गगमनशीलाः, यातुधान्यः = राक्षसीः, च = तथा, परासुव = दूरीकुरु ।

हिन्दी–वेदों के उपदेश में तत्पर, सब देवताओं में प्रमुख, देवताओं के हितकारी, स्मरणमात्र से रोगनाशक रुद्रदेव ! आप सबको यज्ञादि शुभकर्मों के लिए प्रेरित करें। हे शिव ! आप सम्पूर्ण हिंसक (सर्प आदि) प्राणियों का तथा दुराचार आदि राक्षसी प्रवृत्तियों का विनाश करें ॥५॥

विनियोगः–ॐ असौ य इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः, विराडार्षीपङ्क्तिश्छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

असौयस्ताम्म्रोऽअरुणऽउतबब्भ्रुःसुमङ्गलः ॥
येचैनꣳरुद्द्राऽअभितोदिक्षुश्श्रिताःसहस्रशोवैषाꣳहेडऽईमहे ॥६॥

भाष्यम्–यः असौ = प्रत्यक्षः रुद्रात्मा रविः, ताम्रः = प्रातरुदयसमये रक्तवर्णः, च = तथा, अरुणः = अरुणाऽऽभः, उत = अपि, बभ्रुः = पिङ्गलवर्णः, सुमङ्गलः = सर्वकल्याणविधायकः, च = पुनः, ये सहस्रशः = दशशतसङ्ख्यात्मकाः, रुद्राः = रुद्रांशरूपाः, एनं = सूर्यम्, अभितः = समन्तात्, दिक्षु = सर्वासु आशासु, श्रिताः = आश्रिताः, एषां = रुद्राणां, हेडः = क्रोधम्, ईमहे = निवारयामः ।

हिन्दी–जो यह रुद्ररूप सूर्य उदयकाल में लाल वर्ण, अस्त समय में लाल वर्ण, मध्याह्न में पिंगल वर्णों को धारण कर मांगलिक कार्यों का विस्तार करने वाले हैं और जो हजारों किरणों से दशों दिशाओं में रुद्ररूप से प्रकाशमान हैं, इनके क्रोध को हम भक्ति द्वारा दूर करते हैं ॥६॥

विनियोगः–ॐ असौ य इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः, विराडार्षीपङ्क्तिश्छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

असौयोऽवसर्प्पतिनीलग्रीवोविलोहितः ॥
उतैनङ्गोपाऽअदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्य्यःसदृष्टोमृडयातिनः ॥७॥

भाष्यम्–यः असौ = प्रत्यक्षः सूर्यरूपः, नीलग्रीवः = अस्तमनसमये नीलकण्ठ इव दृश्यते, उत = अथवा, विलोहितः = रक्तवर्णः, अवसर्पति = प्रतिदिनं गच्छति, एनं = रुद्रं, गोपाः = गोरक्षकाः, अदृशन् = पश्यन्ति, उदहार्यः = वारिहारिण्यः स्त्रियः अपि, अदृशन् = पश्यन्ति, सः = शिवः, दृष्टः = अवलोकितः सन्, नः = अस्मान्, मृडयाति = सुखयतु ।

हिन्दी–यह सूर्यरूपी शिव अस्त के समय में नीलकण्ठ के सदृश तथा लाल वर्ण वाला उदय-अस्त समय में विशेष रक्तवर्ण धारण कर गमन करता है। इसका दर्शन गोपाल तथा जल ले जाने वाली स्त्रियाँ भी करती हैं। इस प्रकार ये रुद्रदेव अपना दर्शन देकर हमको सुखी करें ॥७॥

विनियोगः–ॐ नमोस्त्वित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः, निच्यृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दः. रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

नमोस्तुनीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे ॥
अथोयेऽअस्यसत्त्वानोहन्तेभ्योऽकरन्नमः ॥८॥

भाष्यम्–नीलग्रीवाय = शितिकण्ठाय, सहस्राक्षाय = इन्द्रस्वरूपाय, बहुरश्मिरूपाय वा, मीढुषे = वर्षणशीलाय, नमः अस्तु = नमस्कारः भवतु, अथो = अपि, अस्य = शिवस्य, ये सत्त्वानः = अनुचरविशेषाः सन्ति, तेभ्यः = तेषां कृते, अहं = भक्तः, नमः अकरं = नमस्कारं करोमि ।

हिन्दी–नीलकण्ठ, सहस्रनेत्र (इन्द्रस्वरूप) तथा वृष्टि करनेवाले रुद्र के लिए नमस्कार हो। इस रुद्रदेवता के अनुचर-विशेष मेषादि राशियों के लिए नमस्कार हो ॥८॥

विनियोगः–ॐ प्रमुञ्चेत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः, भुरिगार्ष्युष्णिक् छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

प्रमुञ्चधन्न्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्ज्याम् ॥
याश्चतेहस्तऽइषवःपराताभगवोवप ॥९॥

भाष्यम्–भगवः = हे भगवन् ! धन्वनः = धनुषः, उभयोः = द्वयोः, आर्त्न्योः = कोट्योः, ज्याम् = मौर्वीं, त्वम् =भगवान्, प्रमुञ्च = दूरीकुरु, च = तथा, याः = पूर्वोक्ताः, ते = तव, हस्ते = करे, इषवः = बाणाः सन्ति, ताः = शरान्, परावप = दूरे क्षिप ।

हिन्दी–हे भगवन् ! आप दोनों कोटियों में स्थित धनुष की डोर को उतार दीजिए और जो आपके हाथ में बाण हैं इनको भी दूर कर हमको अपने सौम्यवेश के दर्शन कराइए ॥९॥

विनियोगः–ॐ विज्यन्धनुरित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः, भुरिगार्ष्यनुष्टुप् छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

विज्ज्यन्धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२ऽउत ॥
अनेशन्नस्यया ऽइषवऽआभुरस्यनिषङ्गधिः ॥१०॥

भाष्यम्–कपर्दिनः = जटाजूटवतो रुद्रस्य, धनुः = शरासनं, विज्यं = ज्यारहितम् अस्तु, उत = तथा, बाणवान् इषुधिः = शरयुक्तं धनुः, विशल्यः = विफलोऽस्तु, अस्य = रुद्रस्य,याः इषवः = बाणाः, ताः, अनेशन् = विनाशं यान्तु, अस्य = रुद्रस्य, निषङ्गधिः = कोशः, सः, आभुः = खड्गरहितः अस्तु ।

हिन्दी–जटाजूटयुक्त शिव का धनुष डोरी रहित हो, तरकस बाणों से खाली हो, शिवजी के बाण लुप्त हों और म्यान तलवार से शून्य हो ॥१०॥

विनियोगः–ॐ यात इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः, निच्यृदनुष्टुप् छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

यातें । हेतिर्म्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः ॥
तयास्म्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज ॥११॥

भाष्यम्–मीढुष्टम = ववर्षुक, ते = तव, हस्ते, या हेतिः = धनूरूपम् अस्त्रम् अस्ति, ते = तव, हस्ते = करे, धनुः = शरासनं, बभूव = अस्ति, तया = धनूरूपया, अयक्ष्मया = उपद्रवरहितया, हेत्या, विश्वतः = सर्वतः, अस्मान् = नः, परिभुज = परिपालय ।

हिन्दी–हे ज्ञान की वर्षा से सींचने वाले रुद्रदेव ! आपके हाथ में जो धनुष रूपी शस्त्र है इससे निरुपद्रव हो हमारी रक्षा करें ॥११॥

विनियोगः–ॐ परीत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः, निच्यृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

परि॑ते॒धन्व॑नोहे॒तिर॒स्म्मान्वृ॑णक्तुवि॒श्श्वतः॑ ॥
अथो॒यऽइ॑षु॒धिस्तवा॒रेऽअ॒स्म्मन्निधे॑हि॒तम् ॥१२॥

भाष्यम्–ते = तव, धन्वनः = धनुः सम्बन्धि, हेतिः = आयुधं, विश्वतः = सर्वतः, अस्मान् = नः, परिवृणक्तु = सन्त्यजतु, अथो = अपि च, यः तव = त्वदीयः, इषुधिः = कोशः अस्ति, तम् अस्मत् = पार्श्वात्, आरे = विप्रकृष्टे, निधेहि = रक्ष।

हिन्दी–हे रुद्रदेव ! आपके अस्त्र-शस्त्र चारों ओर से हमसे दूर रहें, आप अपने तरकस को हमसे दूर रखें, अर्थात् हम सब प्रकार के संकटों, रोग आदि से मुक्त रहें ॥१२॥

विनियोगः–ॐ अवतत्त्येत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः, निच्यृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

अ॒व॒तत्त्य॒धनु॒ष्ट्वᳬसह॑स्त्राक्ष॒ शते॑षुधे ॥
नि॒शीर्य्य॑श॒ल्ल्याना॒म्मुखा॑शि॒वोनः॑सु॒मना॑भव ॥१३॥

भाष्यम्–सहस्राक्ष = सहस्रनेत्र ! शतेषुधे = शतमित्यस्यानेकस्योपलक्षणम्, सहस्रतूणीरयुक्त ! त्वम् = भवान्, धनुः = शरासनम्, अवतत्य = ज्यारहितं विधाय, शल्यानां = बाणानाम्, मुखाः = अग्रभागान्, निशीर्य = निष्कास्य, नः = अस्मान् प्रति, शिवः = शान्तः, सुमनाः = शोभनमनस्कः, भव।

हिन्दी–हजार नेत्र एवं हजार तरकसों वाले विराट् देव ! आप अपने धनुष की डोरी उतार दीजिए और बाणों के मुख से लोहे के भाले निकाल दीजिए, तदनन्तर स्वस्थचित्त हो हमारे ऊपर कृपा करें ॥१३॥

विनियोगः–ॐ नमस्त इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः, भुरिगार्ष्युष्णिक् छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

नम॑स्त॒ऽआयु॑धा॒यानातताय धृ॒ष्ष्णवे॑ ॥
उ॒भाब्भ्या॑मु॒त॒ते॒नमो॑बा॒हुब्भ्या॒न्तव॒धन्व॑ने ॥१४॥

भाष्यम्–ते = तव, अनातताय = शरासनेऽनारोपिताय, आयुधाय = बाणाय, नमः = नमस्कारोऽस्तु, ते = तव, धृष्णवे = शत्रून् विनाशयितुं प्रगल्भाय, धन्वने =

शरासनाय, नमः = नमस्कारः अस्तु, उत च, ते = तव, आभ्याम् = उभाभ्याम्, बाहुभ्याम् = भुजाभ्यां, नमः = नमस्कारः अस्तु ।

हिन्दी–हे रुद्रदेव ! धनुष पर चढ़ाये हुए आपके बाणों के लिए, आपकी भुजाओं तथा शत्रुनाश करने में कुशल धनुष के लिए नमस्कार है ।।१४।।

विनियोगः–ॐ मानो महान्त इत्यस्य कुत्स ऋषिः, निच्यृदार्षीजगती छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

मानोमहान्तमुतमानोऽअर्भकम्मानऽउक्षन्तमुतमानऽउक्षितम् ॥
मानोवधीःपितरम्मोतमातरम्मानःप्रियास्तन्वोरुद्ररीरिषः ॥१५॥

भाष्यम्–हे रुद्र ! = शम्भो ! नः = अस्माकम्, महान्तं = गुरुजनम्, मा वधीः = मा हिंसीः, उत = अपि, नः = अस्माकम्, अर्भकम् = बालम्, मा वधीः, नः उक्षन्तं = सिञ्चन्तं तरुणं, मा वधीः, उत नः उक्षितं = सिक्तं गर्भस्थितम्, मा वधीः, नः पितरं = जनयितारम्, मा वधीः, उत नः मातरं = जननीम्, मा वधीः, नः प्रियाः = वल्लभाः, तन्वः = पुत्रादिसन्ततयः, शरीराणि, मा रीरिषः = मा वधीः।

हिन्दी–हे रुद्रदेव ! हमारे पूज्य गुरुजनों (माता-पिता, गुरु आदि) की रक्षा कीजिए। हमारे गर्भस्थ बालकों, शिशुओं, माता, पिता, पुत्र, पौत्र आदि के शरीरों की रक्षा कीजिए ।।१५।।

विनियोगः–ॐ मानस्तोक इत्यस्य कुत्स ऋषिः, निच्यृदार्षीजगती छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

मानस्तोकेतनयेमानऽआयुषिमानोगोषुमानोऽअश्वेषुरीरिषः ॥
मानोव्वीरान्रुद्रभामिनोवधीर्हविष्मन्तःसदमित्त्वाहवामहे ॥१६॥

भाष्यम्–हे रुद्र ! = शम्भो ! नः = अस्माकं, तोके = पुत्रे, तनये = पौत्रे, मा रीरिषः = मा हिंसीः, नः आयुषि = जीवने, मा हिंसीः, नः गोषु = गवादिपशुषु, मा हिंसीः, नः अश्वेषु = घोटकेषु, मा हिंसीः, नः भामिनः = क्रोधिनः, वीरान् = शूरान्, मा वधीः = मा हिंसीः, हविष्मन्तः = हविर्युक्ताः, सदमित् = सदैव, त्वा = त्वां, हवामहे = यज्ञाय आह्वयामः ।

हिन्दी–हे सदाशिव ! आप हमारे पुत्र-पौत्रों की रक्षा करें, हमें दीर्घायु करें, हमारी गायों तथा घोड़ों की रक्षा करें, हमारे क्रोधयुक्त वीरों की रक्षा करें, हम

हविर्द्रव्य को लेकर सदा आप को बुलाते (आपका आवाहन करते) हैं। हम सर्वथा आपकी शरण में हैं ॥१६॥

विनियोगः–ॐ नम इत्यस्य कुत्स ऋषिः, निच्यृदतिधृतिश्छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

नमो॒हिर॑ण्यबाहवे। सेना॒न्ये॑दि॒शाञ्च॒पत॑ये॒नमो॒नमो॑व्वृ॒क्षेभ्यो॒हरि॑केशे-भ्यः॑पशू॒नाम्पत॑ये॒नमो॒नमः॑ शष्पि॒ञ्ज॑राय॒त्त्विषी॑मतेपथी॒नाम्पत॑ये॒नमो॒ नमो॒हरि॑केशायोपवी॒तिने॑पु॒ष्टाना॒म्पत॑येनमो॒नमो॑बभ्लु॒शाय॑ ॥१७॥

भाष्यम्–हिरण्यबाहवे = सुवर्णाभरणयुक्तभुजाय, सेनान्ये = सेनानायकाय तस्मै, नमः = नमस्कारः अस्तु, रुद्राय नमः = शिवाय नमः, विशाम्पतये = रक्षकाय, नमः = नमस्कारः, हरिकेशेभ्यः = हरितवर्णरूपेभ्यः, वृक्षेभ्यः = पादपरूपशिवेभ्यः, नमः = नमस्कारः, पशूनां = जीवानाम्, पतये = स्वामिने, नमः, त्विषीमते = कान्ति-युक्ताय, शष्पिञ्जराय = बालतृणवत्पीतवर्णाय, नमः, पथीनाम् = मार्गाणाम्, पतये नमः, हरिकेशाय = नीलवर्णकेशाय सर्वदा यूने, उपवीतिने = यज्ञोपवीतधारिणे, नमः, पुष्टानां = सद्गुणवतां पुरुषाणाम्, पतये नमः अस्तु।

हिन्दी–भुजाओं में सोने के आभूषण धारण करने वाले, सेनानायक, दिशाओं के स्वामी, समस्त जगत् के रक्षक, हरे-भरे वृक्षरूप जीवों के रक्षक, पीत वर्णवाली घास के समान कान्तिवाले, मार्गों के रक्षक, मंगलार्थ जनेऊ धारण करनेवाले, नीलवर्ण केशों वाले, बुढ़ापा रहित और सद्गुणपूर्ण पुरुषों के स्वामी रुद्र के लिए बारम्बार नमस्कार है ॥१७॥

विनियोगः–ॐ नम इत्यस्य कुत्स ऋषिः, निच्यृदष्टिश्छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

नमो॑बभ्लु॒शाय॑। व्या॒धिने॒न्ना॑ना॒म्पत॑ये॒नमो॒नमो॑भ॒वस्य॑हे॒त्यै॑जग॑ता॒म्पत॑ये॒ नमो॒नमो॑ रु॒द्राया॑तता॒यिने॒क्षेत्रा॑णा॒म्पत॑ये॒नमो॒नमः॑ सू॒ताया॒हन्त्यै॒व्वना॑-ना॒म्पत॑ये॒नमो॒नमो॒रोहि॑ताय ॥१८॥

भाष्यम्–बभ्लुशाय = कपिलवर्णवृषभारूढाय नमः, व्याधिने = शत्रुविनाश-काय, अन्नानां = धान्यानाम्, पतये = पालकाय, नमः, भवस्य = संसारस्य, हेत्यै =

शस्त्राय तदात्मकाय रुद्राय, नमः, जगतां पतये = संसाररक्षकाय, नमः, आततायिने—आततेन = धनुषा, सह एति तस्मै, नमः, क्षेत्राणां = शरीराणां, पतये = पालकाय, नमः, अहन्त्रे = रक्षकाय, सूताय = सारथिने, नमः, वनानां = काननानां, पतये नमः ।

हिन्दी–कपिलवर्ण वाले बैल पर स्थित होने वाले, शत्रुविनाशक, अन्नों के रक्षक, संसार के पालक तथा संहारकर्ता, आयुधधारी, प्राणियों के रक्षक, सबके पालनकर्ता, वनों के रक्षक तथा प्रधान सारथी रूप (जगन्नियन्ता) शिवजी के निमित्त बारम्बार नमस्कार है ॥१८॥

विनियोगः–ॐ नम इत्यस्य कुत्स ऋषिः, विराडतिधृतिश्छन्दः, रुद्रो देवता जपे विनियोगः।

नमो॒रोहि॑ताय। स्त्थ॒पत॑येव्वृ॒क्षाणा॒म्पत॑ये॒नमो॒नमो॑भुव॒न्तये॑व्वारिवस्कृ॒ता-यौष॑धीना॒म्पत॑ये॒नमो॒नमो॑म॒न्त्रिणे॑व्वाणि॒जाय॒कक्षा॑णा॒म्पत॑ये॒नमो॒नम॑ऽ-उच्चैर्घो॑षायाक्क्र॒न्दय॑तेपत्ती॒नाम्पत॑ये॒नमो॒नम॑ः कृ॒त्त्स्नाय॒तया॑ ॥१९॥

भाष्यम्–रोहिताय = लोहितवर्णाय, स्थपतये = विश्वकर्मरूपिणे, नमः, वृक्षाणाम् = पादपानाम्, पतये = रक्षकाय, नमः, भुवन्तये = भूविस्तारकर्त्रे, वारिवस्कृताय = स्थानभोग्यकराय, नमः, ओषधीनां = भेषजानाम्, पतये = पालकाय नमः, मन्त्रिणे = अमात्यरूपाय, नमः, वणिजाय = जगद्रूपव्यापारिणे, नमः, कक्षाणां = गुल्मवीरुधानां, पतये नमः, उच्चैःघोषाय = युद्धे गर्जनशीलाय, आक्रन्दयते = रिपुरोदनविचक्षणाय, नमः, पत्तीनाम् = पदातीनाम्पतये नमः ।

हिन्दी–लालवर्ण वाले गृहादि निर्माणचतुर विश्वकर्मा के लिए नमस्कार है। वृक्षों के पालक, भूमण्डल के विस्तारक, स्थानभोग्यकारक, औषधियों के रक्षक, मन्त्रिरूपी, व्यापारकर्ता, गुल्म-वीरुध आदि के रक्षक, शत्रुओं को रुलाने वाले, युद्ध में भयंकर शब्द करने वाले तथा पदाति (सेना-विशेष) के रक्षक रुद्र के लिए बारम्बार नमस्कार है ॥१९॥

विनियोगः–ॐ नम इत्यस्य कुत्स ऋषिः, अतिधृतिश्छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

नम॑ःकृ॒त्त्स्नाय॒तया॑ । धाव॑ते॒सत्त्व॑ना॒म्पत॑ये॒नमो॒नम॒ः॑सह॑मानायनिव्व्या॒धि-

नऽआव्व्याधिनीनाम्पतयेनमोनमौनिषङ्गिणेककुभायस्तेनानाम्पतयेनमो-नमौनिचेरवेपरिचरायारण्ण्यानाम्पतयेनमोनमोव्वञ्चते ॥२०॥

भाष्यम्–कृत्स्नायतया = आकर्णाकृष्टशरासनवता, धावते = रणभूमौ त्वरितं गच्छते, रुद्राय नमः, सत्त्वानाम् = प्राणिनाम्, पतये = रक्षकाय, नमः, सहमानाय = पराभवस्वीकरणशीलाय, निव्याधिने = सर्वदा प्रहरणशीलाय, नमः, आव्याधिनीनां = वीरसेनानाम्, पतये नमः, निषङ्गिणे = खड्गयुक्ताय, ककुभाय = महते, नमः, स्तेनानाम् = अप्रत्यक्षचोराणाम्, पतये नमः, निचेरवे = परिभ्रमणशीलाय, परिचराय = परितो गमनशीलाय, नमः, अरण्यानां = वनानाम्, पतये नमः अस्तु ।

हिन्दी–कान तक धनुष की डोरी को खींचकर शत्रुविनाश के लिए युद्धभूमि में दौड़ते हुए शिव को नमस्कार है । प्राणियों के स्वामी, शत्रुओं के तिरस्कारकर्ता, विनाशकर्ता, सेनाओं के रक्षक, विघ्नकारियों पर खड्ग चलानेवाले, धनों को चुराने वाले, पराये द्रव्य को लेने की दृष्टि से घूमनेवालों के विनाशक, वनों के रक्षक अन्तर्यामी रुद्रदेव को बारम्बार नमस्कार है ॥२०॥

विनियोगः–ॐ नमो वञ्चत इत्यस्य कुत्स ऋषिः, निच्यृदतिधृतिश्छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

नमोव्वञ्चते। परिवञ्चतेस्तायूनाम्पतयेनमोनमौनिषङ्गिणऽइषुधिमते-तस्कराणाम्पतयेनमोनमः सृकायिब्भ्योजिघांꣳसद्भ्योमुष्ष्णताम्पतये-नमोनमोऽसिमद्भ्योनक्तञ्चरद्भ्योविकृन्तानाम्पतयेनमः ॥२१॥

भाष्यम्–वञ्चते = प्रतारयते, किं वा गमनशीलाय, नमः, परिवञ्चते = सर्वतो धनापह्नवाय, पतये = रक्षकाय, नमः, निषङ्गिणे = खड्गधारिणे, इषुधिमते = तूणसहिताय, नमः, तस्कराणाम् = प्रकटचौराणाम्, पतये = रक्षकाय, नमः, सृकायिभ्यः = वज्रधारिभ्यः, जिघांसद्भ्यः = हन्तुमुद्यतेभ्यः, एकादशरुद्रेभ्यः, नमः, मुष्णतां = धनादिकं चोरयताम्, पतये = रक्षकाय, नमः, असिमद्भ्यः = खड्गयुक्तेभ्यः, नक्तञ्चरद्भ्यः = रात्रिचरेभ्यः, नमः, विकृन्तानां = विकर्तनेन परद्रव्यापहारिणाम्, पतये = रक्षकाय, नमः अस्तु ।

हिन्दी–ठगों के मन की बातें जानने वाले के लिए नमस्कार है, गुप्तचरों के पालक के लिए, खड्गधारी के, बाणधारी के, उपद्रवों को शान्त करने वाले के,

गुप्तचोरों के, प्रकटचोरों के, वज्रधारी हत्याकारी पुरुषों के अन्तर्यामी रुद्र के लिए, क्षेत्रों में से अन्न आदि चुराने वालों के, रात्रि में खड्‌ग धारण कर घूमने वालों के, छेदन करके पराया धन चुराने वालों के स्वामी रुद्रदेव के लिए बारम्बार नमस्कार है ॥२१॥

विनियोगः–ॐ नम उष्णीषिण इत्यस्य कुत्स ऋषिः, निच्यृदष्टिश्छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

नमऽउष्ष्णीषिणे । गिरिचरायं कुलुञ्चानाम्पतयेनमोनमऽइषुमद्भ्यो-
धन्वायिब्भ्यश्चवोनमोनमऽआतन्वानेब्भ्यः प्प्रतिदधानेब्भ्यश्चवो-
नमोनमऽआयच्छद्भ्योऽस्यद्भ्यश्चवोनमोनमोविसृजद्भ्यः ॥२२॥

भाष्यम्–उष्णीषिणे = शिरस्त्राणवते, गिरिचराय = हिमाद्रौ भ्रमणशीलाय, नमः, कुलुञ्चानां = छलकौशलादिभिः परकीयगृहभूमिहर्त्रीणाम्, पतये = स्वामिने, नमः, इषुमद्भ्यः = दुष्टजनत्रासाय बाणधारणकर्तृभ्यः, नमः, च = अपि, धन्वायिभ्यः = धनुर्धारकेभ्यः, वः = युष्मभ्यं, नमः, आतन्वानेभ्यः = धनुषि ज्याऽऽरोपकेभ्यः, नमः, च = अपि, प्रतिदधानेभ्यः = धनुषि बाणाऽऽरोपकेभ्यः, वः, नमः, आयच्छद्भ्यः = धनुषामाकर्षणकर्तृभ्यः, नमः, च = अपि, अस्यद्भ्यः = बाणप्रहर्तृभ्यः, वः, नमः अस्तु ।

हिन्दी–पगड़ी धारण करनेवाले, ग्रामों तथा वनों में विचरने वालों, छल-कपट से दूसरों का अपहरण करने वालों, मनुष्यों को डराने के लिए धनुष तथा बाण धारण करने वालों, धनुष पर डोरी और बाण चढ़ाने वालों, धनुष को खींचकर बाणों को फेंकने वालों के स्वामी रुद्रदेव के लिए बारम्बार नमस्कार है ॥२२॥

विनियोगः–ॐ नमो विसृजद्भ्य इत्यस्य कुत्स ऋषिः, निच्यृदतिजगती छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

नमोविसृजद्भ्यो। विद्ध्यद्भ्यश्चवोनमोनमः स्वपद्भ्योजागृद्भ्यश्चवो-
नमोनमः शयानेब्भ्यऽआसीनेब्भ्यश्चवोनमोनमस्तिष्ठद्भ्योधावद्भ्यश्चवो-
नमोनमः सभाब्भ्यः ॥२३॥

भाष्यम्–विसृजद्भ्यः = अरिषु बाणान् विमुञ्चद्भ्यः, नमः, च = अपि, विध्यद्भ्यः = रिपून् पीडयद्भ्यः, वः = युष्मभ्यं, नमः, स्वपद्भ्यः = शयनं कुर्वद्भ्यः,

जाग्रद्भ्यः = चैतन्यमनुभवद्भ्यः, वः नमः, शयानेभ्यः = निद्राणेभ्यः, च आसीनेभ्यः = उपविशद्भ्यः, वः, नमः, अस्तु, तिष्ठद्भ्यः = स्थितिं कुर्वद्भ्यः, नमः, धावद्भ्यः = त्वरितं गच्छद्भ्यः, वः नमः अस्तु ।

हिन्दी–शत्रुओं के प्रति बाण चलाने वालों, लक्ष्यबेध करने वालों, स्वप्न, जाग्रत्, सुषुप्ति अवस्थाओं का अनुभव करने वालों, बैठे हुए, गतिशील और स्थित अवस्था में रहने वालों के अन्तर में स्थित आपको बारम्बार नमस्कार है ॥२३॥

विनियोगः–ॐ नमः सभाभ्य इत्यस्य कुत्स ऋषिः, शक्वरी छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

नमः॑ स॒भाभ्यः॑ । स॒भाप॑तिभ्यश्च वो॒ नमो॒ नमो॒ऽश्वे॑भ्योऽश्व॑पतिभ्यश्च वो॒ नमो॒ नम॑ऽआव्या॒धिनी॑भ्यो वि॒विद्ध्य॑न्तीभ्यश्च वो॒ नमो॒ नम॒ऽउग॑णाभ्यस्तृꣳह॒तीभ्य॑श्च वो॒ नमो॒ नमो॑ ग॒णेभ्यः॑ ॥२४॥

भाष्यम्–सभाभ्यः = सभारूपरुद्रेभ्यः, नमः, च = तथा, सभापतिभ्यः = सभायाः पतिभ्यः, वः, नमः, अश्वेभ्यः = घोटकेभ्यः, नमः, अश्वपतिभ्यः = घोटकस्वामिभ्यः, वः नमः, आव्याधिनीभ्यः–आ समन्ताद् विध्यन्तीति आव्याधिन्यः = सेनाः, ताभ्यः नमः, उगणाभ्यः = उत्कृष्टगणयुक्ताभ्यो ब्राहम्यादिमातृभ्यः, नमः, च = अपि, तृंहतीभ्यः = हन्तुं समर्थाभ्यो दुर्गादिमातृभ्यः, नमः अस्तु ।

हिन्दी–सभा तथा सभापति रूपी रुद्र के लिए नमस्कार है, घोड़ों तथा उनके अधिपतियों के रूप में आपको नमस्कार है । सामान्य एवं विशेषकर बेधने वाली देवसेनाओं में स्थित, उत्कृष्ट ब्राह्मी आदि मातृगणों में स्थित और युद्ध में प्रहार करने वाली दुर्गा आदि देवियों में स्थित रुद्र रूप के लिए बारम्बार नमस्कार है ॥२४॥

विनियोगः–ॐ नमो गणेभ्य इत्यस्य कुत्स ऋषिः, भुरिक्छक्वरी छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

नमो॑ ग॒णेभ्यो॑ । ग॒णप॑तिभ्यश्च वो॒ नमो॒ नमो॒ व्राते॑भ्यो॒ व्रात॑पतिभ्यश्च वो॒ नमो॒ नमो॒ गृत्से॑भ्यो॒ गृत्स॑पतिभ्यश्च वो॒ नमो॒ नमो॒ विरू॑पेभ्यो वि॒श्वरू॑पेभ्यश्च वो॒ नमो॒ नमः॒ सेना॑भ्यः ॥२५॥

भाष्यम्– गणेभ्यः = समूहात्मकेभ्यः, नमः, गणपतिभ्यश्च = गणरक्षकेभ्यश्च, वः नमः, व्रातेभ्यः = अनेकजातिसमूहेभ्यः, नमः, व्रातपतिभ्यः = समूहस्वामिभ्यः, वः नमः, गृत्सेभ्यः = मेधाविभ्यः, नमः, च = तथा, गृत्सपतिभ्यः = मेधाविनां पालकेभ्यः, नमः, च = तथा, वः = युष्मभ्यम्, नमः, विरूपेभ्यः = नग्नजटिलादिभ्यः, नमः, विश्वरूपेभ्यः = नानाविधरूपवद्भ्यः, वः नमः अस्तु ॥२५॥

हिन्दी–प्राणिसमूह के लिए, गणरक्षकों के लिए, अनेक जातिसमूह के लिए, जातिसमूहों के स्वामियों के लिए, बुद्धिमानों के लिए, बुद्धिमानों के रक्षकों के लिए, नंगे, लूले, लंगड़े आदि विकृतरूप वालों के लिए और विविध रूपवालों के लिए हे रुद्रदेव ! आपको बारम्बार नमस्कार है ।

विनियोगः–ॐ नमः सेनाभ्य इत्यस्य कुत्स ऋषिः, भुरिगतिजगती छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

नमः॑सेनाभ्य॑ः । सेनानिभ्य॑श्चवोनमोनमो॑रथिभ्यो॑ऽअरथेभ्य॑श्चवो-नमोनम॑ः क्षत्तृभ्य॑ः सङ्ग्रहीतृभ्य॑श्चवोनमोनमो॑महद्भ्यो॑ऽअर्भकेभ्य॑-श्चवोनम॑ः ॥२६॥

भाष्यम्–सेनाभ्यः = अनीकिनीभ्यः, नमः, सेनानिभ्यः = सेनापतिभ्यः, वः = युष्मभ्यं, नमः, रथिभ्यः = स्यन्दनवद्भ्यः, नमः, च = तथा, अरथिभ्यः = पदातिभ्यः, वः, नमः, क्षत्तृभ्यः = रथस्वामिभ्यः, नमः, च = तथा, सङ्गृहीतृभ्यः = सारथिभ्यः, वः नमः, महद्भ्यः = उत्कृष्टेभ्यः, च = तथा, अर्भकेभ्यः = अल्परूपेभ्यः, वः नमः अस्तु ।

हिन्दी–सेनाओं के लिए, सेनापतियों के लिए, रथवालों के लिए, पैदलों के लिए, रथ के स्वामियों के लिए, सारथियों के लिए, जाति, विद्या आदि में श्रेष्ठों के लिए तथा अल्परूप वालों के लिए आपको बारम्बार नमस्कार है ॥२६॥

विनियोगः–ॐ नमस्तक्षभ्य इत्यस्य कुत्स ऋषिः, निच्यृच्छक्वरी छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

नमस्तक्ष॑भ्यो। रथकारेभ्य॑श्चवोनमोनमः॑कुलालेभ्य॑ः कर्म्मारेभ्य-श्चवोनमोनमो॑निषादेभ्य॑ः पुञ्जिष्ठेभ्यश्चवोनमोनम॑ः श्वनिभ्यो॑मृग-युभ्य॑श्चवोनमोनमः॑श्वभ्य॑ः ॥२७॥

भाष्यम्–तक्षभ्यः = वर्धकिभ्यः, नमः, च = तथा, रथकारेभ्यः = स्यन्दन-निर्मातृभ्यः, वः नमः, कुलालेभ्यः = कुम्भकारेभ्यः, नमः, च, कर्मारेभ्यः = लोह-कारेभ्यः, वः नमः, निषादेभ्यः = भिल्लेभ्यः, नमः, च, पुञ्जिष्ठेभ्यः = पुल्कसादिभ्यः, वः नमः, श्वनिभ्यः = चाण्डालेभ्यः, नमः अस्तु, च, मृगयुभ्यः = लुब्धकेभ्यः, वः नमः अस्तु।

हिन्दी–शिल्पविद्याविशेषज्ञों में, रथनिर्माणकर्ताओं में, मिट्टी के पात्र बनाने वाले कुम्हारों में, लोहकारों में, भील आदि में, पक्षिघातक व्याधों में, चाण्डालों तथा व्याधों में व्याप्त रुद्रदेव के निमित्त आपको बारम्बार नमस्कार है ॥२७॥

विनियोगः–ॐ नमः श्वभ्य इत्यस्य कुत्स ऋषिः, आर्षीजगती छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

नमः॑श्वभ्य॒ः । श्वप॑तिभ्यश्च॒ वो॒ नमो॒ नमो॑ भ॒वाय॑ च रु॒द्राय॑ च॒ नमः॑ श॒र्वाय॑ च पशु॒पत॑ये च॒ नमो॒ नील॑ग्रीवाय च शिति॒कण्ठा॑य च॒ नमः॑ कप॒र्दिने ॥२८॥

भाष्यम्–श्वभ्यः = कुक्कुररूपेभ्यः, नमः, च = तथा, श्वपतिभ्यः = श्वपालकेभ्यः, वः = युष्मभ्यं, नमः, च = तथा, भवाय = मनसः प्राणिनः भवन्ति उत्पद्यन्ते तस्मै, नमः, रुद्राय = दुःखद्रावकाय, नमः, शर्वाय = कल्मषनाशिने, नमः, पशुपतये = प्राणिनां रक्षकाय, नमः, च = तथा, नीलग्रीवाय = नीलकण्ठाय, नमः, शितिकण्ठाय = नीलातिरिक्तकण्ठभागवते, नमः अस्तु।

हिन्दी–कुत्तों के रूप में, कुत्तों के अधिपति के रूप में स्थित शिव के लिए नमस्कार है। शिव, भव, रुद्र, शर्व, पशुपति, नीलग्रीव और शितिकण्ठ नामों वाले शिवजी के लिए नमस्कार है ॥२८॥

विनियोगः–ॐ नमः कपर्दिन इत्यस्य कुत्स ऋषिः, भुरिगतिजगती छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

नमः॑ कप॒र्दिने । च॒ व्यु॒प्तकेशाय च॒ नमः॑ सहस्रा॒क्षाय॑ च श॒तध॑न्वने च॒ नमो॑ गिरिश॒याय॑ च शिपिवि॒ष्टाय॑ च॒ नमो॑ मी॒ढुष्ट॑माय॒ चेषु॑मते च॒ नमो॑ ह्र॒स्वाय॑ ॥२९॥

भाष्यम्–कपर्दिने = जटाजूटवते, नमः, व्युप्तकेशाय = मुण्डितशिरस्काय, नमः, सहस्राक्षाय = अनेकनेत्रवते, नमः, शतधन्वने = अनेकशरासनाय, नमः,

गिरिशयाय = हिमालयवासिने, नमः, शिपिविष्टाय = पशुपु प्राणात्मकाय, नमः, मीढुष्टमाय = वर्षणेन तृप्तिकर्त्रे, नमः, च = तथा, इषुमते = शरसम्पद्युक्ताय, च नमः अस्तु।

हिन्दी–जटाजूटधारी के लिए, मुण्डित शिरवाले के लिए, हजार नेत्रों वाले इन्द्ररूपधारी के लिए, बहुत धनुष धारण करने वाले के लिए, सबके हृदय में व्याप्त विष्णुरूप के लिए, सिञ्चनकर्ता वरुणरूप के लिए और बाणयुक्त रुद्रदेव के लिए बारम्बार नमस्कार है ॥२९॥

विनियोगः–ॐ नमो ह्रस्वायेत्यस्य कुत्स ऋषिः, विराडार्षीत्रिष्टुप् छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

नमो॑ ह्र॒स्वाय॑ । चव्वाम॒नाय॑च॒नमो॑बृह॒तेच॒व्वर्षी॑यसेच॒ नमो॑व्वृ॒द्धाय॑-चस॒वृधे॑च॒नमोऽग्ग्र्या॑यचप्प्रथ॒माय॑च॒नम॑ऽआ॒शवे॑ ॥३०॥

भाष्यम्–ह्रस्वाय = लघुप्रमाणकाय, नमः, च, वामनाय = खर्वाय, नमः, बृहते = प्रौढाङ्गयुक्ताय, नमः, वर्षीयसे = अतिशयवृद्धाय, नमः, वृद्धाय = ज्येष्ठाय, नमः, सवृधे = विद्यादिगुणैः वर्धते इति वृधः, तैः सह वर्तते इति सवृत् तस्मै नमः, च, अग्र्याय = मुख्याय, प्रथमाय = पूर्वं जाताय, नमः अस्तु।

हिन्दी–छोटे के लिए, बौने के लिए, पुष्ट अंगों वाले के लिए, अतिशय वृद्ध के लिए, अवस्था में बड़े के लिए, विद्या-विनयादि गुणवाले के लिए, श्रेष्ठ के लिए और सबसे पहले उत्पन्न होने वाले रुद्र देवता के लिए बारम्बार नमस्कार है ॥३०॥

विनियोगः–ॐ नम आशव इत्यस्य कुत्स ऋषिः, स्वराडार्षीपङ्क्तिश्छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

नम॑ऽआ॒शवे॑ । चाजि॒राय॑च॒नम॒ꣳशीग्घ्र्या॑यच॒शीब्भ्या॑यच॒नम॒ऽऊर्म्म्या॑य-चावस्व॒न्न्या॒यच॒नमो॑नादे॒याय॑च॒द्द्वीप्प्या॑यच ॥३१॥

भाष्यम्–आशवे = जगद्व्यापिने च, नमः, अजिराय = गतियुक्ताय, नमः, अस्तु, च, शीघ्र्याय = वेगवद्वस्तुनि भवाय, नमः, च, शीभ्याय = आत्मश्लाघिने, नमः, ऊर्म्याय = कल्लोलभवाय, नमः, च, अवस्वन्याय = अर्वाचीनं गच्छत् जलस्य स्वनो यत्र, तत्र भवाय, नमः, च, नादेयाय = नदीभवाय, नमः, च, द्वीप्याय = द्वीपे भवाय, नमः अस्तु।

हिन्दी–जगद्व्यापक के लिए, गतिशील के लिए, वेगवान् वस्तु में होने वाले के लिए, जल-प्रवाह में से उत्पन्न होने वाले के लिए, आत्मप्रशंसक के लिए, जलतरंगों तथा स्थिर जलों में होने वाले के लिए, नदी एवं द्वीप (टापू) में होने वाले रुद्रदेव के लिए बारम्बार नमस्कार है ॥३१॥

विनियोगः–ॐ नमो ज्येष्ठायेत्यस्य कुत्स ऋषिः, स्वराडार्षीत्रिष्टुप् छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

नमोज्ज्येष्ठायचकनिष्ठायचनमः॒पूर्व्वजायचापरजायचनमोमद्ध्य-मायचापगल्भायचनमोजघन्न्यायचबुध्न्यायचनमः॑सोब्भ्याय ॥३२॥

भाष्यम्–ज्येष्ठाय = प्रशस्याय, च, कनिष्ठाय = अल्पयूने, च, नमः, पूर्व-जाय = सर्वप्रथमोत्पन्नाय, च, अपरजाय = प्रलयकाले जाताय, नमः, च, मध्यमाय = मध्ये भवाय, च, अपगल्भाय = अव्युत्पन्नेन्द्रियाय, च, नमः, जघन्याय = गवादीनां पश्चाद्भागोत्पन्नाय, च, बुध्न्याय = वृक्षादिमूलोद्भवाय, च, नमः, अस्तु ।

हिन्दी–अत्यन्त प्रशंसनीय के लिए, कनिष्ठ के लिए, सर्वप्रथम उत्पन्न के लिए, प्रलयकाल में उत्पन्न के लिए, मध्यभाग में उत्पन्न के लिए, अस्पष्ट इन्द्रियवाले के लिए, गाय आदि पशुओं के पिछले भाग से उत्पन्न होने वाले के लिए और वृक्ष आदि के मूल से उत्पन्न के लिए बारम्बार नमस्कार है ॥३२॥

विनियोगः–ॐ नमः सोभ्यायेत्यस्य कुत्स ऋषिः, आर्षीत्रिष्टुप् छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

नमः॑सोब्भ्याय । चप्प्रतिसर्य्यायचनमोयाम्म्यायचक्षेम्म्यायचनमः॑ श्लोक्क्यायचावसान्न्यायचनमऽउर्व्वर्य्यायचखल्ल्यायचनमोवन्न्याय ॥३३॥

भाष्यम्–सोभ्याय = गन्धर्वनगरोद्भवाय, नमः, च, प्रतिसर्य्याय = विवाहोचित-हस्तसूत्राय, नमः, च, याम्याय = पापिजनेभ्यः नरकार्तिदात्रे, नमः च, क्षेम्याय = कुशलो-द्भवाय, च, नमः, श्लोक्याय = स्तुत्याय, अवसान्याय = अवसानोद्भवाय, नमः, च, उर्वर्य्याय = धान्यरूपेणोद्भवाय, च, खल्याय = खले समुद्भवाय, नमः अस्तु ।

हिन्दी–गन्धर्व नगर में होने वाले के लिए, विवाहादि शुभकार्य में हाथ में बाँधे हुए मङ्गलसूत्र के रूप में स्थित के लिए, पापियों को दण्ड देने के लिए यमरूप में स्थित के लिए, परलोक में गये प्राणी के कल्याण के लिए, स्तुतियोग्य के लिए,

सबसे अन्त में उत्पन्न होने वाले के लिए, धान्यरूप से पैदा होने वाले के लिए और खलिहान में उत्पन्न होने वाले के लिए आपको बारम्बार नमस्कार है ॥३३॥

विनियोगः–ॐ नमो वन्यायेत्यस्य कुत्स ऋषिः, स्वराडार्षीत्रिष्टुप् छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

नमोव्वन्न्याय । चकक्ष्यायचनमः श्रवायचप्प्रतिश्रवायचनमऽ आशुषैणायचाशुरथायचनमः शूरायचावभेदिनेचनमोबिल्मिने॥३४॥

भाष्यम्–वन्याय = वने वृक्षादिरूपेणोद्भवाय, च, नमः, कक्षाय = तृणवल्याद्युद्भवाय, च, नमः, श्रवाय = शब्दात्मकाय, च, प्रतिश्रवाय = प्रतिशब्दरूपाय च नमः, आशुषेणाय = शीघ्रगामिनीसेनात्मकाय, नमः, च, आशुरथाय = शीघ्रगामिरथवते, नमः, च, शूराय = युद्धवीराय, नमः, च अवभेदिने = शत्रुहृद्विदारिणे, नमः अस्तु ।

हिन्दी–वन में वृक्ष-लता-गुल्मरूप में विराजमान के लिए, तृण, बल्ली आदि में उत्पन्न होने वाले के लिए, शब्दरूपात्मक के लिए, प्रतिशब्दरूप वाले के लिए, शीघ्रगामी सेना तथा रथवाले के लिए, युद्धशूर एवं शत्रु का हृदयविदारण करने वाले रुद्रदेव के लिए आपको बारम्बार नमस्कार है ॥३४॥

विनियोगः–ॐ नमो बिल्मिन इत्यस्य कुत्स ऋषिः, स्वराडार्षीत्रिष्टुप् छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

नमोबिल्मिने । चकवचिनेचनमोव्वर्म्मिणेचव्वरूथिनेचनमः श्श्रुतायच श्श्रुतसेनायचनमोदुन्दुब्भ्यायचाहनन्न्यायचनमोधृष्ष्णवे ॥३५॥

भाष्यम्–बिल्मिने = शिरस्त्राणवते, च, कवचिने = देहरक्षकवस्त्रवते, नमः, च, वर्मिणे = लौहतन्तुनिर्मितशरीररक्षकाय, च, वरूथिने = रथगुप्तिस्थानवते, नमः, च, श्रुताय = विख्याताय, च, श्रुतसेनाय = प्रसिद्धसेनावते, नमः, च, दुन्दुभ्याय = दुन्दुभ्युद्भवाय, च, आहनन्याय च = रणवाद्ये विद्यमानाय, नमः अस्तु ।

हिन्दी–शिरस्त्राण धारण करने वाले के लिए, अंगरखा तथा बख्तर धारण करने वाले के लिए, रथ को गुप्त रखने के स्थान वाले के लिए, प्रसिद्ध के लिए, प्रसिद्धि प्राप्त सेनावाले के लिए, युद्धवाद्य के लिए और वाद्यसाधन दण्ड आदि में रहने वाले रुद्रदेव के लिए बारम्बार नमस्कार है ॥३५॥

विनियोगः–ॐ नमो धृष्णव इत्यस्य कुत्स ऋषिः, भुरिगार्षीपङ्क्तिश्छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

नमो॑धृष्ण॒णवे॑ । चप्प्रमृशाय॑च॒नमो॑निषङ्गिणे॑चेषुधि॒मते॑च॒नम॑स्ती॒क्ष्णे-षवेचायु॒धिने॑च॒नम॑ःस्वायु॒धाय॑चसु॒धन्व॑नेच ॥३६॥

भाष्यम्–च, धृष्णवे = प्रगल्भाय, नमः, च, प्रमृशाय = पण्डिताय, नमः, च, निषङ्गिणे = खड्गधारिणे, च, इषुधिमते = तूणीरयुताय, नमः, अस्तु, च, तीक्ष्णेषवे = निशितबाणाय, च, आयुधिने = शस्त्रधारिणे, नमः, अस्तु, च, स्वायुधाय = शोभनशस्त्राय, च, सुधन्वने = सुष्ठुशरासनाय, नमः अस्तु।

हिन्दी–उदारता से अपने पक्ष की रक्षा करने वाले के लिए, विचारपूर्वक विपक्ष-विनाशन दक्ष के लिए, खड्ग, तरकस, बाण, मुद्गर, त्रिशूल, लोह, शिला आदि धारण करने वाले रुद्रदेव आपके लिए बारम्बार नमस्कार है ॥३६॥

विनियोगः–ॐ नमः स्रुत्यायेत्यस्य कुत्स ऋषिः, निच्यृदार्षीत्रिष्टुप् छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

नम॒ः स्रुत्या॑यच॒पथ्या॑यच॒नम॒ः काट्या॑यच॒नीप्या॑यच॒नम॒ः कुल्या॑य-चसर॒स्या॒यच॒नमो॑नादे॒याय॑चवैश॒न्ताय॑च॒नम॒ः कूप्या॑य॥३७॥

भाष्यम्–च, स्रुत्याय = नद्याः क्षुद्रप्रवाहोद्भवाय, पथ्याय = मार्गक्षेमकराय, नमः, काट्याय = विषममार्गोद्भवाय, च, नीप्याय = निम्नभूम्युद्भवाय, नमः, कुल्याय = कृत्रिमसरित्सु भवाय, च, सरस्याय = नद्युद्भवाय, नमः, च, नादेयाय = नदीजलरूपाय, च, वैशन्ताय = अल्पसरस्युद्भवाय, च, नमः अस्तु।

हिन्दी–क्षुद्र प्रवाहवाली नदी में, मार्ग में, विषम मार्ग में, निम्नभूमि में, कुल्या (छोटी बनावटी नदी) में, तालाब में, छोटे तालाब में तथा नदी के जलरूप में स्थित रुद्र के लिए बारम्बार नमस्कार है ॥३७॥

विनियोगः–ॐ नमः कूप्यायेत्यस्य कुत्स ऋषिः, भुरिगार्षीपङ्क्तिश्छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

नम॒ः कूप्या॑य । चाव॒ट्या॒यच॒नमो॒वीध्र्या॑यचात॒प्या॒यच॒नमो॒मेघ्या॑य-चविद्युत्या॒यच॒नमो॒वर्ष्या॑चाव॒र्ष्याय॑च॒नमो॒वात्या॑य ॥३८॥

भाष्यम्–कूप्याय = कूपोद्भवाय, च, अवट्याय = गर्तोद्भवाय, नमः, च, वीध्र्याय = निर्मलशरन्मेघोद्भवाय, च, आतप्याय = सूर्यप्रकाशोद्भवाय, नमः, च, मेघ्याय = अभ्राय, च, विद्युत्याय = सौदामिन्युद्भवाय, नमः, च, वर्ष्याय = वर्षासु समुद्भवाय, च, अवर्ष्याय = तदभावे भवाय, नमः = नमस्कारः अस्तु ।

हिन्दी–कुँए में, गड्ढे में, महाप्रकाश में या घोर अन्धकार में, सूर्य की गर्मी में, बादलों में, बिजली में, वर्षा की धाराओं में तथा अवर्षण में स्थित रुद्रदेव के लिए बारम्बार नमस्कार है ॥३८॥

विनियोगः–ॐ नमो वात्यायेत्यस्य कुत्स ऋषिः, स्वराडार्षीपङ्क्तिश्छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

नमो॒ वात्या॑य । च॒ रेष्म्या॑य च॒ नमो॒ वास्त॒व्या॑य च॒ वास्तु॒पाय॑ च॒ नम॒ः सोमा॑य च रु॒द्राय॑ च॒ नम॑स्ता॒म्राय॑ चारु॒णाय॑ च॒ नम॑ः श॒ङ्गवे॑ ॥३९॥

भाष्यम्–च, वात्याय = वायुप्रवाहोद्भवाय, च, रेष्म्याय = प्रलयकालोद्भवाय, नमः, च, वास्तव्याय = वास्तुसमुद्भवाय, च, वास्तुपाय = गृहरक्षकाय, नमः, च, सोमाय = उमासहिताय, च, रुद्राय = कष्टनिवारकाय नमः, च, ताम्राय = उद्यद्रविरूपिणे, च, अरुणाय = रक्तवर्णाय, नमः = नमस्कारः अस्तु ।

हिन्दी–वायुप्रवाह में, प्रलयवायु में, वास्तुगृह में, वास्तुगृह के रक्षक के रूप में, चन्द्रमा में, सोमरूप में, सायंकालीन तथा प्रातःकालीन सूर्य में, ताम्रवर्ण में और रक्तवर्ण में स्थित रूद्ररूप के लिए बारम्बार नमस्कार है ॥३९॥

विनियोगः–ॐ नमः शङ्गव इत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्देवा ऋषयः, भुरिगतिशक्वरी छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

नम॑ः श॒ङ्गवे॑ । च पशु॒पत॑ये च॒ नम॑ऽ उ॒ग्राय॑ च भी॒माय॑ च॒ नमो॑ऽ ग्रेव॒धाय॑ च दूरेव॒धाय॑ च॒ नमो॑ ह॒न्त्रे च॒ हनी॑यसे च॒ नमो॑ वृ॒क्षेभ्यो॒ हरि॑केशेभ्यो॒ नम॑स्ता॒राय॑ ॥४०॥

भाष्यम्–शङ्गवे = सुखकृद्वाचे, च, पशुपतये = पशूनाम्पालकाय, नमः, च, उग्राय = शत्रुवधोद्यताय, च, भीमाय = भयङ्कराय, नमः, च, अग्रे वधाय = सम्मुखम्प्राप्य हन्त्रे, च, दूरे वधाय = दूरादेव हन्त्रे, नमः, च, हन्त्रे = विनाशकाय, च, हनीयसे = विनाशशीलाय, नमः, च, हरिकेशेभ्यः = हरितवर्णकेशवद्भ्यः, वृक्षेभ्यः = कल्पतरुरूपेभ्यः, नमः, च, ताराय = भवाम्भोधेः पारकर्त्रे, च नमः अस्तु ।

हिन्दी–मङ्गलमय वेदवाणी के लिए, प्राणियों के रक्षक के लिए, शत्रुओं के विनाशक के लिए, भयंकर के लिए, आगे चलकर दूर रहकर वध करने वाले के लिए, मारने वाले के लिए, सम्पूर्ण विनाश करने वाले के लिए, हरित वर्ण के बालों वाले के लिए, कल्पतरु रूप के लिए और संसारसागर से पार लगाने वाले रुद्रदेव के लिए बारम्बार नमस्कार है ॥४०॥

विनियोगः–ॐ नमः शम्भवायेत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः, रुद्रो देवता, पाठे विनियोगः।

नमः॑शम्भ॒वाय॑ । चमयोभ॒वाय॑च॒नमः॑शङ्क॒राय॑चमयस्क॒राय॑च॒नमः॑ शि॒वाय॑ च शि॒वत॑राय च ॥४१॥

भाष्यम्–शम्भवाय = कल्याणकर्त्रे, नमः, च, मयोभवाय = आनन्दघनरूपाय, शङ्कराय = लौकिकसुखप्रदे, नमः, च, मयस्कराय = मोक्षसुखप्रदाय, च, शिवाय = मङ्गलमूर्तये, नमः, च, शिवतराय = सर्वेषां पापविमोचनाय, नमः अस्तु।

हिन्दी–कल्याणकारी, परम आनन्द देने वाले, सांसारिक सुख देने वाले, मोक्षसुख (भवबन्धन से मुक्ति) देने वाले, मंगलकारी मूर्तिवाले और सबके पापों का विनाश करने वाले शिवजी को बारम्बार नमस्कार है ॥४१॥

विनियोगः–ॐ नमः पार्य्यायेत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्देवा ऋषयः, निच्यृदार्षीत्रिष्टुप् छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

नम॒ꣳपार्य्या॑य । चावा॒र्य्या॑यच॒नमः॑प्प्र॒तर॑णायचो॒त्तर॑णायच॒नम॒स्तीर्त्थ्या॑-यच॒कूल्ल्या॑यच॒नम॒ꣳशष्प्या॑यच॒फेन्न्या॑यच॒नमः॑सिक॒त्त्या॒य ॥४२॥

भाष्यम्–च, पार्याय = संसाराब्धेः परतीरे भवाय, जीवन्मुक्ताय, च, अवार्य्याय = संसारमध्ये स्थिताय, नमः, च, प्रतरणाय = प्रकर्षेण पापनिस्तरणहेतवे, च, उत्तरणाय = तत्त्वज्ञानेन संसाराब्धेः पारगमनाय, नमः, च, तीर्थ्याय = तीर्थे समुत्पन्नाय, च, कूल्याय = तटोत्पन्नाय, नमः, च, शष्प्याय = शरतृणोद्भवाय, च, फेन्याय = अब्धिकफोद्भवाय, च नमः।

हिन्दी–संसारसागर के पार तथा मध्य में होने वाले, मन्त्र-जप आदि से पापों को दूर करने वाले, तत्त्वज्ञान से मुक्त होने के लिए, प्रयागादि तीर्थों में

उत्पन्न होने वाले, नदी के तट पर कुश आदि पर उत्पन्न होने वाले और समुद्र की झाग में उत्पन्न होने वाले रुद्रदेव के लिए बारम्बार नमस्कार है ।।४२।।

विनियोगः–ॐ नमः सिकत्यायेत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्देवादय ऋषयः, जगती छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

नमः सिकत्त्याय । चप्रवाह्याय चनमः किꣳशिलाय चक्षयणाय चनमः कपर्द्दिने चपुलस्तये चनमइरिण्याय चप्रपत्थ्याय चनमोव्व्रज्ज्याय ।।४३।।

भाष्यम्–च, सिकत्याय = बालुकासु समुत्पन्नाय, च, प्रवाह्याय = नदीप्रवाहोद्भवाय, नमः, च, किंशिलाय = कुत्सितपाषाणरूपाय, च, क्षयणाय = स्थिरजले विद्यमानाय, नमः, कपर्दिने = जटाजूटवते, च, पुलस्तये = सर्वान्तर्यामिने, नमः, च, इरिण्याय = ऊषरभूमौ विद्यमानाय, च, प्रपथ्याय = अभ्यस्तमार्गाय, च नमः अस्तु ।

हिन्दी–नदी की रेती में, प्रवाह में, नदी के मध्य में, वृक्षों में, पत्थर के टुकड़ों में, स्थिर जल में, जटाजूट युक्त वेश में, जल में, अन्तर्यामीरूप से प्राणियों के शरीरों में, तृणरहित ऊषर भूमि में और बहुत बार अभ्यस्त मार्गों में विद्यमान रुद्रदेव के लिए बारम्बार नमस्कार है ।।४३।।

विनियोगः–ॐ नमो व्रज्यायेत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः, आर्षीत्रिष्टुप् छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

नमोव्व्रज्ज्याय । चगोष्ठ्याय चनमस्तल्प्याय चगेह्याय चनमोहृदय्याय चनिवेष्प्याय चनमः काट्याय चगह्वरेष्ठाय चनमः शुष्क्याय ।।४४।।

भाष्यम्–च, व्रज्याय = गोसमूहोद्भवाय, च, गोष्ठ्याय = गावस्तिष्ठन्ति अत्र इति गोष्ठः तत्र भवाय, नमः, च, तल्प्याय = शय्योद्भवाय, च, गेह्याय = गृहस्थाय, च, हृदय्याय = हृदिस्थितजीवाय, च, निवेष्प्याय = हिमसमूहे विराजमानाय, नमः, च, काट्याय = दुर्गारण्यदेशोद्भवाय, च, गह्वरेष्ठाय = गिरिगुहादिस्थिताय, नमः अस्तु ।

हिन्दी–गायों के चरने वाले स्थान में, गोशाला में, शय्या में, घर में, हृदय में, हिमसमूह में, कठिन मार्ग में, पहाड़ों की गुफा और गम्भीर जल में विद्यमान रुद्रदेव के लिए बारम्बार नमस्कार है ।।४४।।

विनियोगः–ॐ नमः शुष्क्यायेत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः, निच्यृदार्षीत्रिष्टुप् छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

नमः शुष्क्याय । चहरित्यायचनमः पाꣳसव्यायचरजस्यायचनमो-लोप्प्यायचोलप्प्यायचनमऽऊर्व्व्यायचसूर्व्व्यायचनमः पर्ण्णाय ॥४५॥

भाष्यम्–च, शुष्क्याय = शुष्ककाष्ठाद्युद्भवाय, च, हरित्याय = आर्द्रकाष्ठाद्युद्भवाय, नमः, च, पांसव्याय = धूलिसमुद्भवाय, रजस्याय = रजोगुणोद्भवाय, नमः, च, लोप्याय = अगम्यदेशस्थाय, च, उलप्याय = तृणविशेषोद्भवाय, नमः, च, ऊर्व्याय = भूमौ भवाय, च, सूर्व्याय = प्रलयाग्नौ विराजमानाय, नमः अस्तु।

हिन्दी–शुष्क काष्ठादि में, हरित काष्ठादि में, हरे पत्तों में, धूल में, रजोगुण में, फूलों के पराग में, अगम्य स्थान में, चमेली आदि की बेलों में, भूमि में, समुद्र की अग्नि में और महाप्रलय की अग्नि में विराजमान रुद्रदेव के लिए बारम्बार नमस्कार है ॥४५॥

विनियोगः–ॐ नमः पर्णायेत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः, स्वराट् प्रकृतिश्छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

नमः पर्ण्णाय । चपर्ण्णशदायचनमऽउद्गुरमाणायचाभिघ्नतेचनमऽ-आखिदतेचप्प्रखिदतेचनमऽइषुकृद्भ्योधनुष्कृद्भ्यश्चवोनमोनमोवः-किरिकेब्भ्योदेवानाꣳहृदयेब्भ्योनमोव्विचिन्वत्केब्भ्योनमोव्विक्षिण-त्केब्भ्योनमऽआनिर्हतेब्भ्यः ॥४६॥

भाष्यम्–च, पर्णाय = पत्रात्मकाय, च, पर्णशदाय = पतितपत्रस्थितिकर्त्रे, नमः, च, उद्गुरमाणाय = उद्यमशीलाय, च, अभिघ्नते = शत्रुविनाशशीलाय, नमः, च, आखिदते = शत्रून् क्लेशयते, च, प्रखिदते = प्रकर्षेण खेदयते नमः, च, इषुकृद्भ्यः = बाणनिर्मातृभ्यः, च, धनुष्कृद्भ्यः = शरासननिर्माणकर्तृभ्यः, वः = युष्मभ्यं, नमः, किरिकेभ्यः = इदं जगद् वृष्ट्यादिभिः समेधयन्ति इति किरिकाः, वाय्वग्निसूर्येभ्यः, देवानां हृदयेभ्यः = देवात्मभ्यः, नमः, विचिन्वत्केभ्यः = धर्मकारिणां पापकारिणाञ्च भेदं प्रकटयन्ति तेभ्यः, नमः, विक्षिणत्केभ्यः = सर्वविधं पापं विनाशयन्ति तेभ्यः, नमः, आनिर्हतेभ्यः = सृष्ट्यादौ समुत्पन्नेभ्यः, अग्निवायुसूर्य्येभ्यः, च नमः अस्तु।

हिन्दी–पत्र में स्थित, पर्ण से पतित, उद्यमी पुरुषों को जन्म देने वाले, शत्रुसंहारकर्ता के लिए, अभक्तों के विनाशक के लिए, धनुष-बाणों को बनाने वाले के लिए नमस्कार है। यहाँ तक वर्णित रुद्र के २४० नामों से इनके माहात्म्य का वर्णन हुआ है। इसके आगे अग्नि-वायु-सूर्य रूपों में स्थित रुद्र का वर्णन किया जा रहा है।

संसार की सृष्टि में सहायक वायु-अग्नि-सूर्य जो देवता के हृदयस्वरूप हैं उनके लिए नमस्कार है, पापी-पुण्यात्माओं में भेद करने वालों, पाप का विनाश करने वालों और सृष्टि के आदि में उत्पन्न 'आनिर्हत' संज्ञक देवताओं के लिए बारम्बार नमस्कार है ॥४६॥

विनियोगः–ॐ द्राप इत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः, भुरिगार्षीबृहती छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

द्रापेऽअन्धसस्पतेदरिद्रनीललोहित ॥
आसाम्प्रजानामेषाम्पशूनाम्माभेर्म्मारोङ्मोचनः किञ्चनाममत् ॥४७॥

भाष्यम्–द्रापे = पापकारिणां विनाशकाय, अन्धसस्पते = सोमरक्षक, दरिद्र = एकाकिन्, निष्परिग्रह, नीललोहित = उभयवर्णात्मक, नः = अस्माकम्, आसां प्रजानाम् = पुत्रादिसन्ततीनाम्, पशूनाम् = अस्मदीयगवादिपशूनाम्, मा भेः = मा भैषीः, मा बिभेहि, मा रोक् = मा भङ्गं कार्षीः, च, किञ्चन = पुत्र-पौत्रादि, मा आममत् = मा रुग्णं विधेहि।

हिन्दी–पापियों को दण्ड देने वाले, सोम के रक्षक, अद्वितीय, निष्परिग्रह, नील तथा लाल वर्ण वाले शिव ! आप हमारे पुत्र-पौत्र, पशु आदि को पीड़ित न करें। हमारी प्रजा तथा पशुओं को सब प्रकार से मंगल युक्त करें ॥४७॥

विनियोगः–ॐ इमा रुद्रायेत्यस्य कुत्स ऋषिः, आर्षीजगती छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

इमारुद्राय । तवसेकपर्द्दिनेक्षयद्वीरायप्रभरामहेमतीः ॥
यथाशमसंद्विपदेचतुष्पदेविश्श्वम्पुष्टङ्ग्रामेऽअस्मिन्ननातुरम् ॥४८॥

भाष्यम्–यथा = येन प्रकारेण, द्विपदे = पुत्रपौत्रादिषु, चतुष्पदे = गवादिपशुषु, शम् = सुखं भवतु, तथा, अस्मिन् ग्रामे = निवासस्थाने, विश्वम् = प्राणिजातम्,

पुष्टं = सम्पन्नम्, अनातुरम् = उपद्रवरहितम्, असत् = भवति, तेन हेतुना, वयम्, इमाः = अस्मदीयाः, मतीः = बुद्धीः, तवसे = महद्बलशालिने, कपर्दिने = जटाजूट-युक्ताय, क्षयद्वीराय = विनश्यद्वीराय, रुद्राय = शम्भवे, प्रभरामहे = समर्पयामः ।

हिन्दी–जिस प्रकार हमारे पुत्र-पौत्र, पशु सुखपूर्वक रहें और ग्रामवासी सभी प्रकार के उपद्रवों से दूर हों, उस प्रकार हम अपनी बुद्धियों तथा बलवान् शूरवीरों के आश्रयस्थान रुद्रदेवता को अपनी सेवाएँ समर्पित करते हैं ॥४८॥

विनियोगः–ॐ याते रुद्र इत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः, आर्ष्यनुष्टुप् छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

यातें। रुद्रशिवातनूःशिवा विश्वाहाभेषजी ॥
शिवारुतस्यभेषजीतयानोमृडजीवसें ॥४९॥

भाष्यम्–रुद्र = शङ्कर, या ते = तव, शिवा = कल्याणप्रदा, विश्वाहा = सार्व-कालिकी, शिवा = शान्तिप्रदा, भेषजी = भवरोगनिवृत्तिकारिणी, रुतस्य = व्याधेः, शिवा = सम्यग्युक्ता, निवर्तकौषधिः, तनूः = शरीरम् अस्ति, तया तन्वा = तेन शरीरेण, नः = अस्मान्, जीवसे = जीवनाय, मृड = सुखिनं कुरु ।

हिन्दी–हे शिव ! जो आपकी शान्त सदा कल्याण करने वाली संसार रूपी रोग से मुक्ति कराने वाली शरीर-व्याधि की उत्तम औषधि रूप शक्ति है, उस अनुपम शक्ति से हमारे जीवन को सुखी करें ॥४९॥

विनियोगः–ॐ परि न इत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्देवा ऋषयः, आर्षीत्रिष्टुप् छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

परिनोरुद्रस्यहेतिर्वृणक्तुपरित्वेषस्यदुर्म्मतिरघायोः ॥
अवस्थिरामघवद्भ्यस्तनुष्वमीढ्वस्तोकायतनयायमृड ॥५०॥

भाष्यम्–रुद्रस्य = शिवस्य, हेतिः = आयुधं, नः = अस्मान्, परिवृणक्तु = परिवर्तयतु, त्वेषस्य = रुष्टस्य, अघायोः = पापयुक्तस्य, दुर्मतिः = द्रोहः, अस्मान्, परि = परिवृणक्तु, मीढ्वः = सेक्तः, मघवद्भ्यः—मघं = धनं, येषां ते यजमानाः, तेषां = भयदूरीकरणाय, स्थिरा = दृढधनूंषि, अवतनुष्व = ज्यारहितानि कुरु, किञ्च, तोकाय = सूनवे, तनयाय = पौत्राय, मृड = सुखय ।

हिन्दी–शिवजी के सम्पूर्ण आयुध हमारी रक्षा करें। पापियों को दण्डित करने वाली दुर्बुद्धि का हम पर प्रयोग न हो। मनोरथों की पूर्ति करने वाले शिव ! हविर्धन से युक्त यजमानों के भय को दूर करने के लिए धनुषों की डोरी उतार दें, जिससे हमारी सन्तानें सुखी हों ॥५०॥

विनियोगः–ॐ मीढुष्टम इत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्देवा ऋषयः, निच्यृदार्षीयवमध्यात्रिष्टुप् छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

मीढुष्टमशिवतमशिवोनःसुमनाभव ॥
परमेवृक्षऽआयुधन्निधायकृत्तिंव्वसानऽआचरपिनाकम्बिभ्रदागहि॥५१॥

भाष्यम्–मीढुष्टम = अतिशयफलप्रद, शिवतम = अत्यन्तं भद्रकारिन्, नः = अस्माकं, शिवः = शान्तः, सुमनाः = प्रसन्नचित्तः, भव = भवतु, परमे = दूरे, अभ्युन्नते वा, वृक्षे = सरलादिपादपे, आयुधं = त्रिशूलादिकं, निधाय = धृत्वा, कृत्तिं वसानः = चर्मरूपवस्त्रं परिदधानः सन्, आचर = आगच्छ, पिनाकम् = धनुः, बिभ्रत् = धारयत्, आगहि = आगच्छ।

हिन्दी–अत्यन्त कल्याणकारक फल को देने वाले, सबका भला चाहने वाले भगवान् शिव ! आप दूरस्थित ऊँचे चीड़ आदि के वृक्ष पर त्रिशूल रखकर मृगचर्म रूपी वस्त्र को धारण कर आइए। डोरी और बाण से रहित केवल पिनाक को शोभा के लिए धारण कर आइए ॥५१॥

विनियोगः–ॐ विकिरिद्रेत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः, आर्ष्यनुष्टुप् छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

व्विकिरिद्रव्विलोहितनमस्तेऽअस्तुभगवः ॥
यास्तेसहस्रꣳहेतयोऽन्न्यमस्म्मन्निवपन्तुताः ॥५२॥

भाष्यम्–विकिरिद्र = सर्वोपद्रवविनाशक, विलोहित = विगतरागवृत्तिक, भगवः = भगवन्, ते = तुभ्यं, नमः, अस्तु, सा, ते, सहस्रं हेतयः = असङ्ख्यान्यायुधानि सन्ति, ताः = तानि, अस्मत् अन्यम् = अस्मद्व्यतिरिक्तं, निवपन्तु = घ्नन्तु।

हिन्दी–समस्त विघ्नों के विनाश करने वाले निष्कल्मष भगवन् ! आपको नमस्कार है। आपके हजारों शस्त्र शत्रुओं के ऊपर पड़ें अर्थात् आप हमारी रक्षा करें ॥५२॥

विनियोग:–ॐ सहस्राणीत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषि:, निच्यृदार्ष्यनुष्टुप् छन्द:, रुद्रो देवता पाठे विनियोग:।

सहस्राणिसहस्रशोबाह्वोस्तवहेतयः ॥
तासामीशानोभगवःपराचीनामुखाकृधि ॥५३॥

भाष्यम्–भगव: = समस्तैश्वर्यसम्पन्न, तव = ते, बाह्वो: = हस्तयो:, सहस्राणि = असङ्ख्येयानि, सहस्रश: = अनेकश:, हेतय: = आयुधानि सन्ति, ईशान: = जगन्नाथ:, त्वम्, तासां = शस्त्राणाम्, मुखा: = मुखानि, पराचीना: = अधोमुखवन्त:, कृधि = कुरु।

हिन्दी–हे भगवन्! सभी प्रकार के ऐश्वर्यों से युक्त आपकी भुजाओं में अनेक प्रेकार के शूल आदि शस्त्र हैं। त्रैलोक्यपति आप उन शस्त्रों का मुख हमसे नीचे की ओर करें ॥५३॥

विनियोग:–ॐ असङ्ख्याता इत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषि:, विराडार्ष्यनुष्टुप् छन्द:, रुद्रो देवता पाठे विनियोग:।

असङ्ख्यातासहस्राणियेरुद्राऽअधिभूम्म्याम्॥
तेषांᳫसहस्रयोजनेऽवधन्न्वानितन्मसि ॥५४॥

भाष्यम्–असङ्ख्यातासहस्राणि = असङ्ख्येयानि, अमितानि च, ये रुद्रा: = शिवस्वरूपा:, भूम्याम् = भूमे:, अधि = उपरि स्थिता:, तेषाम् = पूर्वोक्तानां रुद्राणां, धन्वानि = धनूंषि, सहस्रयोजने = सहस्रयोजनात्मके पथि, अवतन्मसि = अवतारयाम:।

हिन्दी–जो अनगिनत अथवा हजारों रुद्र भूमि पर स्थित हैं, उनके धनुष इस मन्त्र के बल से हजार योजन दूर जाकर प्रहार करते हैं ॥५४॥

विनियोग:–ॐ अस्मिन्नित्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषि:, भुरिगार्ष्युष्णिक् छन्द:, रुद्रो देवता पाठे विनियोग:।

अस्मिन्न्महत्त्यर्ण्णवेन्तरिक्षेभवाऽअधि ॥
तेषांᳫसहस्रयोजनेऽवधन्न्वानितन्मसि ॥५५॥

भाष्यम्–अस्मिन् = अन्तरिक्षे, महति = विशाले, अर्णवे = समुद्रे, अर्णांसि = जलानि, विद्यन्ते यत्र, अन्तरिक्षे अधि = अधिश्रित्य, ये भवा: = रुद्रा: सन्ति, तेषामिति पूर्ववत्।

हिन्दी–अन्तरिक्ष के रुद्रों का वर्णन— इस अन्तरिक्ष में बड़े समुद्रों का आश्रय लेकर रुद्र स्थित हैं। शेष मन्त्र सं० ५४ के समान ॥५५॥

विनियोगः–ॐ नीलग्रीवा इत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः, निच्यृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

नीलग्ग्रीवाःशितिकण्ठादिवꣳरुद्राऽउपश्रिताः ॥
तेषाꣳसहस्रयोजनेऽवधन्वानितन्मसि ॥५६॥

भाष्यम्–नीलग्रीवाः = कृष्णकण्ठाः, शितिकण्ठाः = श्वेतग्रीवाः, च ये रुद्राः = ये रुद्राः, दिवं = स्वर्लोकम्, उपश्रिताः = उपरि वर्तमानाः सन्ति, तेषामिति पूर्ववत्।

हिन्दी–द्युलोकस्थित रुद्रों का वर्णन— नीली गर्दन तथा सफेद गलावाले रुद्र द्युलोक में रहते हैं। शेष मन्त्र सं० ५४ के समान ॥५६॥

विनियोगः–ॐ नीलग्रीवा इत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः, निच्यृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

नीलग्ग्रीवाःशितिकण्ठाःशर्व्वाऽअधःक्षमाचराः ॥
तेषाꣳसहस्रयोजनेऽवधन्वानितन्मसि ॥५७॥

भाष्यम्– नीलग्रीवाः = कृष्णग्रीवाः, शितिकण्ठाः = श्वेतकण्ठाः, ये शर्वाः = रुद्राः, अधः = निम्नप्रदेशे, क्षमाचराः = पातालस्थाः रुद्राः सन्ति, तेषामिति पूर्ववत्।

हिन्दी–पातालस्थित रुद्रों का वर्णन— नीली गर्दन तथा सफेद गला वाले शर्व नामक रुद्र पाताललोक में रहते हैं। शेष मन्त्र सं० ५४ के समान ॥५७॥

विनियोगः–ॐ ये वृक्षेष्वित्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः, निच्यृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

येव्वृक्षेषु। शष्प्पिञ्जरानीलग्ग्रीव्वाव्विलोहिताः ॥
तेषाꣳसहस्रयोजनेऽवधन्वानितन्मसि ॥५८॥

भाष्यम्–ये = रुद्राः, शष्पिञ्जराः = पिञ्जरवर्णाः, नीलग्रीवाः = नीलकण्ठाः, विलोहिताः = विशेषेण रक्तवर्णाः, वृक्षेषु = अश्वत्थादिषु स्थिताः, तेषामिति पूर्ववत्।

हिन्दी–जो हरे वर्ण वाले, नीली गर्दन वाले, विशेष लाल वर्ण के पीपल आदि यज्ञीय वृक्षों में स्थित हैं। शेष मन्त्र सं० ५४ के समान ॥५८॥

विनियोगः–ॐ ये भूतानामित्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः, आर्ष्यनुष्टुप् छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

येभूतानामधिपतयोव्विशिखासः कपर्द्दिनः ॥
तेषांᳶसहस्रयोजनेऽवधन्वानितन्मसि ॥५९॥

भाष्यम्–ये = रुद्राः, भूतानां = देवविशेषानाम्, अधिपतयः = स्वामिनः, विशिखासः = मुण्डितशिरस्काः, कपर्दिनः = जटाजूटयुताः सन्ति, तेषामिति पूर्ववत्।

हिन्दी–जो रुद्र देव-विशेषों के स्वामी हैं, मुण्डित शिरवाले हैं और कभी जटाजूटधारी हैं। शेष मन्त्र सं० ५४ के समान ॥५९॥

विनियोगः–ॐ ये पथामित्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः, आर्ष्यनुष्टुप् छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

येपथाम्पथिरक्षयऽऐलवृदाऽआयुर्युधः ॥
तेषांᳶसहस्रयोजनेऽवधन्वानितन्मसि ॥६०॥

भाष्यम्–ये = ये रुद्राः, पथाम् = उभयविध(वैदिक-लौकिक)मार्गाणाम्, पथिरक्षयः = अधिपतयः, ऐलभृतः = अन्नधारकाः, आयुर्युधः = यावज्जीवं योद्धारः, तेषामिति पूर्ववत्।

हिन्दी–जो वैदिक एवं लौकिक मार्गों के स्वामी हैं, अन्नों के रक्षक और आजीवन युद्ध करने में तत्पर हैं। शेष मन्त्र सं० ५४ के समान ॥६०॥

विनियोगः–ॐ ये तीर्थानीत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः निच्यृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

येतीर्त्थानि। प्प्रचरन्तिसृकाहस्तानिषङ्गिणः ॥
तेषांᳶसहस्रयोजनेऽवधन्वानितन्मसि ॥६१॥

भाष्यम्–ये = रुद्राः, सृकाहस्ताः = सृकेत्यायुधधारिणः, निषङ्गिणः = खड्गहस्ताः, ते तीर्थानि = काशीप्रयागादीनि, प्रचरन्ति = विचरन्ति, तेषामिति पूर्ववत्।

हिन्दी–जो रुद्र ढाल, तलवार हाथ में लिए काशी-प्रयागादि तीर्थों में विचरण करते हैं। शेष मन्त्र सं० ५४ के समान ॥६१॥

विनियोगः–ॐ येन्नेष्वित्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्देवा ऋषयः, विराडार्ष्यनुष्टुप् छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

येऽन्नेषु । विविद्ध्यन्तिपात्रेषुपिबतोजनान् ॥
तेषाᳪंसहस्रयोजनेऽवधन्वानितन्मसि ॥६२॥

भाष्यम्–ये = रुद्राः, अन्नेषु = भक्ष्यपदार्थेषु, जनान् = प्राणीन्, विविद्ध्यन्ति = विशेषेण पीडयन्ति, तथा, पात्रेषु = दुग्धादिपात्रेषु स्थिताः सन्तः, पिबतः = दुग्धपानं कुर्वतः, जनान् विविद्ध्यन्ति, तेषामिति पूर्ववत्।

हिन्दी–जो रुद्र अन्न भोजन कर प्राणियों को विशेष पीड़ित करते हैं, धातुओं की विषमता से रोगों का उत्पादन करते हैं और पात्रों में दूध आदि रखकर पीते हुए लोगों को पीड़ित करते हैं। शेष मन्त्र सं० ५४ के समान ॥६२॥

विनियोगः–ॐ य इत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्देवा ऋषयः, निच्यृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

यऽएतावन्तश्चभूयाᳪंसश्चदिशोरुद्राव्वितस्थिरे ॥
तेषाᳪंसहस्रयोजनेऽवधन्वानितन्मसि ॥६३॥

भाष्यम्–ये = रुद्राः, एतावन्तः = एतत्प्रमाणवन्तः, च भूयांसः = बहवः, दिशः = दश दिशः, वितस्थिरे = आश्रिताः, तेषामिति पूर्ववत्।

हिन्दी–जो इतने अथवा इनसे भी अधिक रुद्र दशों दिशाओं से भी अधिक स्थानों में आश्रित हैं। शेष मन्त्र ५४ के समान ॥६३॥

विनियोगः–ॐ नमोस्त्वित्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः, निच्यृद्धृतिश्छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

नमोऽस्तु । रुद्रेब्भ्योयेदिवियेषांव्वर्षमिषवः ॥ तेब्भ्योदशप्प्राचीर्दश-दक्षिणादशप्प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्द्ध्वाः ॥ तेब्भ्योनमोऽअस्तुतेनोऽव-न्तुतेनोमृडयन्तुतेयन्द्विष्म्मोयश्चनोद्वेष्टितमेषाञ्जम्भेदद्ध्मः ॥६४॥

भाष्यम्–ये = रुद्राः, दिवि = द्युलोके सन्ति, येषां = रुद्राणां, वर्षं = वृष्टिः एव, इषवः = बाणाः, तेभ्यः = रुद्रेभ्यः, नमोऽस्तु = नमस्कारः अस्तु, तेभ्यः = रुद्रेभ्यः, दशप्राचीः = प्रागभिमुखाः दश अङ्गुलीः कुर्वे, दशदक्षिणाः = दक्षिणाभिमुखाः दश अङ्गुलीः कुर्वे, दशप्रतीचीः = प्रत्यङ्मुखाः दशाङ्गुलीः कुर्वे, दशोदीचीः = उदङ्मुखाः दशाङ्गुलीः कुर्वे, दशोर्ध्वाः = उपरिदशाङ्गुलीः कुर्वे, सर्वदिक्षु बद्धाञ्जलिः नमस्करोमीत्याशयः। नमः = नमोऽस्तु, ते = रुद्राः, नः = अस्मान्, अवन्तु = रक्षन्तु, ते नः = अस्मान्, मृडयन्तु = सुखयन्तु, ते = रुद्राः, यम् = पुरुषं, द्विष्मः = द्वेषं कुर्मः, च यः = पुरुषः, नः = अस्मान्, द्वेष्टि = द्वेषं करोति, तम् = पुमांसम्, एषां = रुद्राणां, जम्भे = मुखे, दध्मः = स्थापयामः।

हिन्दी–जो रुद्र द्युलोकवासी हैं और जिनकी दृष्टि ही बाण हैं, उन रुद्रों के निमित्त पूर्व में, दक्षिण में, पश्चिम में, उत्तर में, ऊर्ध्व में दश अंगुलियाँ जोड़कर अर्थात् करबद्ध प्रार्थना करता हूँ, प्रणाम करता हूँ। वे हमारी रक्षा करें, सुखी करें, जिससे हम द्वेष करते हैं और जो हमसे द्वेष करते हैं उनको हम रुद्र के दंष्ट्राकराल मुख में स्थापित करते हैं ॥६४॥

विनियोगः–ॐ नमोस्त्वित्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः, धृतिश्छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

नमोँऽस्तु । रुद्रेब्भ्योये॒न्तरिक्षेयेषांव्वात॒ऽइषवः ॥ तेब्भ्योदश॒प्प्राचीर्द्द॒शदक्षिणादशप्प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशो॒र्द्ध्वाः ॥ तेब्भ्यो॒नमोँऽअस्तु॒तेनोँऽवन्तु॒तेनोँमृडयन्तु॒तेयन्द्वि॒ष्ष्मोयश्च॑ नो॒द्द्वेष्टि॒तमेषा॒ञ्जम्भेदद्ध्मः ॥६५॥

भाष्यम्–रुद्रेभ्यः = एतत्संज्ञकेभ्यः देवेभ्यः, नमोऽस्तु = नमस्कारो भवतु, ये अन्तरिक्षे = अन्तरिक्षलोके वर्तन्ते, येषां = रुद्राणां, वातः = वायुः, इषवः = आयुधस्थानीयः, रोगं घ्नन्ति तेभ्यो रुद्रेभ्यः नमः। शेषं पूर्ववत्।

हिन्दी–उन रुद्रों के निमित्त नमस्कार है, जो अन्तरिक्ष में स्थित हैं, जिनके पवन समान वेग वाले बाण उत्पत्ति, पालन तथा संहार करने में समर्थ हैं। शेष मन्त्र सं० ६४ के समान ॥६५॥

वि॰ ॰गः–ॐ नमोस्त्वित्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्देवा ऋषयः, धृतिश्छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

नमोऽस्तु । रुद्रेब्भ्योयेपृथिव्व्याँष्येषामन्नमिषवः ॥ तेब्भ्योदशप्प्राचीर्द्दशदक्षिणादशप्प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोद्ध्र्वाः ॥ तेब्भ्योनमोऽअस्तुतेनोऽवन्तुतेनोमृडयन्तुतेयन्द्विष्म्मोयश्चनोद्द्वेष्टितमेषाञ्जम्भेदद्ध्मः ॥६६॥

इति रुद्रे पञ्चमोऽध्यायः ॥

भाष्यम्–रुद्रेभ्यः, नमः = नमस्कारः अस्तु, ये रुद्राः, पृथिव्याम् = भूम्यां वर्तन्ते, येषाम् इषवः = बाणाः, अन्नम् = आयुधम्, भूत्वा रोगान् विनाशयति, तेभ्यो नमः । शेषं पूर्ववत् ।

हिन्दी–उन रुद्रदेवों के लिए नमस्कार है, जो पृथिवी में विराजमान हैं, जिनके बाण ही अन्न हैं, जिस अन्न के अनुचित प्रयोग से प्राणी रुग्ण हो जाते हैं और इन रोगों के द्वारा उनका संहार होता है, ऐसे रुद्र के प्रति नमस्कार है। शेष मन्त्र सं० ६४ के समान ॥६६॥

इति नैनीतालमण्डलाभिजनश्रौतस्मार्तधर्मधुरन्धर**पण्डिततारादत्तात्मज-श्रीब्रह्मानन्दत्रिपाठि**कृत-श्रीरुद्राष्टाध्याय्यां संस्कृतभाष्य-हिन्दीटीकाभ्यां संवलितः पञ्चमोऽध्यायः ॥५॥

अथ षष्ठोऽध्यायः

(महच्छिरःसूक्तम्)

विनियोगः–ॐ वय ँ सोम इत्यस्य बन्धुर्ऋषिः, गायत्री छन्दः, सोमो देवता दक्षिणाग्न्युपस्थाने विनियोगः।

हरिः ॐ ॥ व्वयꣳसोमव्व्रतेतवमनस्तनूषुबिब्भ्रतꣳ ॥ प्प्रजावन्तꣳसचेमहि ॥१॥

भाष्यम्–सोम = सोमदेव, वयं = यजमानाः, तव व्रते = त्वदीयकर्मणि स्थिताः, तनूषु = त्वदीयशरीरावयवेषु, जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यादिषु, मनः = चेतः, बिभ्रतः = धारयन्तः, प्रजावन्तः = पुत्रपौत्रादिभिर्युक्ताः सन्तः, सचेमहि = सङ्गच्छेमहि ।

हिन्दी–हे पितृयज्ञ में पूजित सोमदेव ! हम यजमान तेरे व्रतसम्बन्धी कार्य में लगे हुए शरीरावयवों में जागते, सोते तथा निद्रावस्था में मन लगाकर आपकी ही कृपा से पुत्र-पौत्रादि के सुखों का भोग करते हैं ॥१॥

विनियोगः–ॐ एषत इत्यस्य बन्धुर्ऋषिः प्राजापत्या बृहती छन्दः, रुद्रो देवता अवदानहोमे विनियोगः।

एषते । रुद्रभागꣳसहस्वस्राम्बिकयातञ्जुषस्व स्वाहैषतेरुद्रभागऽआखुस्तेपशुः ॥२॥

भाष्यम्–हे रुद्र ! एषः = पुरोडाशः, ते = तव, स्वस्रा = भगिन्या, अम्बिकया = एतन्नाम्न्या, सह भागः = स्वीकरणीयोऽशः, तम् = पुरोडाशं, जुषस्व = सेवस्व, स्वाहा = सुहुतम् अस्तु । हे रुद्र ! एषः = पुरोडाशः, ते = तव, भागः = अंशः, तथा ते = तव, आखुः = मूषकः, पशुः समर्पितः । अनेन तुष्टः रुद्रः यजमानपशून्न निहन्ति ।

हिन्दी–हे रुद्रदेव ! अपनी बहिन अम्बिका देवी के साथ हमारे दिये हुए पुरोडाश ५.. स्वीकार कीजिए । इसका सेवन कर आप हमारे विरोधियों, पापियों,

अधर्मियों तथा अन्यायियों को दण्ड दीजिए। हमारे द्वारा प्रस्तुत पुरोडाश आपका अंश है, आपके चूहे को भी हम यज्ञ का शेष भाग देते हैं ॥२॥

विनियोगः–ॐ अवरुद्रमित्यस्य बन्धुर्ऋषिः, विराट्पङ्क्तिश्छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

अवरुद्रमदीमह्यवदेवन्त्र्यम्बकम्॥
यथानोव्वस्यसस्करद्यथानःश्श्रेयसस्करद्यथानोव्व्यवसाययात् ॥३॥

भाष्यम्–रुद्रम् अव = मनसा असौ रुद्र इति तं विज्ञाय अव = रक्षय, नः इति प्रार्थना, अदीमहि = शिवस्य कृपया वयम् अन्नं भक्षयेम, तथा त्र्यम्बकम् = अम्बकत्रययुक्तं, देवम् = अव, यथा = येन विधिना, नः = अस्मान्, वस्यसः = वसनयोग्यान्, करत् = कुर्यात्, यथा = येन प्रकारेण, नः = अस्मान्, श्रेयसः करत् = बन्धुषु प्रशस्यतरान् विदध्यात्, यथा = येन प्रकारेण, नः = अस्मान्, व्यवसाययात् = यथोचितेषु कार्येषु नियुज्यात्।

हिन्दी–पापात्माओं को रुलाने वाले, तीन नेत्रवाले, जिनकी कृपा से प्राणी अन्नभक्षण करते हैं, जिनको यज्ञभाग अर्पित किया जाता है, वे रुद्रदेव हमको बन्धु-बान्धवों में श्रेष्ठ करें और हमको सभी कार्यों में निश्चयपूर्वक लगायें, अतएव हम उनका जप करते हैं ॥३॥

विनियोगः–ॐ भेषजमसीत्यस्य बन्धुर्ऋषिः, स्वराड्गायत्री छन्दः, रुद्रो देवता पाठे विनियोगः।

भेषजमसि भेषजङ्गवेऽश्वायपुरुषायभेषजम् ॥
सुखम्मेषायमेष्ष्यै ॥४॥

भाष्यम्–हे रुद्र ! भवान् भेषजम् = औषधवत्सकलरोगनिवारणक्षमः, असि = भवसि, अतः मामकीनेभ्यः गवे, अश्वाय, पुरुषाय भेषजं = सर्वव्याधिविनाशकमौषधं प्रयच्छ, मेषाय, मेष्यै = अजाय, अजायै, सुखं = कुशलं प्रयच्छेति प्रार्थना।

हिन्दी–हे रुद्र ! आप औषध के समान सब उपद्रवों के निवारक हैं, अतः आप हमारे गाय, घोड़े, बकरा, बकरी, पुत्र आदि के समस्त कष्टों को दूर करें ॥४॥

विनियोगः–ॐ त्र्यम्बकमित्यस्य वसिष्ठ ऋषिः, ब्राह्मी त्रिष्टुप्छन्दः, रुद्रो देवता परिक्रमणे विनियोगः।

त्र्यम्बकंय्यजामहेसुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ॥
उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीयमामृतात् ॥
त्र्यम्बकं य्यजामहेसुगन्धिम्पतिवेदनम् ॥
उर्व्वारुकमिवबन्धनादितोमुक्षीयमामुतः ॥५॥

भाष्यम्– सुगन्धिं = दिव्यगन्धयुक्तम्, पुष्टिवर्धनं = धनधान्यादिसम्पद्वृद्धिकर्तारं, त्र्यम्बकं = त्रिनेत्रभूषितं, त्रैलोक्यशङ्करं शङ्करं, यजामहे = अर्चयामः। ततः, मृत्योः = अकालमृत्योः, मुक्षीय = मुक्तो भूयासम्, केन प्रकारेण? तद्दृष्टान्तरूपेण उदाह्रियते— इव = यथा, उर्वारुकं = कर्कटीफलं सुपक्वं सत्, बन्धनात् = वृन्तात् स्वयमेव पृथक् भवति, तद्वत् त्र्यम्बकप्रसादादहमपीत्याशयः। अथ यजमानकन्यका अपि शिवमुपासन्ते— पतिवेदनम् = पत्युर्लम्भयितारं, सुगन्धिं = दिव्यपरिमलसनाथितं, त्र्यम्बकं = शिवं, यजामहे = पूजामहे = पूजयामः, इतः = परिजनेभ्यः (मातृपितृभ्रातृवर्गेभ्यः), मुक्षीय = मुक्ता भूयास्म । उतः = विवाहानन्तरं, पत्युः = मा = मुक्ता भूयास्म ।

हिन्दी–दिव्यगन्ध से परिपूर्ण, धन-धान्य आदि सम्पत्तियों के दाता, तीन नेत्रों से भूषित त्रैलोक्यशंकर शंकर की हम उपासना करते हैं । इस पूजन से अकालमृत्यु द्वारा हम उस प्रकार मुक्त हो जायें जिस प्रकार पकी ककड़ी अपने वृन्त से अपने आप मुक्त हो जाती है । इसी प्रकार शिवजी की अनुकम्पा से मैं भी जन्म-मरण रूप सांसारिक बन्धन से मुक्त हो जाऊँ । मन्त्र का उत्तरार्ध यजमान-कन्या की प्रार्थना है । वे इस मन्त्र से यज्ञाग्नि की तीन परिक्रमा करके उत्तम पति के प्रदाता त्र्यम्बक की पूजा करती हैं । जैसे ककड़ी का फल बन्धनमुक्त हो जाता है, उसी प्रकार वह कन्या माता-पिता आदि के गोत्र से छूट जाती है। पति के गोत्र से मैं न छूटूँ यह उसकी प्रार्थना है । अर्थात् सर्वदा पतिगृह में सुखपूर्वक निवास करूँ ।

वक्तव्य–मन्त्र का पूर्वार्ध ही 'महामृत्युञ्जय' का मन्त्र है, इसी के जप से अपमृत्यु आदि संकट दूर होते हैं ॥५॥

विनियोगः–ॐ एतत्त इत्यस्य वसिष्ठ ऋषिः, भुरिगास्तारपङ्क्तिश्छन्दः, रुद्रो देवता वंशयष्टिसर्जने विनियोगः।

एतत्ते । रुद्रावसन्तेनपरोमूजवतोतीहि ॥
अवततधन्वापिनाकावसःकृत्तिवासाऽअहिंसन्नःशिवोतीहि ॥६॥

भाष्यम्–रुद्र ! एतत् ते = तव, अवसं = यज्ञावशिष्टभोज्यपदार्थम्, एतेन युक्तस्त्वम्, मूजवतः = एतन्नामकपर्वतात्, परः = अपरभागे संस्थितः सन्, अतीहि = अतिक्रम्य याहि, अवततधन्वा = विस्तारितधनुष्कः, पिनाकवासः = पिनाको नाम शिवधनुः तत् वस्त्रेणाच्छाद्य गच्छ येन प्राणिनो न बिभ्येयुरिति तात्पर्यः। हे रुद्र ! त्वं, कृत्तिवासाः = धृतचर्माम्बरः सन्, नः = अस्मान्, अहिंसन् = रक्षां कुर्वन्, शिवः = अस्मत्पूजया प्रसन्नः सन्, अतीहि = पर्वतमतिक्रम्य गच्छेत्याशयः।

हिन्दी–हे रुद्रदेव ! यह आपका यज्ञ से अवशिष्ट भोजन है। इसको लेकर अपने पिनाक को वस्त्र से छिपाकर मूजवान् नामक पर्वत को पार करके चले जाओ। इस प्रकार धनुष को ले जाने से प्राणी आपसे भयभीत नहीं होंगे। हे रुद्रदेव ! आप चर्माम्बर धारण कर हमारी रक्षा करते हुए प्रसन्न होकर यहाँ से जायें ॥६॥

विनियोगः–ॐ त्र्यायुषमित्यस्य नारायण ऋषिः, उष्णिक्छन्दः, रुद्रो देवता त्र्यायुषकरणे विनियोगः।

त्र्यायुषञ्जमदग्ग्नेः कश्श्यपस्यत्र्यायुषम् ॥
यद्देवेषुत्र्यायुषन्तन्नोऽअस्तुत्र्यायुषम् ॥७॥

भाष्यम्–जमदग्नेः = मुनेः, त्र्यायुषम् = बाल्ययौवनवार्धक्यायुषाणां समाहारः, तथा कश्यपस्य = मुनेः, त्र्यायुषम् = आयुषाणां त्रितयं, तथा देवेषु = इन्द्रप्रभृतिषु, यत् त्र्यायुषं, तत्सर्वं नः = अस्माकं यजमानस्य, अस्तु = भूयात्।

हिन्दी–हे रुद्र ! जमदग्नि, कश्यप तथा इन्द्रादि देवताओं के जो तीनों अवस्थाओं के चरित्र हैं, उनके अनुरूप हमारे यजमान भी चरित्रवान् एवं दीर्घायु हों ॥७॥

विनियोगः–ॐ शिवोनामासीत्यस्य नारायण ऋषिः, भुरिग्जगती छन्दः, क्षुरग्रहणे वपने च विनियोगः।

शिवोनामासिस्वधितिस्तेपितानमस्तेऽअस्तुमामाहिꣳसीः ॥ निर्वर्त्तयाम्म्यायुषेन्नाद्द्यायप्प्रजननायरायस्प्पोषाय सुप्प्रजास्त्वाय सुवीर्य्याय ॥८॥

इति रुद्रे षष्ठोऽध्यायः ॥

भाष्यम्–हे क्षुर ! त्वं, नाम = नाम्ना, शिवः = शान्तिकर्ता, असि, स्वधितिः = वज्रं, ते = तव, पिता = जनकः, ते = तुभ्यं, नमः अस्तु, मा = माम्, मा हिंसी = मा मारय, हे यजमान ! त्वां, निर्वर्तयामि = मुण्डितशिरस्कं करोमि, किमर्थम्? आयुषे = दीर्घजीवनाय, अन्नाद्याय = अन्नभक्षणाय, प्रजननाय = प्रजोत्पादनाय, रायस्पोषाय = धनसमृद्ध्यर्थं, सुप्रजास्त्वाय = सत्सन्तानाय, सुवीर्याय = उत्तमसामर्थ्याय ।

हिन्दी–क्षुर में अधिष्ठित हे रुद्रदेव ! आप अपने नाममात्र से ही कल्याणकारक हैं, वज्र आपका पिता है। आपको नमस्कार है, आप हमारी हिंसा न करें अर्थात् रक्षा करें । हे यजमान ! दीर्घजीवन, अन्न आदि के भक्षण, प्रजा, धन, शक्ति और सुन्दर सन्तान की प्राप्ति के लिए आपका क्षौरकर्म (मुण्डन) करते हैं ॥८॥

इति नैनीतालमण्डलाभिजनश्रौतस्मार्तधर्मधुरन्धर**पण्डिततारादत्तात्मज-श्रीब्रह्मानन्दत्रिपाठि**कृत-श्रीरुद्राष्टाध्याय्यां संस्कृतभाष्य-हिन्दीटीकाभ्यां संवलितः षष्ठोऽध्यायः ॥६॥

विशेष–भूमिका में शतरुद्री का जो प्रकार वर्णित है, उसमें निम्नलिखित दो मन्त्रों की भी परम आवश्यकता होती है। ये मन्त्र अन्य रुद्राष्टाध्यायी में प्राय: नहीं देखे जाते। अत: इनको यहाँ उद्धृत किया गया है।

विनियोग:–ॐ नतमित्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषि:, आर्षीत्रिष्टुप् छन्द:, रुद्रो देवता पाठे विनियोग:।

न तं विदाथ य इमा जजानान्यद्युष्माकमन्तरं बभूव ।
नीहारेण प्रावृता जल्प्या चासुतृप उक्थशासश्चरन्ति ॥१॥

भाष्यम्–अथ य: = परमात्मा, इमा = इदं सर्वं जगत्, आजजानाम् = उत्पादयामास, स: ईश्वर: नीहारेण = हिमेन, प्रावृता = आच्छादिता, न = इव, अन्तरम् = भिन्नं, बभूव, जल्प्या = स्तुतिभि:, असुतृप = स्वर्गलाभार्थम्, उक्थशास: = यज्ञानुष्ठानं कुर्वन्त:, चरन्ति = भ्रमन्ति, तं विद = जानीहि ।

हिन्दी–जिस परमात्मा से यह संसार उत्पन्न हुआ है वह आपसे पृथक् होने पर भी आपके हृदय में स्थित है। जो मानव पुत्र आदि अथवा स्वर्गप्राप्ति के लिए यज्ञादि का अनुष्ठान करते हैं, वे इसका वास्तविक तत्त्व नहीं जानते, वही वास्तव में ज्ञातव्य है ॥१॥

विनियोग:–ॐ विश्वकर्मेत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषि:, आर्षीत्रिष्टुप् छन्द:, रुद्रो देवता पाठे विनियोग:।

विश्वकर्मा ह्यजनिष्ट देव आदिद्गन्धर्वो अभवद् द्वितीय: ।
तृतीय: पिता जनितौषधीनामपां गर्भं व्यदधात् पुरुत्रा ॥२॥

भाष्यम्–विश्वकर्मा = प्रजापति:, (अत्र विश्वकर्मापदेन जगत्सृष्टा प्रजापतिरभिमत:।) आदिद् = आदौ, देव: = देवगणान्, अजनिष्ट = उत्पादयामास, द्वितीय: = तत:, गन्धर्व: = गन्धर्वजातीयान्, तृतीय:, अपां = जलानां, गर्भं व्यदधात्, पर्जन्यरूपेण, अयं पर्जन्य:, पुरुत्रा = बहुत्र, ओषधीनां = रोगनिवारणक्षमलतागुल्मादीनां, पिता = रक्षक:, हि = इति निश्चयेन ।

हिन्दी–विश्वकर्मा अर्थात् जगत्स्रष्टा प्रजापति ने सर्वप्रथम देवगणों की, तदनन्तर द्वितीय सृष्टि गन्धर्व जाति की और तीसरी सृष्टि पानी की की है अर्थात् पानी को गर्भ रूप में धारण करने वाले बादलों की है। ये औषधियों के उत्पादक पर्जन्य अनेक स्थलों में जलवर्षण करते हैं ॥२॥

अथ सप्तमोऽध्यायः

(रुद्रजटासूक्तम्)

विनियोगः–ॐ उग्रश्चेत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः, गायत्री छन्दः, मरुतो देवता अरण्ये विमुखपुरोडाशहोमे विनियोगः।

हरिः ॐ ॥ उ॒ग्रश्च॑। भी॒मश्च॑ध्वा॒न्तश्च॑धु॒निश्च ॥ सा॒स॒ह्वाँश्चा॑भियु॒ग्वाच॑वि॒क्षिपः॒स्वाहा॑ ॥१॥

भाष्यम्–उग्रः = उत्कृष्टः, च, भीमः = भयावहः, च ध्वान्तः = शब्दकारकः, च, धुनिः = शत्रुवित्रासनशीलः, च, सासह्वान् = शत्रूणाम्पराजयिता, च, अभियुग्वा = अस्मत्सम्मुखं प्राप्नोति, च, विक्षिपः = शत्रुविक्षेपकर्ता, इत्थम्भूता एते सप्त मरुतः तेभ्यः, स्वाहा = सुहुतं भवतु।

हिन्दी–उग्र, भयंकर, जोर से आवाज करने वाले, शत्रुओं को कँपाने वाले, शत्रुओं को हराने वाले, युद्ध के लिए हमारा सामना करने वाले, शत्रुओं को फेंक देने का सामर्थ्य रखने वाले सात मरुत् देवताओं के प्रति स्वाहा ॥१॥

विनियोगः–ॐ अग्निमित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः, भुरिग्ब्राह्मी त्रिष्टुप्छन्दः, यजमानो देवता, अश्वाङ्गदेवताभ्यश्चतुर्गृहीताज्याहुतिदाने विनियोगः।

अ॒ग्निᳬहृद॑येना॒शनिᳬहृदया॒ग्रेण॑पशु॒पति॑ङ्कृत्स्न॒हृद॑येनभ॒वँय्य॒क्ना ॥ श॒र्व्वम्मत॑स्नाभ्या॒मीशा॑नम्म॒न्युना॑महादे॒वम॑न्तःपर्श॒व्येनो॒ग्रन्दे॒वंव्व॑-नि॒ष्ठुना॑व्वसिष्ठ॒हनुः॑शि॒ङ्गीनि॑को॒श्याभ्या॑म् ॥२॥

भाष्यम्–हृदयेन = मनसा, अग्निम् = हुतवहं प्रसादयामि, हृदयाग्रेण = हृदयस्य पुरोभागेन, अशनिं = वज्रधारिणं देवं प्रीणामि, कृत्स्नहृदयेन = सम्पूर्णहृदयेन, पशुपतिं = शिव, यक्ना = यकृता, भवं = संसारात्मकं देवं, मत्स्नाभ्यां = हृदयास्थिभ्यां, शर्वं = शिवं, मन्युना = क्रोधेन, ईशानम् = पशुपतिम्, अन्तःपर्शव्येन = पार्श्वास्थि-संश्लिष्टमांसेन, महादेवेन = देवाधिपतिना, वनिष्ठुना = स्थूलान्त्रेण, उग्रं देवं,

वसिष्ठहनुः = वसिष्ठ-कपोलदेशौ, कोश्याभ्यां = हृदयस्थमांसपिण्डाभ्याम्, च, शिङ्गीनि = एतत्संज्ञकानि दैवतानि प्रीणामि।

हिन्दी–हृदय से अग्निदेव को, हृदय के अग्रभाग से अशनिदेव को, सम्पूर्ण हृदय से पशुपतिदेव को, यकृत् से प्रभवदेव को, हृदयास्थि द्वारा शर्वदेव को, अश्वसम्बन्धी क्रोध से ईशानदेव को, पार्श्वास्थि संलग्न मांस से महादेव को, स्थूलान्त्र से उग्रदेव को, कपोल से तथा हृदय में स्थित मांसपिण्ड से शिंगीसंज्ञक देवों को प्रसन्न करता हूँ ॥२॥

विनियोगः–ॐ उग्रमित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः, निच्यृद्ब्राह्मी त्रिष्टुप् छन्दः, यजमानो देवता आज्याहुतिदाने विनियोगः।

उग्रँल्लोहिँतेन। मित्रꣳसौव्व्रँत्त्येनरुद्द्रन्दौर्व्व्रँत्त्येनेन्द्रम्प्रक्रीडेनमरुतो-बलेनसाद्ध्यान्प्रमुदा ॥ भवस्यकण्ठ्यꣳरुद्रस्यान्तःपाश्र्व्यम्महादेव-स्ययकृच्छर्व्वस्यव्वनिष्ठुः पशुपतेःपुरीतत् ॥३॥

भाष्यम्–लोहितेन = रक्तेन, उग्रं देवं प्रीणामि, सौव्रत्येन = शोभनेन कर्मणा, मित्रदेवं, दौर्व्रत्येन = दुर्वृत्यकरणाय प्रवृत्तशोणितेन रुद्रदेवं, प्रक्रीडेन = क्रीडितुं समर्थेन रक्तेन, इन्द्रं देवं, बलेन = सामर्थ्येन, मरुतो देवान्, प्रमुदा = प्रसन्नतया साध्यदेवान्, भवस्य = भवदेवस्य, कण्ठ्यं = कण्ठभवमांसेन, प्रीणामि, अन्तःपार्श्वम् = पार्श्वमध्यस्थमांसेन रुद्रस्य, यकृत् = यकृतः रक्तेन, महादेवस्य, वनिष्ठुः = स्थूलान्त्रं, शर्वस्यास्तु, पुरीतत् = हृदयाच्छादकम्, अन्त्रम् = पशुपतेरस्तु।

हिन्दी–लोहित से उग्रदेव को, श्रेष्ठ कर्मों से मित्रदेव को, दुर्व्यवहार के लिए प्रवृत्त रक्त से रुद्रदेव को, क्रीडातत्पर रक्त से इन्द्रदेव को, बल प्रकट करने में समर्थ रक्त से मरुत्-गणों को, प्रसन्नता प्रकट करने वाले रक्त से साध्यदेव को, गले में स्थित रक्त से भवदेव को, पसलियों के रक्त से रुद्रदेव को, यकृत् के रक्त से महादेव को, स्थूलान्त्र के रक्त से शर्वदेव को और हृदयाच्छादक रक्त से पशुपतिदेव को मैं प्रसन्न करता हूँ ॥३॥

विनियोगः–ॐ लोमभ्यः इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः, चतुरक्षरमन्त्राणां दैवीबृहती-छन्दः, पञ्चाक्षरमन्त्राणां दैवीपङ्क्तिश्छन्दः, षडक्षरमन्त्राणां दैवीत्रिष्टुप्छन्दः, अङ्गानि देवता प्रायश्चित्ताहुतिदाने विनियोगः।

लोमभ्यःस्वाहा लोमभ्यःस्वाहात्त्वचेस्वाहात्त्वचेस्वाहा लोहिँताय-स्वाहालोहिँतायस्वाहामेदोभ्यःस्वाहामेदोभ्यःस्वाहा ॥ माꣳसेभ्य-

ह्स्वाहामा ॅं सेभ्यः स्वाहास्नावभ्यः स्वाहास्नावभ्यः स्वाहाऽस्थभ्यः स्वाहाऽस्थभ्यः स्वाहामज्जभ्यः स्वाहामज्जभ्यः स्वाहा ॥ रेतसेस्वाहापायवेस्वाहा ॥४॥

भाष्यम्–इतः परं क्रमेण लोमाद्यङ्गानां द्विचत्वारिंशत् प्रायश्चित्ताहुतयो विलिख्यन्ते— लोमभ्यः स्वाहाः = लोमानि जुहोमि, त्वचे, लोहिताय = रक्ताय, मेदोभ्यः, मांसेभ्यः, स्नावभ्यः = स्नायुभ्यः, अस्थभ्यः = अस्थिभ्यः, मज्जभ्यः = मज्जधातवे, रेतसे = वीर्याय, पायवे = गुदाय, स्वाहा इति सर्वत्रान्वयः।

हिन्दी–१ लोमों के लिए, २ लोमों के लिए, ३ त्वचा के लिए, ४ त्वचाओं के लिए, ५ लोहित के लिए, ६ लोहित के लिए, ७ मेदस् के लिए, ८ मेदस् के लिए, ९ मांस के लिए, १० मांस के लिए, ११ स्नायुओं के लिए, १२ स्नायुओं के लिए, १३ अस्थियों के लिए, १४ अस्थियों के लिए, १५ मज्जा के लिए, १६ मज्जा के लिए, १७ वीर्य के लिए और १८ गुद के लिए सुहुत हो।

विशेष–ये ४२ आहुतियाँ (मन्त्र ४ से ७ तक की) प्रेतदाहोक्त प्रकरण की हैं। इन मन्त्रों को पढ़कर प्रेत के शरीरावयवों का दाह किया जाता है ॥४॥

विनियोगः–ॐ आयासायेत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः, चतुरक्षरमन्त्राणां दैवीबृहतीछन्दः, पञ्चाक्षरमन्त्राणां दैवीपङ्क्तिश्छन्दः, षडक्षरमन्त्राणां दैवीत्रिष्टुप्छन्दः, सप्ताक्षरमन्त्राणां दैवीत्रिष्टुप्छन्दः, आयासादयो देवताः प्रायश्चित्ताहुतिहोमे विनियोगः।

आयासायस्वाहा प्रायासायस्वाहासँय्यासायस्वाहावियासायस्वाहोद्द्यासायस्वाहा ॥ शुचेस्वाहाशोचतेस्वाहाशोचमानायस्वाहा शोकायस्वाहा ॥५॥

भाष्यम्–आयासाय, प्रायासाय, संयासाय, वियासाय, उद्यासाय, शुचे, शोचते, शोचमानाय, शौकाय— एभ्यो नवभ्यो देवेभ्यः स्वाहा = सुहुतमस्तु।

हिन्दी–१९ आयास(देहपरिश्रमरूप)देव के, २० प्रायास(इन्द्रियपरिश्रमरूप) देव के, २१ संयास (मानसपरिश्रमरूप) देव के, २२ वियास (बुद्धिपरिश्रमरूप) देव के, २३ उद्यास (प्राणिपरिश्रमरूप) देव के, २४ शुचदेव के, २५ शोचत् देव के, २६ शोचमानदेव के और २७ शोकदेव के निमित्त सुहुत हो ॥५॥

विनियोगः–ॐ तपस इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः, पञ्चाक्षरमन्त्राणां प्रजापतिर्ऋषिः, षडक्षरमन्त्राणां दैवीत्रिष्टुप् छन्दः, सप्ताक्षरमन्त्राणां दैवीत्रिष्टुप् छन्दः, तपस आदयो देवताः प्रायश्चित्ताहुतिहोमे विनियोगः।

तप॑से॒स्वाहा॒ तप्प्य॑ते॒स्वाहा॒तप्प्य॑मानाय॒स्वाहा॑त॒प्ताय॒स्वाहा॑घ॒र्म्माय॒-स्वाहा॑ ॥ निष्कृ॑त्त्यै॒स्वाहा॒प्प्राय॑श्चित्त्यै॒स्वाहा॑भेष॒जाय॒स्वाहा॑ ॥६॥

भाष्यम्–तपसे, तप्यते, तप्यमानाय, तप्ताय, घर्माय, निष्कृत्यै, प्रायश्चित्त्यै, भेषजाय स्वाहा।

हिन्दी–२८ तप के लिए, २९ तप्यत् के लिए, ३० तप्यमान के लिए, ३१ तप्त के लिए, ३२ घर्म के लिए, ३३ निष्कृति के लिए, ३४ प्रायश्चित्त के लिए और ३५ भेषज के लिए सुहुत हो ॥६॥

विनियोगः–ॐ यमायेति प्रजापतिर्ऋषिः, पञ्चाक्षरमन्त्राणां प्रजापतिर्ऋषिः, षडक्षरमन्त्राणां दैवीत्रिष्टुप् छन्दः, सप्ताक्षरमन्त्राणां दैवीत्रिष्टुप् छन्दः, अष्टाक्षरमन्त्राणां दैवीत्रिष्टुप् छन्दः, यमादयो देवताः प्रायश्चित्ताहुतिहोमे विनियोगः।

य॒माय॒स्वाहान्त॑काय॒स्वाहा॑मृत्त्यवे॒स्वाहा॑ ॥ ब्रह्म॑णे॒स्वाहा॑ब्ब्रह्महत्त्यायै॒-स्वाहा॒व्विश्वे॑ब्भ्यो दे॒वेब्भ्यः॒स्वाहा॒द्द्यावा॑पृथि॒वीब्भ्या॒ᳬस्वाहा॑ ॥७॥

इति रुद्रे सप्तमोऽध्यायः ॥

भाष्यम्–यमाय = यमराजाय, अन्तकाय = कालाय, मृत्यवे = मृत्युसंज्ञकाय, ब्रह्मणे = परमात्मने, ब्रह्महत्यायै, विश्वेभ्यो देवेभ्यः = एतन्नामकेभ्यो देवेभ्यः, द्यावापृथिवीभ्यां, स्वाहा = सुहुतमस्तु।

हिन्दी–३६ यमराज के लिए, ३७ अन्तक के लिए, ३८ मृत्यु के लिए, ३९ ब्रह्मा के लिए, ४० ब्रह्महत्या के लिए, ४१ सम्पूर्ण देवताओं के लिए, ४२ भूलोक से स्वर्ग पर्यन्त समस्त देवताओं के लिए यह पूर्णाहुति सुहुत हो ॥७॥

इति नैनीतालमण्डलाभिजनश्रौतस्मार्तधर्मधुरन्धर**पण्डिततारादत्तात्मज-श्रीब्रह्मानन्दत्रिपाठि**कृत-श्रीरुद्राष्टाध्याय्यां संस्कृतभाष्य-हिन्दीटीकाभ्यां संवलितः सप्तमोऽध्यायः ॥७॥

अथाष्टमोऽध्यायः

(चमकानुवाकः)

विनियोगः–ॐ वाजश्चम इत्यस्य देवा ऋषयः, शक्वरी छन्दः, अग्निर्देवता वसोर्धाराहुतिहोमे विनियोगः।

हरिः ॐ ॥ व्वाजश्चमेप्रसुवश्चमेप्रयतिश्चमेप्रसितिश्चमेधीतिश्चमेक्रतुश्चमेस्वरश्चमेश्लोकश्चमेश्रवश्चमेश्रुतिश्चमेज्ज्योतिश्चमेस्वश्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥१॥

भाष्यम्– वाजः = अन्नादीनि, मे = मम, कल्पन्तां = सम्पन्ना भवन्तु इति सर्वत्रान्वयः, प्रसवः = अन्नदानस्य अनुज्ञा, प्रयतिः = शुद्धिः, प्रसितिः = अन्नसम्बन्धि उत्सुकता, धीतिः = ध्यानम्, क्रतुः = यज्ञः, स्वरः = शब्दः, श्लोकः = स्तुतिः, श्रवः = श्रवणशक्तिः, श्रुतिः = वेदमन्त्राः, ज्योतिः = प्रकाशः, स्वः = स्वर्गः। एष यज्ञः अस्मभ्यम् अन्नादिपदार्थानां दाता भवत्वित्याशयः।

हिन्दी–इस यज्ञ के प्रसाद से देवगण मेरे लिए अन्न, अन्नदान की आज्ञा, उत्सुकता, ध्यान, यज्ञ, शब्द, स्तुति, वेदमन्त्रों का श्रवण, प्रकाश और स्वर्ग प्रदान करें ॥१॥

विनियोगः–ॐ प्राण इत्यस्य देवा ऋषयः, निच्यृदतिजगती छन्दः, अग्निर्देवता वसोर्धाराहुतिहोमे विनियोगः।

प्राणश्चमेऽपानश्चमेव्यानश्चमेसुश्चमेचित्तञ्चमऽआधीतञ्चमेव्वाक्चमेमनश्चमेचक्षुश्चमेश्रोत्रञ्चमेदक्षश्चमेबलञ्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम्॥२॥

भाष्यम्– प्राणः = ऊर्ध्वगः शरीरवायुः, अपानः = अधोगः वायुः, व्यानः = सर्वशरीरगः वायुः, असुः = प्राणात्मको वायुः, चित्तं = मानसः सङ्कल्पः, आधीतम् =

बहिर्भवं ज्ञानं, वाक् = वागिन्द्रियम्, मनः = मानसं, चक्षुः = नेत्रं, श्रोत्रं = श्रवणं, दक्षः = ज्ञानेन्द्रियचातुर्यम्, बलं = कर्मेन्द्रियचातुर्यम्, एतानि सर्वाणि, मे = मम, यज्ञेन कल्पन्ताम्।

हिन्दी–मेरे लिए प्राणवायु, अपानवायु, व्यानवायु, प्राणात्मक असुवायु, मानस संकल्प, बाह्यविषयक ज्ञान, वाणी का सामर्थ्य, मन, नेत्र, श्रवण, ज्ञानेन्द्रिय तथा कर्मेन्द्रिय की चतुरता— ये सब यज्ञफल से प्राप्त हों ॥२॥

विनियोगः–ॐ ओज इत्यस्य देवा ऋषयः, भुरिक् शक्वरी छन्दः, अग्निर्देवता वसोर्धाराहुतिहोमे विनियोगः।

ओजश्चमेसहश्चमऽआत्माचमेतनूश्चमेशर्म्मचमेव्वर्म्मचमेऽङ्गानिचमेऽस्थीनिचमेपरूᳬषिचमेशरीराणिचमऽआयुश्चमेजराचमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥३॥

भाष्यम्–ओजः = अष्टमो धातुः, सहः = शारीरं बलम्, आत्मा = परमात्मा, तनूः = शरीरं, शर्म = सुखं, वर्म = कवचम्, अङ्गानि = हस्तपादाद्याः, अस्थीनि = कीकसानि, परूंषि = अङ्गुलीस्थपर्वाणि, शरीराणि = देहावयवाः, आयुः = जीवनं, जरा = वार्धक्यम्, एते मे = मम, यज्ञेन कल्पन्ताम् = यज्ञकर्तृकेन फलेन सम्पद्यन्ताम्।

हिन्दी–ओजो धातु, शारीरिक बल, आत्मा, सुन्दर शरीर, सुख, कवच, हाथ-पैर आदि अंग, अस्थियाँ, अंगुली आदि के पर्व, शरीर के अवशिष्ट अंग, आयु और वृद्धावस्था— यज्ञ द्वारा इन सबकी मुझे प्राप्ति हो ॥३॥

विनियोगः–ॐ ज्येष्ठमित्यस्य देवा ऋषयः, निच्यृदत्यष्टिश्छन्दः, अग्निर्देवता वसोर्धाराहुतिहोमे विनियोगः।

ज्ज्यैष्ठ्यञ्चमऽआधिपत्त्यञ्चमेमन्युश्चमेभामश्चमेऽमश्चमेऽम्भश्चमेजेमाचमेमहिमाचमेव्वरिमाचमेप्प्रथिमाचमेव्वर्षिमाचमेद्राघिमाचमेव्वृद्धञ्चमेव्वृद्धिश्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥४॥ (न.)

भाष्यम्–ज्यैष्ठ्यम् = प्रधानत्वम्, आधिपत्यं = स्वामित्वम्, मन्युः = मानसिकः क्रोधः, भामः = बहिर्भवः क्रोधः, अमः = अपरिमेयत्वम्, अम्भः = जलं, जेमा = जयशक्तिः, महिमा = महत्त्वं, वरिमा = विशालता, प्रथिमा = गृहादिविस्तारः, वर्षिमा =

दीर्घजीविता, द्राघिमा = वंशपरम्परालाभः, वृद्धम् = पर्याप्तमन्नधनादि, वृद्धिः = विद्यादिगुणोत्कर्षः, इमे सर्वे मे = मम यज्ञेन कल्पन्ताम्।

हिन्दी–प्रधानता, स्वामित्व, मानसिक तथा बाहरी क्रोध, निःसीमता, जल, जयशक्ति, महत्त्व, विशालता, घर आदि का विस्तार, दीर्घजीवन, वंशपरम्परा की वृद्धि, धन-धान्य का लाभ, विद्या आदि गुणों की वृद्धि— ये सब मुझे यज्ञ द्वारा प्राप्त हों ।।४।।

विनियोगः–ॐ सत्यमित्यस्य देवा ऋषयः, विराट् शक्वरी छन्दः, अग्निर्देवता वसोर्धाराहुतिहोमे विनियोगः।

सत्त्यञ्चमे श्श्रद्धाचमेजगच्चमेधनञ्चमेव्विश्श्वञ्चमेमहश्चमेक्रीडाचमेमोदश्चमेजातञ्चमेजनिष्ष्यमाणञ्चमेसूक्तञ्चमेसुकृतञ्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम् ।।५।।

भाष्यम्–सत्यं = सम्यक्भाषित्वं, श्रद्धा = गुर्वादिवचनेषु विश्वासः, जगत् = जङ्गमं, धनं = स्वर्णादि, विश्वं = स्थावरम्, महः = कान्तिः, क्रीडा = द्यूतादि-क्रीडनम्, मोदः = हर्षः, जातम् = अपत्यं, जनिष्यमाणन् = भविष्यत्सन्ततिः, सूक्तं = ऋक्समूहः, सुकृतं = पुण्यं, मे = मम यज्ञेन कल्पन्ताम्।

हिन्दी–सत्यभाषण, गुरुजनों के वचनों के प्रति विश्वास, जंगम जगत्, स्वर्ण आदि धन, स्थावर जगत्, कान्ति, द्यूत आदि क्रीड़ाएँ, हर्ष, पुत्र-पौत्र आदि सन्तान, वेदों की ऋचाएँ और पुण्य— ये सब यज्ञ के द्वारा मुझे प्राप्त हों ।।५।।

विनियोगः–ॐ ऋतमित्यस्य देवा ऋषयः, भुरिगतिशक्वरी छन्दः, अग्निर्देवता वसोर्धाराहुतिहोमे विनियोगः।

ऋतञ्चमेऽमृतञ्चमेऽयक्ष्मञ्चमेऽनामयच्चमेजीवातुश्चमेदीर्घायुत्त्वञ्चमेऽनमित्रञ्चमेऽभयञ्चमेसुखञ्चमेशयनञ्चमेसूषाश्चमेसुदिनञ्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम् ।।६।।

भाष्यम्–ऋतं = यज्ञादि सत्कर्म, अमृतं = स्वर्गादि, अयक्ष्मः = क्षयरोगाद्यभावः, अनामयत् = नीरोगता, जीवातुः = जीवनप्रदं भेषजं रसायनादि, दीर्घायुत्वम् = आयुष्मत्ता, अनमित्रं = निःशत्रुता, अभयम् = भीत्यभावः, सुखम् = प्रमोदः, शयनं =

शय्या, सूषाः = शोभनः प्रातःकालः, सुदिनं = सत्कर्मयुक्तम् अहः, एते मे = मम, यज्ञेन कल्पन्ताम् = सिद्ध्यन्तु ।

हिन्दी–यज्ञादि सत्कर्म, स्वर्ग, रोग का अभाव, रसायनों का सेवन, दीर्घायुष्य, शत्रुओं का अभाव, निर्भयता, सुख, शय्या, सुप्रभात और सुदिन— इन सबकी प्राप्ति मुझे यज्ञ द्वारा हो ॥६॥

विनियोगः–ॐ यन्ता चेत्यस्य देवा ऋषयः, निच्यृदतिजगती छन्दः, अग्निर्देवता वसोर्धाराहुतिहोमे विनियोगः।

यन्ताचमेधर्त्ताचमेक्षेमश्चमेधृतिश्चमेव्विश्वञ्चमेमहश्चमेसंव्विच्च-मेज्ञात्रञ्चमेसूश्चमेप्रसूश्चमेसीरञ्चमेलयश्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥७॥

भाष्यम्–यन्ता = घोटकादेर्नियन्त्रकः, धर्ता = आत्मीयानां पोषकः, क्षेमः = विद्यमानधनस्य रक्षणं, धृतिः = धैर्यं, विश्वम् = आनुकूल्यम्, महः = उत्सवः, पूजा, संवित् = ज्ञानं, ज्ञात्रं = विज्ञानं, सूः = पुत्रादिप्रेरणम्, प्रसूः = पुत्रोत्पत्त्यादिशक्तिः, सीरं = धान्यनिष्पत्तिः, लयः = कृषिकर्मनिवृत्तिः, एते, मे = मम, यज्ञेन कल्पन्ताम् ।

हिन्दी–घोड़े का नियन्ता (सारथी), आत्मीयों का रक्षक, विद्यमान धन की रक्षा, धैर्य, अनुकूलता, पूजा, ज्ञान, विज्ञान, पुत्र आदि की प्रेरणशक्ति, पुत्रोत्पत्ति की शक्ति, धान्य की प्राप्ति, कृषि के प्रतिबन्धकता की निवृत्ति और वृष्टि का समुचित होना— इन सब की प्राप्ति मुझे यज्ञ द्वारा हो ॥७॥

विनियोगः–ॐ शमित्यस्य देवा ऋषयः, विराट्शक्वरी छन्दः, अग्निर्देवता वसोर्धाराहुतिहोमे विनियोगः।

शञ्चमेमयश्चमेप्प्रियञ्चमेऽनुकामश्चमेकामश्चमेसौमनसश्चमेभ-गश्चमेद्द्रविणञ्चमेभद्रञ्चमेश्श्रेयश्चमेव्वसीयश्चमेयशश्चमेयज्ञेन-कल्प्पन्ताम् ॥८॥ (न.)

भाष्यम्–शम् = ऐहलौकिकं सुखम्, मयः = पारलौकिकं सुखम्, प्रियम् = प्रीतिजनकम्, अनुकामः = यत्नसाध्यं वस्तु, कामः = इच्छानुकूलं वस्तु, सौमनसः = आत्मीयवर्गः, भगः = सैभाग्यम्, द्रविणं = धनम्, भद्रं = कल्याणं, श्रेयः = पारलौकिकं कल्याणम्, वसीयः = वासयोग्यो गृहादिः, यशः = कीर्तिः, एते मम यज्ञेन कल्पन्ताम् ।

हिन्दी–इस लोक तथा परलोक का सुख, प्रीतिकारक पदार्थ, सुखसाध्य पदार्थ, सुखभोग, बन्धुवर्ग, सौभाग्य, धन, इस लोक तथा परलोक का कल्याण, निवासयोग्य घर और सुयश— इन सब पदार्थों की प्राप्ति मुझे यज्ञ द्वारा हो ॥८॥

विनियोगः–ॐ ऊर्क्चेत्यस्य देवा ऋषयः, शक्वरी छन्दः, अग्निर्देवता वसोर्धाराहुतिहोमे विनियोगः।

ऊर्क्चमेसूनृताचमेपयश्चमेरसश्चमेघृतञ्चमेमधुचमेसग्धिश्चमे-सपीतिश्चमेकृषिश्चमेवृष्टिश्चमेजैत्रञ्चमऽऔद्भिद्यञ्चमेयज्ञेन-कल्पन्ताम् ॥९॥

भाष्यम्–ऊर्क्च = अन्नं, सूनृता = प्रिया वाक् पयः = दुग्धं, रसः = सारः, घृतं = गव्यम्, मधु = माक्षिकं, सग्धिः = सहभोजनं, सपीतिः = सहपानं, कृषिः = धान्यसिद्धिः, वृष्टिः = वर्षणं, जैत्रं = जयसामर्थ्यम्, औद्भिद्यं = वृक्षाद्युत्पत्तिः, एते मम यज्ञेन कल्पन्ताम्।

हिन्दी–अन्न, प्रियवाणी, दूध, सारवस्तु, घी, शहद, साथ का खान-पान, अच्छी खेती, उत्तम वर्षा, विजय की शक्ति और वृक्ष आदि की उत्पत्ति— इन सब पदार्थों की प्राप्ति मुझे यज्ञ द्वारा हो ॥९॥

विनियोगः–ॐ रयिश्चेत्यस्य देवा ऋषयः, निच्यृच्छक्वरी छन्दः, अग्निर्देवता वसोर्धाराहुतिहोमे विनियोगः।

रयिश्चमेरायश्चमेपुष्टञ्चमेपुष्टिश्चमेविभुचमेप्रभुचमेपूर्णञ्चमे-पूर्णतरञ्चमेकुयवञ्चमेऽक्षितञ्चमेऽन्नञ्चमेऽक्षुच्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम्॥१०

भाष्यम्–रयिः = सुवर्णं, रायः = मुक्तादयः, पुष्टं = धनं, पुष्टिः = शारीरिकं पोषणं, विभुः = व्यापकत्वम्, प्रभुः = प्रभुता, पूर्णं = धनपुत्रादिसमृद्धिः, पूर्णतरं = ततोऽप्यधिकं पूर्णत्वं, कुयवं = कुत्सितधान्यम्, अक्षितं = क्षयहीनम्, अन्नम् = ओदनादि, क्षुत् = क्षुधा, एते मम यज्ञेन कल्पन्ताम्।

हिन्दी–सुवर्ण, मोती, धन, शरीर की पुष्टि, व्यापकता, प्रभुता, धन, पुत्र आदि की समृद्धि, हाथी-घोड़े आदि की पर्याप्तता, जौ आदि से मिले-जुले धान

आदि अन्न, अच्छे धान्य चावल, भात आदि और खाये हुए अन्न का सम्यक् परिपाक— इन सब पदार्थों की प्राप्ति मुझे यज्ञ द्वारा हो ।।१०।।

विनियोगः–वित्तमित्यस्य देवा ऋषयः, भुरिक्शक्वरी छन्दः, अग्निर्देवता वसोर्धाराहुतिहोमे विनियोगः।

व्वित्तञ्चमेव्वेद्यञ्चमे भूतञ्चमेभविष्यच्चमेसुगञ्चमेसुपत्थ्यञ्चमऽऋद्धञ्चमऽऋद्धिश्चमेक्लृप्तञ्चमेक्लृप्तिश्चमेमतिश्चमेसुमतिश्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम् ।।११।।

भाष्यम्–वित्तम् = पूर्वप्राप्तं द्रविणं, वेद्यम् = प्राप्तव्यम्, भूतम् = पूर्वसिद्धं क्षेत्रादि, भविष्यत् = जायमानं क्षेत्रादि, सुगं = सुगम्यो देशः, सुपथ्यं = शोभनं हितकरञ्च, ऋद्धं = समृद्धम्, ऋद्धिः = यज्ञीयसमृद्धिः, क्लृप्तं = द्रव्यादि , क्लृप्तिः = स्वकार्यपूरणक्षमता, मतिः = बुद्धिः, सुमतिः = निर्णयात्मिका बुद्धिः, एते मम यज्ञेन कल्पन्ताम् ।

हिन्दी–पहिले से प्राप्त धन, मिलने वाला धन, पहले से प्राप्त तथा बाद में मिलने वाले खेत आदि, सुखद देश, सम्यक् ज्ञानशक्ति, हितकर वस्तु, यज्ञ का सत्फल, कार्यसाधक धन, अपने कार्य करने की क्षमता, पदार्थों का ज्ञान और सुमति— इन सब पदार्थों की प्राप्ति मुझे यज्ञ द्वारा हो ।।११।।

विनियोगः–ॐ व्रीहय इत्यस्य देवा ऋषयः, भुरिगतिशक्वरी छन्दः, अग्निर्देवता वसोर्धाराहुतिहोमे विनियोगः।

व्व्रीहयश्चमेयवाश्चमेमाषाश्चमेतिलाश्चमेमुद्गाश्चमेखल्ल्वाश्चमेप्रियङ्गवश्चमेऽणवश्चमेश्श्यामाकाश्चमेनीवाराश्चमेगोधूमाश्चमेमसूराश्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम् ।।१२।। (न.)

भाष्यम्–व्रीहयः, यवाः, माषाः, तिलाः, मुद्गाः, खल्वाः = चणकाः, प्रियङ्गवः = कङ्गवः, अणवः = चीनकाः, श्यामाकाः = कोद्रवाः, नीवाराः = मुन्यन्नानि, गोधूमाः = सुमनाः, मसूराः च पूर्वोक्तानि धान्यानि, मे = मम, यज्ञेन कल्पन्ताम् ।

हिन्दी–व्रीहिधान्य— जौ, उड़द, तिल, मूँग, चना, कंगुनी, चीनक, साँवा, कोदों, गेहूँ, मसूर— इन अन्नों को यज्ञ के फल से देवगण मुझे दें ।।१२।।

विनियोगः–ॐ अश्मेत्यस्य देवा ऋषयः, भुरिगतिशक्वरी छन्दः, अग्निर्देवता वसोर्धाराहुतिहोमे विनियोगः।

अश्म्माचमेमृत्तिकाचमेगिरयश्चमेपर्व्वताश्चमेसिकताश्चमेव्वनस्प्पतयश्चमेहिरण्ण्यञ्चमेऽयश्चमेश्श्यामञ्चमेलोहञ्चमेसीसञ्चमेत्रपुचमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥१३॥

भाष्यम्–अश्मा = प्रस्तरः, मृत्तिका = उत्तमा मृत्, गिरयः = लघुपर्वताः, पर्वताः = हिमालयादयः, सिकताः = शर्कराः, वनस्पतयः = पुष्पफलैर्विरहिताः उदुम्बरादयः, हिरण्यं = सुवर्णम्, अयः = लोहं, श्यामं = ताम्रलौहं, लोहं = कालायसं, सीसम्, प्रसिद्धमेव, त्रपु = रङ्गम्, एते मे = मम, यज्ञेन कल्पन्ताम्।

हिन्दी–पत्थर, मिट्टी, छोटे-बड़े पर्वत, बालू, वनस्पतियाँ, बिना फूल के फल वाले वृक्ष, गूलर आदि, सोना, चाँदी, लोहा, ताँबा, कान्तलौह, सीसा, राँगा— इन सब पदार्थों की प्राप्ति मुझे यज्ञ द्वारा हो ॥१३॥

विनियोगः–ॐ अग्निरित्यस्य देवा ऋषयः, निच्यृदष्टिश्छन्दः, अग्निर्देवता वसोर्धाराहुतिहोमे विनियोगः।

अग्निश्चमऽआपश्चमेव्वीरुधश्चमऽओषधयश्चमेकृष्टपच्च्याश्चमेकृष्टपच्च्याश्चमेग्राम्म्याश्चमेपशवऽआरण्ण्याश्चमेव्वित्तञ्चमेव्वित्तिश्चमेभूतञ्चमेभूतिश्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥१४॥

भाष्यम्–अग्निः = वह्निः, आपः = जलानि, वीरुधः = गुल्माः, ओषधयः = फलपाकान्ताः, कृष्टपच्याः = भूमिकर्षणादिभिः सम्पाद्या ओषधयः, अकृष्टपच्याः = निसर्गतः प्रतिवर्षमुत्पद्यमाना नीवारादयः, ग्राम्याः = ग्रामीणाः, पशवः = गोमहिष्यादयः, आरण्याः = वन्याः, सिंहव्याघ्रादयः, वित्तम् = पूर्वप्राप्तं धनम्, वित्तिः = भविष्यल्लाभः, भूतम् = पुत्रादिकम्, भूतिः = स्वोपार्जितम् ऐश्वर्यम्, एतानि मे = मम, यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥१४॥

हिन्दी–अग्नि, जल, गुल्म, ओषधियाँ, जो जोतने-बोने पर होती हैं अथवा जो अपने से हो जाती हैं, ग्राम्य पशु गाय, भैंस आदि, वन्य पशु शेर, बाघ, हाथी आदि, पूर्वोपार्जित धन, भविष्य में मिलनेवाला धन, पुत्र आदि सन्तति और अपने द्वारा कमाया गया ऐश्वर्य— इन सब पदार्थों की प्राप्ति मुझे यज्ञ द्वारा हो ॥१४॥

विनियोगः–ॐ वसु चेत्यस्य देवा ऋषयः, विराडार्षीबृहती छन्दः, अग्निर्देवता वसोर्धाराहुतिहोमे विनियोगः।

व्वसुचमेव्वसतिश्चमेकर्म्मचमेशक्तिश्चमेऽर्थश्चमऽएमश्चमऽइत्त्या-चमेगतिश्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥१५॥ (न.)

भाष्यम्–वसु = धनं, वसतिः = वासस्थानं हर्म्यादि, कर्म = अग्निहोत्रादि, शक्तिः = तत्करणसामर्थ्यम्, अर्थः = स्वाभिलषितपदार्थः, एमः = लब्धव्यविषयः, इत्या = प्राप्त्युपायः, गतिः = अभीप्सितस्य लाभः, एते मे = मम, यज्ञेन कल्पन्ताम्।

हिन्दी–धन, गृह, अग्निहोत्र आदि कर्म, इनके करने की क्षमता, इच्छित पदार्थ, प्राप्तव्य विषय, प्राप्ति का उपाय, इच्छित पदार्थों का लाभ— इन सब पदार्थों की प्राप्ति मुझे यज्ञ द्वारा हो ॥१५॥

विनियोगः–ॐ अग्निरित्यस्य देवा ऋषयः, निच्यृद्ब्राह्मीपङ्क्तिश्छन्दः, अग्निर्देवता वसोर्धाराहुतिहोमे विनियोगः।

अग्निश्चमऽइन्द्रश्चमेसोमश्चमऽइन्द्रश्चमेसविताचमऽइन्द्रश्चमेसर-स्वतीचमऽइन्द्रश्चमेपूषाचमऽइन्द्रश्चमेबृहस्प्पतिश्चमऽइन्द्रश्चमेयज्ञे-नकल्प्पन्ताम् ॥१६॥

भाष्यम्–अग्निः, इन्द्रः, सोमः, इन्द्रः, सविता, इन्द्रः, सरस्वती, इन्द्रः, पूषा, इन्द्रः, बृहस्पतिः, इन्द्रः, समानभागत्वात् इन्द्रः सर्वैः सह पठ्यते, एते मे = मम, यज्ञेन कल्पन्ताम्।

हिन्दी–अग्नि इन्द्र, सोम इन्द्र, सविता इन्द्र, सरस्वती इन्द्र, पूषा इन्द्र और बृहस्पति इन्द्र मुझे यज्ञ द्वारा सदैव अनुकूलता प्रदान करें ॥१६॥

विनियोगः–ॐ मित्र इत्यस्य देवा ऋषयः, विराट्शक्वरी छन्दः, अग्निर्देवता वसोर्धाराहुतिहोमे विनियोगः।

मित्रश्चमऽइन्द्रश्चमेव्वरुणश्चमऽइन्द्रश्चमेधाताचमऽइन्द्रश्चमेत्त्वष्टा-चमऽइन्द्रश्चमेमरुतश्चमऽइन्द्रश्चमेव्विश्श्वेचमेदेवाऽइन्द्रश्चमेयज्ञेन-कल्प्पन्ताम् ॥१७॥

भाष्यम्–मित्रः, इन्द्रः, वरुणः, इन्द्रः, धाता, इन्द्रः, त्वष्टा, इन्द्रः, मरुतः, इन्द्रः, विश्वेदेवाः, इन्द्रः, एते मे = मम, यज्ञेन कल्पन्ताम्।

हिन्दी–मित्र इन्द्र, वरुण इन्द्र, धाता इन्द्र, त्वष्टा इन्द्र, मरुत् इन्द्र, विश्वेदेवा इन्द्र— ये सब देवता इन्द्र के साथ मुझे यज्ञ में अनुकूलता प्रदान करें ॥१७॥

विनियोगः–ॐ पृथिवी चेत्यस्य देवा ऋषयः, भुरिक्शक्वरी छन्दः, अग्निर्देवता वसोर्धाराहुतिहोमे विनियोगः।

पृथिवीचमेऽइन्द्रश्चमेऽन्तरिक्षञ्चमऽइन्द्रश्चमेद्यौश्चमऽइन्द्रश्चमेस-माश्चमऽइन्द्रश्चमेनक्षत्राणिचमऽइन्द्रश्चमेदिशश्चमऽइन्द्रश्चमेयज्ञे-नकल्प्पन्ताम् ॥१८॥ (न.)

भाष्यम्–पृथिवी, इन्द्रः, अन्तरिक्षम्, इन्द्रः, द्यौः, इन्द्रः, समाः, इन्द्रः, नक्षत्राणि, इन्द्रः, दिशः, इन्द्रः, एते मे = मम, यज्ञेन कल्पन्ताम्।

हिन्दी–पृथिवी इन्द्र, अन्तरिक्ष इन्द्र, तीनों लोक इन्द्र, वर्षों की अधिष्ठात्री देवता इन्द्र, अश्विनी आदि नक्षत्र इन्द्र, पूर्वादि दिशाएँ इन्द्र— ये सब देवता इन्द्र के साथ मुझे यज्ञ में अनुकूलता प्रदान करें ॥१८॥

विनियोगः–ॐ अंशुरित्यस्य देवा ऋषयः, निच्यृदत्यष्टिश्छन्दः, अग्निर्देवता वसोर्धाराहुतिहोमे विनियोगः।

अꣳशुश्चमेरश्मिश्चमेऽदाभ्यश्चमेऽधिपतिश्चमऽउपाꣳशुश्चमे-ऽन्तर्यामश्चमऽऐन्द्रवायवश्चमेमैत्रावरुणश्चमऽआश्विनश्चमेप्प्रति-प्प्रस्थानश्चमेशुक्रश्चमेमन्थीचमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥१९॥

भाष्यम्–अंशुः, रश्मिः, अदाभ्यः, अधिपतिः = निग्राह्यः, उपांशुः, अन्तर्यामः, ऐन्द्रवायवः, मैत्रावरुणः, आश्विनः, प्रतिप्रस्थानः, शुक्रः, मन्थी, एते ग्रहाः = मे = मम, यज्ञेन कल्पन्ताम्।

हिन्दी–इस मन्त्र से ग्रहों का होम प्रारम्भ होता है। ये ज्योतिषशास्त्रोक्त नव-ग्रहों से अतिरिक्त अन्तरिक्षस्थित ग्रह हैं— अंशु, रश्मि, अदाभ्य, अधिपति, उपांशु, अन्तर्याम, ऐन्द्रवायव, मैत्रावरुण, आश्विन, प्रतिस्थान, शुक्र और मन्थी— यज्ञफल के द्वारा ये ग्रह मुझे प्राप्त हों ॥१९॥

विनियोगः–ॐ आग्रयण इत्यस्य देवा ऋषयः निच्यृदत्यष्टिश्छन्दः, अग्निर्देवता वसोर्धाराहुतिहोमे विनियोगः।

आग्रयणश्चमेव्वैश्वदेवश्चमेद्ध्रुवश्चमेव्वैश्वानरश्चमऽऐन्द्राग्नश्चमेमहाव्वैश्वदेवश्चमेमरुत्त्वतीयाश्चमेनिष्केवल्ल्यश्चमेसावित्रश्चमेसारस्वतश्चमेपात्क्नीवतश्चमेहारियोजनश्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥२०॥

भाष्यम्–आग्रयणः, वैश्वदेवः, ध्रुवः, वैश्वानरः, ऐन्द्राग्नः, महावैश्वदेवः, मरुत्वतीयाः, निष्केवल्यः, सावित्रः, सारस्वतः, पात्क्नीवतः, हारियोजनः, एते मे = मम, यज्ञेन कल्पन्ताम्।

हिन्दी–आग्रयण, वैश्वदेव, ध्रुव, वैश्वानर, ऐन्द्राग्न, महावैश्वदेव, मरुत्वतीय, निष्केवल्य, सावित्र, सारस्वत, पात्क्नीवत और हारियोजन— यज्ञफल के द्वारा ये ग्रह मुझे प्राप्त हों ॥२०॥

विनियोगः–ॐ स्रुच इत्यस्य देवा ऋषयः, विराड्धृतिश्छन्दः, अग्निर्देवता वसोर्धाराहुतिहोमे विनियोगः।

स्रुचश्चमेचमसाश्चमेव्वायव्व्यानिचमेद्रोणकलशश्चमेग्ग्रावाणश्चमेऽधिषवणेचमेपूतभृच्चमऽआधवनीयश्चमेव्वेदिश्चमेबर्हिश्चमेऽवभृथश्चमेस्वगाकारश्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥२१॥ (न.)

भाष्यम्–स्रुचः, चमसाः, वायव्यानि, पात्रविशेषाः, द्रोणकलशः, ग्रावाणः, अधिषवणे = काष्ठपट्टिकायाम्, पूतभृत्, आधवनीयः, वेदिः, बर्हिः, अवभृथः, स्वगाकारः, एते मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।

हिन्दी–स्रुवा, चमस, वायव्य, द्रोणकलश, ग्रावा, अधिषवण, पूतभृत्, आधवनीय, वेदि, बर्हि, अवभृथ और स्वगाकार— यज्ञफल के द्वारा ये देवगण मुझे उपर्युक्त यज्ञीय सामग्री प्रदान करें ॥२१॥

विनियोगः–ॐ अग्निरित्यस्य देवा ऋषयः, भुरिक्शक्वरी छन्दः, अग्निर्देवता वसोर्धाराहुतिहोमे विनियोगः।

अ॒ग्निश्च॑मेघ॒र्म्मश्च॑मे॒ऽर्कश्च॑मे॒सूर्य्य॑श्चमेप्प्रा॒णश्च॑मेऽश्श्वमे॒धश्च॑मे-पृथि॒वीच॒मेऽदि॑तिश्चमे॒दिति॑श्चमे॒द्यौश्च॑मे॒ऽङ्गुलयः॒शक्क्वरयो॒दिश॑-श्चमेय॒ज्ञेन॑कल्प्पन्ताम् ॥२२॥

भाष्यम्–अग्निः, घर्मः, अर्कः, सूर्यः, प्राणः, अश्वमेधः, पृथिवी, दितिः, अदितिः, द्यौः, अङ्गुलयः, शक्वरयः, दिशः, मे = मम, यज्ञेन कल्पन्ताम्।

हिन्दी–विविध यज्ञों के नामों का ग्रहण कर होम प्रारम्भ होता है— अग्निष्टोम, प्रवर्ग्य, पुरोडाशसम्बन्धी, सूर्यसम्बन्धी, गवामयनयज्ञ, अश्वमेध, पृथिवी, दिति, अदिति, द्युलोक, विराट्पुरुष के अवयव, शक्ति और पूर्व दिशाओं की अनुकूलता— इस यज्ञ के फल से देवतागण मुझे उपर्युक्त यज्ञों का फल प्रदान करें ॥२२॥

विनियोगः–ॐ व्रतमित्यस्य देवा ऋषयः, पङ्क्तिश्छन्दः, अग्निर्देवता वसोर्धाराहुतिहोमे विनियोगः।

व्व्र॒तञ्च॑मऽऋ॒तव॑श्चमे॒तप॑श्चमेसंव्वत्स॒रश्च॑मेऽहोरा॒त्रेऽऊ॑र्व्वष्ठ्ठी॒वे-बृ॒हद्र॑थन्त॒रेच॑मेय॒ज्ञेन॑कल्प्पन्ताम् ॥२३॥ (न.)

भाष्यम्–व्रतं = नियमः, ऋतवः = वसन्तादयः षड् ऋतवः, तपः = स्वाध्यायादिकं, संवत्सरः = प्रभवादयः, अहोरात्रे = अहर्निशम्, ऊर्वष्ठीवे = ऊरू जानुनी च, बृहद्रथन्तरे = सामनी, मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।

हिन्दी–नियम, वसन्तादि ऋतुएँ, स्वाध्यायादि तप, प्रभवादि ६० संवत्सर, दिन-रात, ऊरु-जानु, अवयव-विशेष और बृहद्रथन्तर नामक साममन्त्र— इस यज्ञ के फल से देवतागण मुझे उपर्युक्त नियम आदि प्रदान करें ॥२३॥

विनियोगः–ॐ एकाचेत्यस्य देवा ऋषयः, पूर्वार्द्धस्य संस्कृतिश्छन्दः, शेषस्य विराट्संस्कृतिश्छन्दः, अग्निर्देवता वसोर्धाराहुतिहोमे विनियोगः।

एका॑चमेति॒स्रश्च॑मेति॒स्रश्च॑मे॒पञ्च॑चमे॒पञ्च॑चमेस॒प्तच॑मेस॒प्तच॑मे॒नव॑-चमे॒नव॑चम॒ऽएका॑दशचम॒ऽएका॑दशचमे॒त्रयो॑दशचमे॒त्रयो॑दशचमे॒पञ्च॑द-शचमे॒पञ्च॑दशचमेस॒प्तद॑शचमेस॒प्तद॑शचमे॒नव॑दशचमे॒नव॑दशचम॒ऽ-

**एकविꣳशतिश्चमऽएकविꣳशतिश्चमेत्रयोविꣳशतिश्चमेत्रयोविꣳश-
तिश्चमेपञ्चविꣳशतिश्चमेपञ्चविꣳशतिश्चमेसप्तविꣳशतिश्चमेस-
प्तविꣳशतिश्चमेनवविꣳशतिश्चमेनवविꣳशतिश्चमऽएकत्रिꣳश-
च्चमऽएकत्रिꣳशच्चमेत्रयस्त्रिꣳशच्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥२४॥ (न.)**

भाष्यम्–इतः परः विषमस्तोमान् जुहोति। मन्त्रेऽस्मिन् द्विप्रभृतिसमाङ्कान् विहायाङ्कप्रयोगा मन्त्रत्वेनाम्नाताः। अयुग्मस्तोमैः सर्वकामानवाप्तिर्भवति इति शास्त्रम्।

हिन्दी–एक, तीन, पाँच, सात, नौ, ग्यारह, तेरह, पन्द्रह, सतरह, उन्नीस, इक्कीस, तेईस, पच्चीस, सत्ताईस, उन्तीस, एकत्तीस, तैंतीस— इस यज्ञ के फल से देवगण मुझे उपर्युक्त विषम संख्याएँ प्रदान करें ॥२४॥

विनियोगः–ॐ चतस्रश्चेत्यस्य देवा ऋषयः, उत्कृतिश्छन्दः, अग्निर्देवता वसोर्धाराहुतिहोमे विनियोगः।

**चतस्रश्चमेऽष्टौचमेऽष्टौचमेद्वादशचमेद्वादशचमेषोडशचमे-
षोडशचमेविꣳशतिश्चमेविꣳशतिश्चमेचतुर्विꣳशतिश्चमे-
चतुर्विꣳशतिश्चमेऽष्टाविꣳशतिश्चमेऽष्टाविꣳशतिश्चमेद्वात्रिꣳश-
च्चमेद्वात्रिꣳशच्चमेषट्त्रिꣳशच्चमेषट्त्रिꣳशच्चमेचत्त्वारिꣳशच्चमे-
चत्त्वारिꣳशच्चमेचतुश्चत्त्वारिꣳशच्चमेचतुश्चत्वारिꣳशच्चमेऽष्टा-
चत्वारिꣳशच्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥२५॥ (न.)**

भाष्यम्–अनेन मन्त्रेण युग्मस्तोमान् जुहोति। यथोक्तम्— 'युग्मभिः स्तोमैः स्वर्गं लोकमेति।' इति श्रुतिः। एते युग्मसङ्ख्याताः यज्ञेन कल्पन्ताम्।

हिन्दी–चार, आठ, बारह, सोलह, बीस, चौबीस, अट्ठाईस, बत्तीस, छत्तीस, चालीस, चौवालीस, अड़तालीस— इस यज्ञ के फल से देवगण मुझे इन संख्याओं को प्रदान करें। प्रत्येक संख्या को दो-दो बार उच्चारण उसके प्रति आदर का भाव है ॥२५॥

विनियोगः–ॐ त्र्यविश्चेत्यस्य देवा ऋषयः, ब्राह्मी बृहती छन्दः, अग्निर्देवता वसोर्धाराहुतिहोमे विनियोगः।

त्र्यविश्चमेत्र्यवीचमेदित्त्युवाट्चमेदित्त्यौहीचमेपञ्चाविश्चमेपञ्चावीचमे-त्रिवत्सश्चमेत्रिवत्साचमेतुर्य्यवाट्चमेतुर्य्यौहीचमेयज्ञेनकल्पन्ताम्॥२६

भाष्यम्–अथ वयांसि जुहोति— त्र्यविः = अभिषण्मासात्मकः कालः, त्र्यवी = सार्धसंवत्सरवती गौः, दित्यवाट् = द्विसंवत्सरात्मको वृषः, दित्यौही = द्विवत्सरात्मिका गौः, पञ्चाविः = सार्धद्विवर्षात्मको वृषः, पञ्चावी = सार्धद्विवर्षात्मिका गौः, त्रिवत्सः = त्रिवर्षो वृषः, त्रिवत्सा = तादृशी गौः, तुर्यवाट् = सार्धत्रिवर्षीयो वृषः, तुर्यौही = तादृशी गौः, एते मे = मम, यज्ञेन कल्पन्ताम्।

हिन्दी–डेढ़ वर्ष के, दो वर्ष के, अढाई वर्ष के, तीन वर्ष के, साढ़े तीन वर्ष के बछड़े और बछियाओं को देवगण इस यज्ञ के फल से मुझे प्रदान करें ॥२६॥

विनियोगः–ॐ पष्ठवाडित्यस्य देवा ऋषयः, निच्यृद्ब्राह्म्युष्णिक् छन्दः, अग्निर्देवता वसोर्धाराहुतिहोमे विनियोगः।

पष्ठवाट्चमेपष्ठौहीचमऽउक्षाचमेव्वशाचमऽऋषभश्चमेव्वेहच्चमे-नड्वाँश्चमेधेनुश्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥२७॥ (न.)

भाष्यम्–पष्ठवाट्—पष्ठं = वर्षचतुष्कं, वहतीति = चतुर्वर्षवयस्कः वृषः, पष्ठौही = तादृग् वर्षयुक्ता गौः, उक्षा = सेचनक्षमः वृषः, वशा = वन्ध्या गौः, ऋषभः = युवा वृषभः, वेहत् = गर्भघ्नी गौः, अनड्वान् = शकटवाहनक्षमो वृषभः, धेनुः = नवप्रसूता गौः, एते मे = मम, यज्ञेन कल्पन्ताम्।

हिन्दी–चार वर्ष का वृषभ और गाय, गर्भाधान करने योग्य साँड, बाँझ गाय, अतियुवा साँड, गर्भ गिरा देने वाली गाय, रथ में जोतने वाला बैल, नयी व्यायी हुई गाय— ये सब यज्ञ के फलस्वरूप मुझको प्राप्त हों ॥२७॥

विनियोगः–ॐ वाजायेत्यस्य देवा ऋषयः. पूर्वार्द्धस्यार्चीबृहती छन्दः, अग्निर्देवता वसोर्धाराहुतिहोमे विनियोगः।

व्वाजायस्वाहाप्प्रसवायस्वाहाऽपिजायस्वाहाक्क्रतवेस्वाहाव्वसवेस्वा-हाऽहर्प्पतयेस्वाहाह्नेमुग्ग्धायस्वाहामुग्ग्धायव्वैनꣳशिनायस्वाहाव्विन-ꣳशिनऽआन्त्यायनायस्वाहान्त्यायभौवनायस्वाहाभुवनस्यपतयेस्वाहा-

धिपतयेस्वाहाप्प्रजापतयेस्वाहा ॥ इयन्तेराण्णिम्मत्रायय्यन्तासियमनऽ-ऊर्ज्जेत्वाव्वृष्ट्यैत्त्वाप्प्रजानान्त्वाधिपत्त्याय ॥२८॥

भाष्यम्–वाजाय = अन्नाय, चैत्राय च, प्रसवाय = वैशाखाय, अपिजाय = ज्येष्ठाय, क्रतवे = आषाढाय, वसवे = श्रावणाय, अहर्पतये = भाद्रपदाय, मुग्धाय = आश्विनाय, अमुग्धाय वैनंꣳशिनाय = कार्तिकाय, अविनंशिने आन्त्यायनाय = मार्गशीर्षाय, आन्त्याय भौवनाय = पौषस्य, भुवनस्य पतये = माघाय, अधिपतये = फाल्गुनाय, प्रजापतये = द्वादशमासाधिष्ठातृदेवाय, स्वाहा। हे अग्ने ! इयम्, ते = तव, राट् = राज्यम्, यज्ञक्षेत्रे अग्नेः साम्राज्यत्वात्, त्वं, मित्राय = यजमानस्य, यन्ता = नियन्त्रणकर्ता, असि, त्वं यमनः = नियामकः, अतः ऊर्जे = विशिष्टान्नरसाय, त्वा = त्वाम्, अभिषिञ्चामि, वृष्ट्यै = वर्षणाय, प्रजानामाधिपत्याय = प्रजास्वामित्व-प्राप्त्यर्थं त्वामभिषिञ्चामि।

हिन्दी–चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन तथा द्वादश मासों के अधिष्ठाता प्रजापति, भुवनपति, अधिपति के लिए सुहुत है। हे प्रजापति ! यह आपका राज्य है, अग्निष्टोमादि यज्ञकार्यों में सबके नियन्ता आप ही हैं। इस सखा रूप यजमान के विशिष्ट अन्नरस के लिए तथा प्रजा के स्वामित्व-प्राप्ति के लिए मैं आपका वसुधारा से अभिषेक करता हूँ॥२८॥

विनियोगः–ॐ आयुरित्यस्य देवा ऋषयः, विराट् प्रकृतिश्छन्दः, अग्निर्देवता वसोर्धाराहुतिहोमे विनियोगः।

आयुर्य्यज्ञेनकल्प्पताम्प्राणोयज्ञेनकल्प्पताञ्चक्षुर्य्यज्ञेनकल्प्पताꣳश्श्रोत्त्रंय्यज्ञेनकल्प्पताँव्वाग्ग्यज्ञेनकल्प्पताम्मनोयज्ञेनकल्प्पतामात्माय्यज्ञेन-कल्प्पताँब्ब्रह्मायज्ञेनकल्प्पताञ्ज्योतिर्य्यज्ञेनकल्प्पताꣳस्वर्य्यज्ञेन-कल्प्पताम्पृष्ठंय्यज्ञेनकल्प्पताँय्यज्ञोयज्ञेनकल्प्पताम् ॥ स्तोमश्चयजु-श्चऽऋक्क्चसामचबृहच्चरथन्तरञ्च । स्वर्द्देवाऽअगन्माम्मृताऽअभूमप्र-जापतेः प्प्रजाऽअभूमव्वेट्स्वाहा ॥२९॥

इति रुद्रे अष्टमोऽध्यायः।

भाष्यम्–अथ कल्पाञ्जुहोति— यज्ञेन आयुः = जीवनकालः, कल्पताम् = प्राप्यताम् इति सर्वत्राऽन्वयः। यज्ञेन प्राणः, यज्ञेन चक्षुः, यज्ञेन श्रोत्रं, यज्ञेन वाक्, यज्ञेन मनः, यज्ञेन आत्मा, यज्ञेन ब्रह्मा, यज्ञेन ज्योतिः, यज्ञेन स्वः = स्वर्गः, यज्ञेन पृष्ठं = स्वर्गस्थानं, यज्ञेन यज्ञः, 'यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः' इति श्रुतिः। स्तोमम् = त्रिवृत्पञ्चदशादि, यजुः = अनियतपादो मन्त्रः, ऋक् = नियतपादा, साम = गीतिप्रधानम्, बृहद्रथन्तरः = तद्विशेषौ, देवाः, स्वः = स्वर्गम्, अगन्म = गतवन्तः, तत्र गत्वा च अमृताः = अमृतधर्माणः, अभूम, प्रजापतेः = हिरण्यगर्भस्य, प्रजाः, अभूम्, वेट् स्वाहा = वसोर्धाराहोमार्थः मन्त्रविशेषः ॥२९॥

हिन्दी–यज्ञविधि के द्वारा आयुष्य की प्राप्ति हो। प्राण, चक्षु, श्रोत्र, वाक्, मन, आत्मा, ब्रह्मा, ज्योति, स्वर्ग (स्तोत्र अथवा स्वर्गस्थान), यज्ञ, स्तोम, यजु, ऋक, साम तथा बृहद्रथन्तर साम यज्ञ द्वारा सिद्ध हों। हे देवो ! यज्ञ द्वारा ही हम स्वर्ग को प्राप्त हुए, हम अमर हो गये, हम प्रजापति देव की प्रजा बन गये। यह परोक्ष आहुति है और यह प्रत्यक्ष आहुति है ॥२९॥

इति नैनीतालमण्डलाभिजनश्रौतस्मार्तधर्मधुरन्धर**पण्डिततारादत्तात्मज-श्रीब्रह्मानन्दत्रिपाठि**कृत-श्रीरुद्राष्टाध्याय्यां संस्कृतभाष्य-हिन्दीटीकाभ्यां संवलितः अष्टमोऽध्यायः ॥८॥

अथ नवमोऽध्यायः

(शान्त्यध्यायः)

विनियोगः–ॐ ऋचंवाचमित्यस्य दधीचि ऋषिः, जगती छन्दः, लिङ्गोक्ता देवता शान्तिपाठे विनियोगः।

हरिः ॐ ॥ ऋचंव्वाचम्प्रपद्येमनोयजुःप्प्रपद्येसामप्प्राणम्प्रपद्ये चक्षुःश्श्रोत्रम्प्रपद्ये ॥ व्वागोजःसहौजोमयिप्प्राणापानौ ॥१॥

भाष्यम्–ऋचं, वाचम्, प्रपद्ये = शरणं गच्छामि, यजुः मनः प्रपद्ये, प्राणं साम प्रपद्ये, चक्षुः श्रोत्रम् प्रपद्ये, वाक्, ओजः = मानसिकं बलम्, पुनः ओजः = शारीरं बलम्, प्राणापानौ = एते वायू, सह = समवेताः सन्तः, मयि भवेयुरिति प्रार्थना।

हिन्दी–ऋचा रूप वाणी की, यजुः रूप मन की, प्राण रूप साम की, चक्षु तथा श्रोत्र इन्द्रिय की शरण को प्राप्त होता हूँ। मन एवं शरीर का बल तथा उच्छ्वास-निःश्वास वायु— ये पूर्णरूप से मेरे में स्थित हों ॥१॥

विनियोगः–ॐ यन्म इत्यस्य दधीचि ऋषिः, पङ्क्तिश्छन्दः, बृहस्पतिर्देवता शान्तिपाठे विनियोगः।

यन्मेच्छिद्रञ्चक्षुषोहृदयस्यमनसोव्वातितृण्णम्बृहस्प्पतिर्म्मेतद्दधातु ॥ शन्नोभवतुभुवनस्ययस्प्पतिः ॥२॥

भाष्यम्–मे = मम, चक्षुषः = नेत्रस्य, यत् छिद्रम्, हृदयस्य यत् छिद्रम्, मनसः वा यत् अतितृणम् = अतिहिंसितम्, बृहस्पतिः = देवगुरुः, मे = मम, तत् छिद्रं दधातु = छिद्रं निवर्तयतु, भुवनस्य = प्राणिमात्रस्य, यः, पतिः = स्वामी यज्ञः, सः, नः = अस्माकं, शं = सुखाय भवतु।

हिन्दी–परमात्मा मेरे दृष्टि, मन तथा बुद्धि की कमी को दूर करे, हमारा कल्याण हो, सम्पूर्ण भुवनों का स्वामी हमारा कल्याण करे ॥२॥

विनियोगः–ॐ तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषिः, निच्यृद्गायत्री छन्दः, सविता देवता शान्तिपाठे विनियोगः।

भूर्भुवः॒स्वः॒तत्स॑वि॒तुर्व्वरे॑ण्यं॒भर्गो॑दे॒वस्य॑धीमहि ॥
धियो॒योनः॑प्रचो॒दयात् ॥३॥

भाष्यम्–यः = त्रैलोक्यविदितः, सवितादेवः = सूर्यदेवः, नः = अस्माकं, धियः = बुद्धीः, प्रचोदयात् = प्रेरयेत् । तत् = तस्य सर्वश्रुतिषु प्रसिद्धस्य, देवस्य = प्रकाशमानस्य, सवितुः = सर्वज्ञत्वात् जगत्स्रष्टुः परमात्मनः, आत्मस्वरूपं, वरेण्यं = सम्भजनीयम्, भर्गः = परब्रह्मात्मकं तेजः, धीमहि = वयं ध्यायेम ।

हिन्दी–यह गायत्री मन्त्र है । इसके पूर्व सप्तव्याहृतियों का प्रयोग होता है तब इस मन्त्र को पढ़ा जाता है । अतः ये व्याहृतियाँ इस मन्त्र में आये हुए भर्ग शब्द से सम्बन्धित हैं । अतएव मन्त्रार्थ से पूर्व इनका अर्थसहित उल्लेख यहाँ प्रस्तुत है ।

सप्तव्याहृतियाँ— १. भूः = भूमि, २, भुवः = अन्तरिक्ष, ३. स्वः = स्वर्लोक, ४. महः = महर्लोक, ५. जनः = जनलोक, ६. तपः = तपलोक, ७. सत्यं = सत्यलोक । इस प्रकार वह भर्ग = स्वयंप्रकाशात्मक ज्योति सातों लोकों को अपने प्रकाश से प्रकाशित करता है ।

यह गायत्री मन्त्र परब्रह्म की उपासना का मूल मन्त्र है । इसकी व्याख्या इस प्रकार की गयी है— 'गायन्तं त्रायते यस्माद् गायत्री तेन सा स्मृता'। अर्थात् इसका गान, जप, स्मरण मनुष्य को भवबन्धनों से मुक्त कर देता है ।

सवितृदेव के अन्तःस्थित परब्रह्म के सर्वसमर्थ सत्य, ज्ञान, आनन्दप्रद तेज का हम ध्यान करते हैं, जो सवितादेव हमारी बुद्धियों को सत्कर्म के अनुष्ठान में प्रेरित करते हैं। जगत् के स्रष्टा उन परमात्मा का जो भूर्लोक, भुवर्लोक और स्वर्लोक व्यापी भर्ग हैं, उनका हम ध्यान करते हैं ॥३॥

विनियोगः–ॐ कयान इत्यस्य वामदेव ऋषिः, गायत्री छन्दः, इन्द्रो देवता शान्तिपाठे विनियोगः।

कया॑नश्चि॒त्रऽआभु॑वदू॒तीस॒दावृ॑धः॒सखा॑ ॥
कया॒शचि॑ष्ठयावृ॒ता ॥४॥

भाष्यम्–सदावृधः = सर्वदा वर्धमानः, चित्रः = पूजनीयः, सखा = मित्रभूतः, कया ऊत्या = प्रीणनेन, नः = अस्माकम्, आभुवत् = साम्मुख्येन भवेत्, शचिष्ठया = प्रज्ञायुक्तेन अनुष्ठानेन, कया वृता = केन कर्मणा, सखा भवतीति ।

हिन्दी–सदा वृद्धि करनेवाले, पूजनीय, सब प्राणियों के मित्र इन्द्र किस कर्म से प्रसन्न होकर हमें दर्शन देंगे । पवित्र याग आदि कर्मों से इन्द्र हमारे शुभचिन्तक होते हैं ।।४।।

विनियोगः–ॐ कस्त्वेत्यस्य वामदेव ऋषिः, गायत्री छन्दः, इन्द्रो देवता शान्तिपाठे विनियोगः।

कस्त्वासत्त्योमदानाम्मꣳहिष्ठोमत्सदन्धसः ।।
दृढाचिदारुजेव्वसु ।।५।।

भाष्यम्–मदानाम् = मदजनकहविषां मध्ये, मंहिष्ठः = श्रेष्ठः, अन्धसः = सोमात्मकस्यान्नस्य, कः = भागः, त्वा = त्वाम्, मत्सत् = मदमत्तं विदधाति, येन, दृढाचित् = सुस्थिराणि अपि, वसु = सुवर्णादि धनानि, त्वम्, आरुजे = चूर्णयसि, सञ्चूर्ण्य सर्वेभ्यः ददासीत्याशयः।

हिन्दी–हे इन्द्रदेव ! सोम रूपी मद का कौन-सा अंश आपको सबसे अधिक आनन्दित करता है और कौन-सा अन्न आपको सबसे अधिक तृप्त करता है । जिस प्रसन्नता से आप सुवर्णादि धन को खण्ड-खण्ड कर भक्तों को वितरित करते हैं ।।५।।

विनियोगः–ॐ अभीषुण इत्यस्य वामदेव ऋषिः, गायत्री छन्दः, इन्द्रो देवता शान्तिपाठे विनियोगः।

अभीषुणःसखीनामविताजरितृणाम् ।।
शतम्भवास्यूतिभिः ।।६।।

भाष्यम्–सखीनाम् = मित्राणां, जरितृणां = स्तुतिकर्तृणाम्, अविता = पालयिता, शतं = शतेन, ऊतिभिः = रक्षाभिः सह, नः = अस्माकं, सु = सुष्ठु, अभिभवासि = सम्मुखो भव ।

हिन्दी–हे देवेन्द्र ! आप मित्रों तथा स्तुतिकर्ता यजमानों के रक्षक हैं । आप भक्तों की रक्षा के लिए अनेक रूप धारण कर प्रत्यक्ष होते हैं ।।६।।

विनियोगः–ॐ कयात्वमित्यस्य दधीचि ऋषिः, गायत्री छन्दः, इन्द्रो देवता शान्तिपाठे विनियोगः।

कयात्त्वन्नऽऊत्त्याभिप्प्रमन्दसेव्वृषन् ॥
कयास्तोतृब्भ्यऽआभर ॥७॥

भाष्यम्– हे वृषन् = वर्षणशील ! सेक्तः = सिञ्चनकर्मकुशलः, कया ऊत्या = केन हविर्दानेन, नः = अस्मान्, अभिप्रमन्दसे = अभिप्रमदयसि, कया ऊत्या = तृप्त्या, स्तोतृभ्यः = यजमानेभ्यः, आभर = धनं दातुमाहरसि, तथा वयं कुर्म इति ।

हिन्दी–सब इच्छाओं की पूर्ति करने वाले इन्द्रदेव ! किस तृप्ति अथवा हवि को देने से आप हमको प्रसन्न करते हैं? किस तृप्ति से आप यजमानों के लिए धनदान करने के लिए लाते हैं ॥७॥

विनियोगः–ॐ इन्द्र इत्यस्य दधीचि ऋषिः, द्विपदा विराट् छन्दः, इन्द्रो देवता शान्तिपाठे विनियोगः।

इन्द्रोव्विश्श्वस्यराजति ॥
शन्नोऽअस्तुद्द्विपदेशञ्चतुष्प्पदे ॥८॥

भाष्यम्–विश्वस्य = निखिलस्य संसारस्य, इन्द्रः = परमेश्वरः, यः राजति = देदीप्यते, नः = अस्माकं, द्विपदे = पुत्रादीनां, शम् = सुखम्, अस्तु, चतुष्पदे = गवादीनाञ्च, शं = सुखम् अस्तु ।

हिन्दी–सम्पूर्ण जगत् का परमेश्वर जो सर्वत्र प्रकाश करता है, वह हमारे पुत्रादि द्विपदों का तथा गाय आदि चौपायों का कल्याणकारक हो ॥८॥

विनियोगः–ॐ शन्न इत्यस्य दधीचि ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, सूर्यो देवता शान्तिपाठे विनियोगः।

शन्नोमित्त्रश्शंव्वरुणश्शन्नोभवत्त्वर्य्यमा ॥
शन्नऽइन्द्रोबृहस्प्पतिश्शन्नोव्विष्ण्णुरुरुक्क्रमः ॥९॥

भाष्यम्–मित्रः = मित्राख्यो देवः, नः = अस्माकं, शं = सुखाय स्यात्, वरुणः देवः, शं = सुखाय स्यात्, अर्यमा देवः शम्, इन्द्रः शम्, बृहस्पतिः नः शम् स्यात, उरुक्रमः = विस्तीर्णपादन्यासवान्, विष्णुः = परमेश्वरः, नः शं स्यात् ।

हिन्दी–मित्र, वरुण, अर्यमा, इन्द्र, बृहस्पति और विष्णुदेव हमारे लिए कल्याणकारी हों ॥९॥

विनियोगः–ॐ शन्न इत्यस्य दधीचि ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, वातादयो देवता शान्तिपाठे विनियोगः।

शन्नो॒ व्वात॑ः पवता॒ᳬ शन्न॑स्तपतु॒ सूर्य्य॑ः ॥
शन्न॒ᳬ कनि॑क्रदद्दे॒वः प॒र्ज्जन्यो॑ऽअ॒भिव॑र्षतु ॥१०॥

भाष्यम्–वातः = वायुः, नः = अस्माकं, शं = सुखाय, अपरुषः = नीरोगकरः च, पवतां = वहतां, सूर्य्यः = भानुः, लोकान् = व्यापारयति स्व-स्वकार्येषु, शं = सुखात्मकः, नः = अस्माकं, तपतु = किरणान् विस्तारयतु, पर्जन्यः = मेघः, देवः, कनिक्रदत् = अत्यन्तं शब्दं कुर्वन्, नः = अस्माकं, शं = सुखम्, अभिवर्षतु = अभिसिञ्चतु ।

हिन्दी–इन्द्रदेव की दयादृष्टि से वायु हमारे लिए सुखद हो, सूर्य अपने ताप से हमको सुखी करे, पर्जन्यदेव जलवर्षा के द्वारा हमको तृप्त करे ॥१०॥

विनियोगः–ॐ अहानीत्यस्य दधीचि ऋषिः, द्विपदा गायत्री छन्दः, अहोरात्र्यादयो देवताः शान्तिपाठेः विनियोगः।

अहा॑नि॒ शम्भव॑न्तु न॒ᳬ शᳬ रात्री॒ᳬ प्रति॑धीयताम् ॥
शन्न॑ऽइन्द्रा॒ग्नी भ॑वता॒मवो॑भि॒ᳬ शन्न॒ऽइन्द्रा॒वरु॑णा रा॒तह॑व्या ॥
शन्न॑ऽइन्द्रापू॒षणा॒ व्वाज॑सातौ॒ शमिन्द्रा॒सोमा॑ सुवि॒ताय॒ शंय्योः ॥११॥

भाष्यम्–अहानि = दिनानि, नः = अस्माकं, शं = सुखकराणि, भवन्तु, रात्रीः शं, प्रतिधीयताम् = प्रतिदधातु, इन्द्राग्नी, अवोभिः = पालनैः कृत्वा, नः, शं, भवतां, रातहव्या = हवितृप्तौ, इन्द्रावरुणा, नः, शं, वाजसातौ = अन्ननिमित्तभूते, इन्द्रापूषणा, नः, शं, भवताम्, तथा सुविताय = साधुगमनाय, तथा, शं = रोगाणां प्रशमाय, योः = यावनाय पृथक्करणाय, इन्द्रासोमा, शं भवताम् ।

हिन्दी–इन्द्रदेव की कृपा से हमारे दिन और रात कल्याणकारक हों, इन्द्र और अग्नि हमारे लिए सुखप्रद हों, इन्द्र वर्षाकारक हों, वरुण कल्याण करें, अन्न को उत्पन्न करने वाले इन्द्र और पूषा सुखद हों, इन्द्र और सोम देवता रोगों को शान्त कर हमको सुखशान्ति दें ॥११॥

विनियोगः–ॐ शन्न इत्यस्य दधीचि ऋषिः, गायत्री छन्दः, आपो देवताः शान्तिपाठे विनियोगः।

शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपीतये ॥
शंय्योरभिस्रवन्तुनः ॥१२॥

भाष्यम्– देवीः = दीप्यमानाः, आपः = जलानि, नः = अस्माकम्, अभिष्टये = अभिषेकाय, पीतये = पानाय, च, शं = सुखाय, सन्तु, शं योः = रोगाणां शमनम्, अभिस्रवन्तु, नः = अस्माकं, भयरोगादिनाशं कुर्वन्तु इत्याशयः ।

हिन्दी–स्वच्छ जल हमारे स्नान एवं पान के लिए सुख से प्राप्त हों । ये जल रोगशमन तथा भय को दूर करने में हमारे सहायक हों ॥१२॥

विनियोगः–ॐस्योनेत्यस्य मेधातिथिर्ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, पृथिवी देवता शान्तिपाठे विनियोगः।

स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी ॥
यच्छानःशर्म्मसप्प्रथाः ॥१३॥

भाष्यम्–अनृक्षरा = सुखप्रदा, कण्टकरहितेत्यर्थः, निवेशिनी = उपवेष्टुं योग्या, सप्रथाः— सर्वतः पृथुः = विस्तीर्णा, पृथिवि = ! वसुन्धरे त्वं, नः = अस्माकं, स्योना = सुखरूपा, भव, किञ्च नः = अस्मभ्यं, शर्म = शरणं, यच्छ = प्रयच्छ ।

हिन्दी–हे भूमि ! आप हमारे लिए निष्कण्टक, बैठने योग्य, विस्तीर्ण, सुखदायक और आश्रयदाता हों ॥१३॥

विनियोगः–ॐ आपोहिष्ठेत्यस्य सिन्धुद्वीप ऋषिः, गायत्री छन्दः, आपो देवताः शान्तिपाठे विनियोगः।

आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्ज्जेदधातन ॥
महेरणायचक्षसे ॥१४॥

भाष्यम्–आपः = जलानि, यूयम् एव, मयोभुवः = सुखकर्त्र्यः, स्था = भवथ, नः = अस्माकम्, ऊर्जे = रसाय, दधातन = रक्षत, किञ्च महे = महते, रणाय = रमणीयाय, चक्षसे = दर्शनाय, अस्मान् दधातन ।

हिन्दी–हे जलसमूह ! आप स्नान, खान-पान में हमारे लिए सुखद हों और रसानुभव द्वारा हमें ब्रह्मानन्द की प्राप्ति कराने में सहायक हों ॥१४॥

विनियोगः–ॐ योव इत्यस्य सिन्धुद्वीप ऋषिः, गायत्री छन्दः, आपो देवताः शान्तिपाठे विनियोगः।

योवः॑शि॒वत॑मो॒रस॒स्तस्य॑भाजयते॒हनः॑ ॥

उ॒श॒तीरि॑वमा॒तरः॑ ॥१५॥

भाष्यम्–हे आपः ! वः = युष्माकं, यः शिवतमः = सुखैकसाधनं रसः, अस्ति, इह = अस्मिन् कर्मणि, स्थितान्, नः = अस्मान्, तस्य रसस्य, भाजयत = भागिनो विदधत, उशतीः = प्रीत्या कामयमानाः, मातरः = जनन्यः इव ।

हिन्दी–हे शुद्धजलो ! आपके कल्याणकारी रस इस यज्ञकर्म अथवा इस लोक में स्थित हमारे उपयोगयोग्य हों । जिस प्रकार माता प्रेमपूर्वक अपने स्तनों को बालक को पिलाती है, उसी प्रकार आपके जल हमको प्राप्त हों ।'१५॥

विनियोगः–ॐ तस्मा इत्यस्य सिन्धुद्वीप ऋषिः, गायत्री छन्दः, आपो देवताः शान्तिपाठे विनियोगः।

तस्म्मा॒ऽअरं॑ङ्गमामवो॒यस्य॒क्षया॑य॒जिन्न्वथ ॥

आपो॑ज॒नय॑थाचनः ॥१६॥

भाष्यम्–हे आपः = यूयं, यस्य = पापस्य, क्षयाय = विनाशाय, अस्मान्, जिन्वथ = प्रीणयथ, तस्मै = तादृशाय, अरं = शीघ्रं, वः = अस्मान्, गमाम = गच्छाम, यस्य = अन्नस्य, क्षयाय = निवासाय, यूयम् ओषधीः, जिन्वथ = तर्पयथ, तदन्नम् उद्दिश्य, वयम्, अरम् = पर्याप्तं, यथा तथा वः = अस्मान्, गमाम ।

हिन्दी–हे जलो ! आप जिस पाप के क्षय के लिए हमको तृप्त करते हैं उस जल को हमें शीघ्र प्राप्त करायें ॥१६॥

विनियोगः–ॐ द्यौरित्यस्य दधीचि ऋषिः, शक्वरी छन्दः, विश्वेदेवा देवता शान्तिपाठे विनियोगः।

द्यौःशान्ति॑र॒न्तरि॑क्ष॒ꣳशान्तिः॑पृथि॒वीशान्ति॒राप॒ःशान्ति॒रोष॑धय॒ःशान्तिः॑ ॥

व्वन॒स्प्पत॑य॒ःशान्ति॒र्व्विश्श्वे॑दे॒वाःशान्ति॒र्ब्रह्म॒शान्ति॒ःसर्व्व॒ꣳशान्ति॒ः-

शान्ति॑रे॒वशान्ति॒ःसामा॒शान्ति॑रेधि ॥१७॥

भाष्यम्- द्यौः शान्तिः, अन्तरिक्षं शान्तिः, पृथिवी शान्तिः, आपः = जलरूपा शान्तिः, ओषधयः शान्तिः, वनस्पतयः शान्तिः, विश्वेदेवाः शान्तिः, ब्रह्म शान्तिः, सर्वं शान्तिः, शान्तिः एव शान्तिः, सा = इत्थम्भूता शान्तिः, मा = मां प्रति, एधि = वर्धतु ।

हिन्दी-हमारे लिए द्युलोक, अन्तरिक्ष, पृथिवी, जल, ओषधियाँ, वनस्पतियाँ, विश्वेदेव, परब्रह्म— ये सब शान्तिप्रद हों। चारों ओर शान्ति ही शान्ति हो, इस प्रकार की शान्ति हमारे प्रति सदा बढ़ती रहे ॥१७॥

विनियोगः-ॐ दृत इत्यस्य दधीचि ऋषिः, भुरिगार्षी जगती छन्दः, महावीरो देवता शान्तिपाठे विनियोगः।

दृतेदृꣳहमामित्रस्यमाचक्षुषासर्व्वाणिभूतानिसमीक्षन्ताम् । मित्रस्याहञ्चक्षुषासर्व्वाणिभूतानिसमीक्षे । मित्रस्यचक्षुषासमीक्षामहे ॥१८॥

भाष्यम्-दृते = जराजीर्णे देहे, मा = मां, दृꣳह = दृढं कुरु, सर्वाणि भूतानि = सर्वे प्राणिनः, मा = माम्, मित्रस्य चक्षुषा = हितदृष्ट्या, समीक्षन्तां = सम्यक् पश्यन्तु, अहम् अपि, सर्वाणि भूतानि = प्राणीन्, मित्रस्य चक्षुषा = हितदृष्ट्या, समीक्षे = पश्यामि, सर्वे मम प्रियाः सन्तु, मित्रस्य चक्षुषा = मित्रभावेन, समीक्षामहे ।

हिन्दी-हे महावीर देव ! यद्यपि हमारा शरीर जरा-जर्जरित हो गया है फिर भी इसको दृढ़ कीजिए। सभी प्राणी मुझको मित्र की दृष्टि से देखें, मैं सबका प्रिय हो जाऊँ। मैं भी सभी प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखूँ अर्थात् सब मेरे प्रिय हों। हम सब एक-दूसरे को मित्रभाव से देखें, जिससे राग-द्वेष का विनाश हो ॥१८॥

विनियोगः-ॐ दृत इत्यस्य दधीचि ऋषिः, आर्ष्युष्णिक् छन्दः, महावीरो देवता शान्तिपाठे विनियोगः।

दृते दृꣳह मा ॥

ज्योक्तेसन्दृशिजीव्यासञ्ज्योक्तेसन्दृशिजीव्यासम् ॥१९॥

भाष्यम्-दृते = हे वीर ! मा = मां, दृꣳह = दृढं कुरु, ते = तव, सन्दृशि = दृष्टिपथे, अहम्, ज्योक्, चिरं, जीव्यासम् = जीवेयम्। हे देवेश! ते, सन्दृशि, ज्योक्, जीव्यासम्। आदरार्थे पुनर्वचनम्।

हिन्दी–हे महावीर देव ! मुझे शक्तिशाली बनाइए, मैं आपकी दृष्टि में चिरकाल तक जीवित रहूँ। यही एक बार और कहा है ॥१९॥

विनियोग:–ॐ नमस्त इत्यस्य लोपामुद्रा ऋषिः, भुरिगार्षी बृहती छन्दः, अग्निर्देवता चित्यारोहणे विनियोगः।

नम॑स्तेहर॑सेशो॒चिषे॒नम॑स्तेऽअस्त्व॒र्चिषे॑ ॥

अ॒न्याँस्ते॑ऽअ॒स्मत्त॑पन्तुहे॒तय॑ःपाव॒कोऽअ॒स्मभ्य॑ᳬशि॒वो भ॑व ॥२०॥

भाष्यम्–हे अग्ने ! ते = तव, हरसे, शोचिषे = तेजसे, नमः अस्तु, ते = तव, अर्चिषे = तेजसे, नमः अस्तु, तव, हेतयः = ज्वालाः, अस्मत् = अस्मत्पार्श्वात्, अन्याः = अस्मद्विरुद्धाः, तपन्तु = दहन्तु, इत्थं त्वम्, पावकः = पवित्रकर्ता, अस्मभ्यं, शिवः = कल्याणकृत्, भवेति ।

हिन्दी–हे अग्निदेव ! सब रसों के आकर्षणकर्ता आपकी तेजःस्वरूप ज्वाला को नमस्कार है। आपके पदार्थप्रकाशक तेज के प्रति नमस्कार है, आपकी ज्वाला दूसरों को ताप दे और हमारा कल्याण करे ॥२०॥

विनियोग:–ॐ नमस्त इत्यस्य दधीचि ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, विद्युत्स्तनयित्नुरूपे देवते शान्तिपाठे विनियोगः।

नम॑स्तेऽअस्तुवि॒द्युते॒नम॑स्ते स्तनयि॒त्नवे॑ ॥

नम॑स्तेभगवन्नस्तु॒यत॒ःस्व॒ःस॒मीह॑से ॥२१॥

भाष्यम्–हे भगवन् ! विद्युते = विद्युद्रूपाय, स्तनयित्नवे = गर्जितरूपाय, ते = तुभ्यं, नमः अस्तु, यतः = यस्मात् कारणात्, स्वः = स्वर्गन्तुं, त्वं समीहसे = वाञ्छसि, ते = तुभ्यं, नमोऽस्तु ।

हिन्दी–हे भगवन् ! विद्युत् तथा गर्जनारूप आपके लिए नमस्कार है, स्वर्गीय सुख देने के निमित्त आपको नमस्कार है ॥२१॥

विनियोग:–ॐ यत इत्यस्य दधीचि ऋषिः, भुरिक् प्राजापत्या त्रिष्टुप् छन्दः, परमात्मा देवता शान्तिपाठे विनियोगः।

यतो॑यतःस॒मीह॑से॒ततो॑नो॒ऽअभ॑यङ्कुरु ॥

शन्न॑ःकुरुप्प्र॒जाभ्यो॒ऽभ॑यन्न॑ःप॒शुभ्य॑ः ॥२२॥

भाष्यम्–हे देव ! यत: यत: = यस्माद् यस्माद् रूपात्, समीहसे = चेष्टसे, ततः, नः = अस्माकम्, अभयम् = भयमुक्तं कुरु, किञ्च, नः = अस्माकं प्रजाभ्यः, शं कुरु, नः, पशुभ्यः, अभयं कुरु।

हिन्दी–आप हमारे हित के लिए जिस-जिस रूप से चेष्टा करते हैं उस-उस प्रकार से हमको निर्भय कीजिए। हमारी प्रजाएँ सुखी हों, हमारे पशु सुखी हों—यही प्रार्थना है ॥२२॥

विनियोगः–ॐ सुमित्रियान इत्यस्य दीर्घतमा ऋषिः, निच्यृत् प्राजापत्या गायत्री छन्दः, आपो देवताः जलाभिमन्त्रणे विनियोगः।

सुमित्रियानऽआपऽओषधयः सन्तुदुर्म्मित्रियास्तस्म्मैसन्तुयोऽस्म्मान् द्वेष्टियञ्चव्वयन्द्विष्म्मः ॥२३॥

भाष्यम्–आप: = जलानि, ओषधयः = वनस्पतयः, नः = अस्माकं, सुमित्रियाः = सम्यक् सखाभावेन संस्थिताः, सन्तु, यः = शत्रुः, अस्मान् द्वेष्टि = वैरं करोति, वयञ्च, यं = शत्रुं, द्विष्मः, तस्मै, उभयात्मकाय शत्रवे, आप ओषधयः च, दुर्मित्रियाः = शत्रुत्वेनावस्थिताः सन्तु।

हिन्दी–हे भगवन् ! जल अथवा ओषधियाँ हमारे लिए सुखद हों, जो शत्रु हमसे द्वेष करते हैं और हम भी जिस शत्रु से द्वेष करना चाहते हैं, इन दोनों प्रकार के व्यक्तियों के लिए उक्त जल ओषधि रूप एवं शान्तिप्रद हों ॥२३॥

विनियोगः–ॐ तच्चक्षुरित्यस्य दधीचि ऋषिः, ब्राह्मीत्रिष्टुप् छन्दः, सूर्यो देवता शान्तिपाठे विनियोगः।

तच्चक्षुर्द्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्क्रमुच्चरत् ॥
पश्येमशरदः शतञ्जीवेमशरदः शतꣳ शृणुयामशरदः शतंप्रब्ब्रवामशरदः शतमदीनाःस्यामशरदः शतम्भूयश्च शरदः शतात् ॥२४॥

इति रुद्रे नवमोऽध्यायः।

भाष्यम्- तत्, देवहितं = स्थापितं, शुक्रं = पापैरसंसृष्टं, चक्षुः = जगतां नेत्ररूपं सूर्यः, पुरस्तात् = पूर्वस्यां दिशि, उच्चात् = उच्चरति उदेति वा, तस्य कृपया, शतं शरदः = शतवर्षाणि, पश्येम = द्रष्टुं समर्थाः भवेम, शतं शरदः = शतवर्षाणि यावत्, जीवेम = स्वाधीनजीवना भवेम, शतं शरदः = शतं समाः, शृणुयाम = श्रोतुं समर्थाः भवेम, शतं शरदः, प्रब्रवाम = स्पष्टवाचो भवेम, शतं शरदः, अदीनाः, स्याम् = न कदापि दीनताम् अनुभवेम, शतात् शरदः = शत-वर्षानन्तरम् अपि, भूयः च = पुनरपि तथैव सर्वेन्द्रियशक्तियुक्तः स्याम् इति प्रार्थना।

हिन्दी–वह देवताओं का हितकारी, संसार का चक्षु रूप, प्रकाशमान, सर्वथा शुद्ध भगवान् सूर्य का पूर्वदिशा में उदय होता है। उस तेजोमय देव की कृपा से हम सौ वर्षों तक देखें, सौ वर्षों तक स्वाधीन (सत्स्वास्थ्ययुक्त) होकर जीवित रहें, सौ वर्षों तक सुन सकें, सौ वर्षों तक साफ-साफ बोल सकें और सौ वर्षों तक अदीन हों। इस प्रकार पुनः हम दीर्घकाल तक सर्वेन्द्रियसम्पन्न होकर फिर सौ वर्षों तक जीवित रहें। अर्थात् सभी इन्द्रियों के कार्यक्षम होने पर ही जीवन का सुख है। इसी आशय से उक्त प्रार्थना की गयी है ॥२४॥

इति नैनीतालमण्डलाभिजनश्रौतस्मार्तधर्मधुरन्धर**पण्डिततारादत्तात्मज-श्रीब्रह्मानन्दत्रिपाठि**कृत-श्रीरुद्राष्टाध्याय्यां संस्कृतभाष्य-हिन्दीटीकाभ्यां संवलितः नवमोऽध्यायः ॥९॥

अथ दशमोऽध्यायः

(स्वस्तिप्रार्थनाध्यायः)

विनियोगः–ॐ स्वस्तीत्यस्य गौतम ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, विश्वेदेवा देवताः स्वस्तिपाठे विनियोगः।

हरिः ॐ । स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ॥ स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥१॥

भाष्यम्–वृद्धश्रवाः = प्रभूतस्तोत्रयुतः, इन्द्रः, नः = अस्माकं, स्वस्ति = कल्याणं, दधातु = करोतु, विश्ववेदाः = त्रैलोक्यं वेत्ति किंवा समस्तवेदात्मकधनसमृद्धः, पूषा = पालयिता देवः, नः = अस्माकं, स्वस्ति विदधातु, अरिष्टनेमिः = चक्रधारिणः गतिः, तार्क्ष्यः = गरुडः, नः, स्वस्ति विदधातु, तथा बृहस्पतिः = देवगुरुः, नः स्वस्ति विदधातु ।

हिन्दी–प्रशस्त कीर्तिमान् इन्द्रदेव, सर्वज्ञ पूषादेव, अप्रतिहत गतिवाला गरुड और देवगुरु बृहस्पति हमारा कल्याण करें ।।१।।

विनियोगः–ॐ पय इत्यस्य लुशोधानाक ऋषिः, विराट् छन्दः, अग्निर्देवता स्वस्तिपाठे विनियोगः।

ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः ॥ पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥२॥

भाष्यम्–पृथिव्यां = रसायाम्, पयः = रसं, धाः = धेहि, च, ओषधीषु = वनस्पतिषु, पयः = रसं, धाः = धेहि, मह्यम् = अस्मदर्थम्, प्रदिशः = सर्वदिशः, पयस्वतीः = सरसाः सन्तु ।

हिन्दी–पृथिवी माता, ओषधियाँ, स्वर्लोक, अन्तरिक्षलोक, सभी दिशाएँ और विदिशाएँ हमारे लिए सरस अर्थात् दयार्द्र हों ।।२।।

विनियोगः–ॐ विष्णोरराटमित्यस्यौतथ्यो दीर्घतमा ऋषिः, याजुषी उष्णिक् छन्दः, विष्णुर्देवता यज्ञमण्डपकरणे विनियोगः।

ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि ॥ वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ॥३॥

भाष्यम्–हे यज्ञमण्डप ! त्वं विष्णोः, रराटं = ललाटरूपः असि, हे रराट्यन्तौ युवां, विष्णोः = विष्णुरूपमण्डपस्य, श्नप्त्रेस्थः = ओष्ठसन्धिरूपे स्थः, त्वं, विष्णोः, हे स्यूरसि = सूचिरसि, त्वं, विष्णोः, ध्रुवः = ग्रन्थिः असि। हे यज्ञमण्डप ! त्वं वैष्णवं = विष्णुदेवत्वेन तत्सम्बन्धि, असि = भवसि, अतः विष्णवे = विष्णोराराधनाय, त्वा = त्वाम्, अहम् आश्रयामीत्याशयः।

हिन्दी–इस मन्त्र में यज्ञमण्डप का विष्णु रूप से वर्णन किया गया है। बाँस को चीर कर उसके जो लम्बे टुकड़े बनाये जाते हैं उनको रराटी या फराटी कहते हैं। इन्हीं को विविध प्रकार से जोड़ कर प्रमाणानुसार मण्डप बनाया जाता है। उस रराटी का अग्रभाग मण्डप का शिर है। इसके दो प्रान्तभागों को यज्ञमण्डप के होंठ कहते हैं। जिससे द्वारों को सिला जाता है उसे सुई कहते हैं। जो उसमें गाँठ लगायी जाती है, उसे ध्रुव कहते हैं। इसके छत के बड़े बाँस को हविर्दान कहते हैं। ये सब विष्णुस्वरूप हैं, अतः मैं आपका स्पर्श करता हूँ ॥३॥

विनियोगः–ॐ अग्निरित्यस्य विश्वेदेव ऋषिः, भुरिग्ब्राह्मीत्रिष्टुप् छन्दः, अग्न्यादयो देवताः इष्टिकोपधाने विनियोगः।

ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवतादित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ॥४॥

भाष्यम्–हे अग्ने ! त्वं निम्नोक्तदेवतारूपासि अतस्त्वाम् उपदधामि। तद्यथा— अग्निः, वातः, सूर्य्यः, चन्द्रमाः, वसवः, रुद्राः, आदित्याः, मरुतः, विश्वेदेवाः, बृहस्पतिः, इन्द्रः तथा वरुणः च पूर्वोक्तान् देवान् संस्मृत्य यज्ञकुण्डनिर्माणाय इष्टकाः स्थापनीया इति।

हिन्दी–हे अग्निदेव ! आप निम्नलिखित देवताओं के स्वरूप वाले हैं, इसलिए आपकी उपासना करता हूँ। अग्नि, वायु, सूर्य, चन्द्रमा, अष्ट वसु, रुद्र,

आदित्या, मरुत्, विश्वेदेवाः, बृहस्पति, इन्द्र तथा वरुण— इन देवताओं की प्रार्थना करते हुए ईंटों द्वारा यज्ञकुण्ड का निर्माण करना चाहिए ।।४।।

विशेष–५ से लेकर १० तक के मन्त्र 'तैत्तिरीय आरण्यक' के हैं, अतः इनके छन्दोविनियोग यहाँ नहीं दिये गये हैं। वास्तव में रुद्राष्टाध्यायी में नवें और दशवें अध्याय परम्परागत देखे जाते हैं। इनका उद्देश्य केवल शान्तिपाठ और स्वस्तिपाठ मात्र के लिए है। इनका समावेश पाठ के अन्तर्गत नहीं किया जाता है।

ॐ सद्योजातंप्रपद्यामिसद्योजातायवैनमोनमः ।।
भवेभवेनातिभवेभवस्वमांभवोद्भवायनमः ।।५।।

भाष्यम्–महादेवस्य पञ्चवक्त्रेषु सम्प्रति पश्चिमवक्त्रप्रतिपादकमन्त्र उच्यते— सद्योजाताय = पश्चिमवक्त्राय, शिवं प्रपद्यामि = आश्रयामि, एतादृशाय, सद्योजाताय = शिवाय, वै, नमः, भवे भवे = तत्तज्जन्मनि, मां = भक्तं, न भवस्व = न प्रेरय, माम्, अतिभवे = अपुनर्भवाय, भवस्व = प्रेरय, भवोद्भवाय = सद्योजाताय, तुभ्यं, नमः = नमोऽस्तु।

हिन्दी–शिवजी का एक पञ्चमुखी स्वरूप भी है, उसके पश्चिम मुख का यह वर्णन है। मैं सद्योजात नामक शिव के पश्चिममुख की आराधना करता हूँ, उसको प्रणाम करता हूँ। भगवन्! मुझे अनेक जन्मबन्धनों में मत डालिए, मुझे तत्त्वज्ञान द्वारा मोक्ष प्राप्त कराइए। संसार के उद्धारक सद्योजात के लिए प्रणाम है ।।५।।

वामदेवायनमोज्येष्ठायनमःश्रेष्ठायनमोरुद्रायनमः कालायनमःकलविकरणायनमोबलविकरणायनमोबलायनमोबलप्रमथनायनमः सर्वभूतदमनायनमोमनोन्मनायनमः ।।६।।

भाष्यम्– उत्तरवक्त्रप्रतिपादकमन्त्र उच्यते— उत्तरवक्त्ररूपाय वामदेवाय नमः, वामदेवस्यैव अङ्गभूता इमे देवाः, तेषां क्रमशो नामानि— ज्येष्ठाय, श्रेष्ठाय, रुद्राय, कालाय, कलविकरणाय, बलविकरणाय, बलाय, बलप्रमथनाय, सर्वभूतदमनाय, मनोन्मनाय च नमः अस्तु।

हिन्दी–यह उत्तरमुख का वर्णन है— उत्तरमुख रूपी वामदेव के लिए नमस्कार है। निम्नलिखित देव वामदेव की पीठशक्तियों के नाम हैं— ज्येष्ठ,

श्रेष्ठ, रुद्र, काल, कलविकरण, बलविकरण, बल, बलप्रमथन, सर्वभूतदमन और मनोन्मन— उक्त सभी देवों के लिए नमस्कार है ॥६॥

अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ॥
सर्वेभ्यःसर्वशर्वेभ्योनमस्तेअस्तुरुद्ररूपेभ्यः ॥७॥

भाष्यम्–दक्षिणवक्त्रप्रतिपादकमन्त्र उच्यते— अघोरेभ्यः = दक्षिणवक्त्ररूपदेवेभ्यः नमः, घोराः = उग्राः, घोरतराः = तमोभावेन अतिशयेन घोराः, हे शर्व = परमेश्वर ! ते = त्वदीयेभ्यः, त्रिविधेभ्यः, सर्वेभ्यः, रुद्ररूपेभ्यः सर्वतः नमः अस्तु ।

हिन्दी–यह दक्षिणमुख का वर्णन है— सत्त्वगुण से अघोर, राजस गुण से घोर और तामस गुण से घोरतर शर्व (शिव) ! हम आपके तीनों रूपों को सब स्थानों और तीनों कालों में सदैव प्रणाम करते हैं ॥७॥

तत्पुरुषायविद्महे महादेवायधीमहि ॥
तन्नोरुद्रःप्रचोदयात् ॥८॥

भाष्यम्–प्राग्वक्त्रप्रतिपादकमन्त्र उच्यते— तत्पुरुषाय = प्राग्वक्त्रदेवाय, अत्र द्वितीयार्थे चतुर्थी, विद्महे = गुरूपदेशाज्जानीमहे, ज्ञात्वा च महादेवाय = तं महादेवं, धीमहि = ध्यायेम, तत् = तस्मात्कारणात्, रुद्रः = देवः, नः = अस्मान्, प्रचोदयात् = ज्ञानध्यानार्थं प्रेरयतु ।

हिन्दी–यह पूर्वमुख का वर्णन है— गुरु के उपदेश से हम उस तत्पुरुष देव को जानते हैं, इस कारण वह रुद्रदेव हमको सद्ज्ञान एवं ध्यान के लिए प्रेरणा करें ॥८॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम् ॥
ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्माशिवोऽमेअस्तु सदाशिवोम् ॥९॥

भाष्यम्–ऊर्ध्ववक्त्रप्रतिपादकमन्त्र उच्यते— सोऽयम् ऊर्ध्ववक्त्रो देवः, सर्वविद्यानां = वेदशास्त्रादीनाम्, ईशानः = नियामकः, तथा सर्वभूतानाम् = अखिलप्राणिनाम्, ईश्वरः = नियन्त्रकः, ब्रह्माधिपतिः = वेदस्य पालकः, तथा ब्रह्मणः = हिरण्यगर्भस्य, अधिपतिः = स्वामी, एतादृशः, ब्रह्मा, अस्ति, सोऽयम्, मे =

ममानुग्रहाय, शिवः = शान्तः, अस्तु, सदा शिवोऽम्, स एव सदाशिवः, ॐ अहं भवामि ।

हिन्दी–यह ऊर्ध्वमुख का वर्णन है— वेदशास्त्रादि समस्त विद्याओं तथा समस्त प्राणियों के नियामक, वेद के रक्षक, हिरण्यगर्भ के अधिपति शिवजी हमारे ऊपर कृपा करने के लिए शान्त हों, उनकी कृपा से मैं सदाशिव रूप बनूँ ॥९॥

ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्तेपितानमस्तेऽअस्तुमामाहिꣳसीः ॥ निर्वर्त्तयाम्म्यायुषेन्नाद्द्यायप्प्रजननायरायस्प्पोषाय सुप्रजास्त्वाय-सुवीर्य्याय ॥१०॥

इसकी व्याख्या ६ठे अध्याय के ८वें मन्त्र के रूप में हो चुकी है ॥१०॥

विनियोगः–ॐ विश्वानि देवेत्यस्य नारायण ऋषिः, गायत्री छन्दः, सविता देवता शान्तिपाठे विनियोगः।

ॐ व्विश्श्वानिदेवसवितर्द्दुरितानिपरासुव ॥
यद्भद्रन्तन्नऽआसुव ॥११॥

भाष्यम्–सवितः देव ! सूर्य ! विश्वानि = समस्तानि, दुरितानि = पापानि, परासुव = विनाशय, यद् भद्रं = कल्याणकरं, तत्, नः = अस्मान् प्रति, आसुव =प्रयच्छ ।

हिन्दी–हे सूर्यदेव ! हमारे सम्पूर्ण पापों को दूर कीजिए और जो कल्याणकारक हो वह हमें प्राप्त कराइए ॥११॥

ॐ द्यौःशान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवीशान्तिरापःशान्तिरोषधयः-शान्तिः ॥ व्वनस्प्पतयःशान्तिर्व्विश्श्वेदेवाः शान्तिर्ब्ब्रह्मशान्तिः-सर्व्वꣳशान्तिःशान्तिरेवशान्तिःसामाशान्तिरेधि ॥१२॥

इसकी व्याख्या ९वें अध्याय के १७वें मन्त्र के रूप में की जा चुकी है ॥१२॥

ॐ सर्व्वेषां वा एष व्वेदानाꣳरसो यत्साम सर्व्वेषामेवैनमेतद्-वेदानाꣳरसेनाभिषिञ्चति ॥१३॥

इति रुद्रे दशमोऽध्यायः ।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवतु ॥

सवारिष्टशान्तिर्भवतु ॥ अनेन रुद्राभिषेककर्मणा श्रीमहारुद्रः प्रीयतां न मम ॥ ॐसदाशिवार्पणमस्तु ॥

इति स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राध्यायः ।

हिन्दी–यह 'रुद्राष्टाध्यायी' सभी वेदों का रस (सार) है। इसी को चारों वेदों के सारभाग से सिंचित (अभिषिक्त अथवा संगृहीत) किया गया है। यही इसका महत्त्व है। ॐ शान्तिः ३ और सुशान्ति हो। सभी अरिष्टों की शान्ति हो। इस रुद्राभिषेक कर्म से भगवान् भवानीशङ्कर महारुद्र सदा प्रसन्न हों। मेरा इसमें कुछ नहीं है, मेरी यह उपासना शिवजी को सादर समर्पित है ॥१३॥

इति नैनीतालमण्डलाभिजनश्रौतस्मार्तधर्मधुरन्धर**पण्डिततारादत्तात्मज-श्रीब्रह्मानन्दत्रिपाठि**कृत-श्रीरुद्राष्टाध्याय्यां संस्कृतभाष्य-हिन्दीटीकाभ्यां संवलितः दशमोऽध्यायः ॥१०॥

पीठमूर्तिः

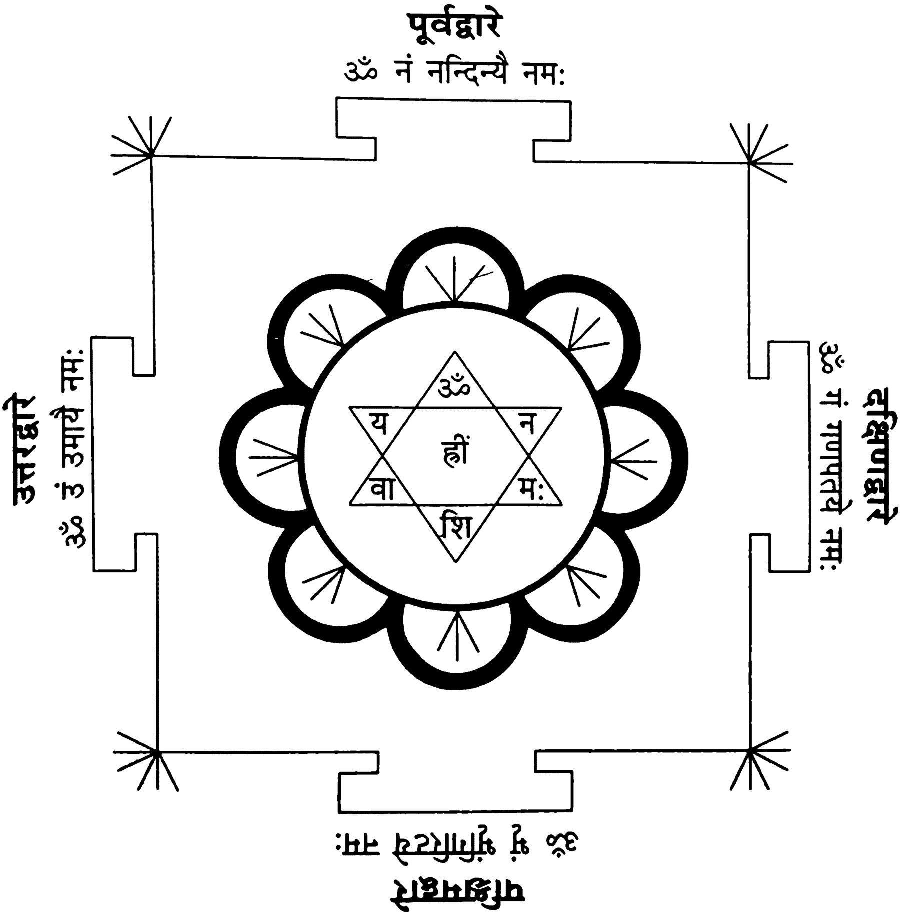
पूर्वद्वारे
ॐ नं नन्दिन्यै नमः
दक्षिणद्वारे
ॐ गं गणपतये नमः
पश्चिमद्वारे
ॐ भृं भृंगिरिटये नमः
उत्तरद्वारे
ॐ उं उमायै नमः
ॐ
न
मः
शि
वा
य
ह्रीं

परिशिष्टम्

संक्षिप्त-पार्थिवपूजनम्

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्। सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि ॥१॥ वन्दे महेशं सुरसिद्धसेवितं भक्तैः सदा पूजितपादपद्मम्। ब्रह्मेन्द्रविष्णुप्रमुखैश्च वन्दितं ध्यायेत्सदा कामदुघं प्रसन्नम् ॥२॥

कर्ता दीपम्प्रज्वाल्य आचम्य प्राङ्मुखोपविष्टः देशकालौ सङ्कीर्त्य अमुककामः पार्थिवपूजनं करिष्ये। ॐ हराय नमः इति मृदाहरणम्। ॐ महेश्वराय नमः इति सङ्घट्टनम्। ॐ शूलपाणये नमः इति प्रतिष्ठापनम्। ॐ पिनाकिने नमः इति आवाहनम्। ध्यानम्—ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं, रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्। पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं, विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥ इति ध्यात्वा—ॐ शिवाय नमः इति मन्त्रेण पाद्यम्, अर्घ्यम्, आचमनीयञ्च समर्प्य ततः ॐ पशुपतये नमः इति स्नानम्। ॐ शिवाय नमः इति वस्त्रं, यज्ञोपवीतं, गन्धम्, आभूषणं, पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं, फलं, ताम्बूलं, भूषणार्थे द्रव्यं च समर्प्य—१. ॐ शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः प्राच्याम्। २. ॐ भवाय जलमूर्तये नमः आग्नेय्याम्। ३. ॐ रुद्राय अग्निमूर्तये नमः दक्षिणस्याम्। ४. ॐ उग्राय वायुमूर्तये नमः नैर्ऋत्याम्। ५. ॐ भीमाय आकाशमूर्तये नमः पश्चिमायाम्। ६. ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये नमः वायव्याम्। ७. ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः उत्तरस्याम्। ८. ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः ऐशान्याम् इति। ॐ ह्रौं ह्रीं जूं सः शिवाय नमः इत्यनेन मूलमन्त्रेण पूर्वोक्तक्रमेण अष्टमूर्तीनां पूजनं कुर्यात्। ततः ॐ महादेवाय नमः इति क्षमायाचनम्।

प्रार्थना

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं,
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः ।
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो
यद् यत् कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ॥
शिवो गुरुः शिवो देवः शिवो बन्धुः शरीरिणाम् ।
शिव आत्मा शिवो जीवः शिवादन्यन्न किञ्चन ॥
हर भव शिव रुद्र चन्द्रमौले गिरिश गणेश महेश पार्वतीश ।
इति मम वदतो दिनानि यान्तु स्मरहर किं बहु जल्पकल्पनाभिः ॥
भूमौ स्खलितपादानां भूमिरेवावलम्बनम् ।
त्वयि जाताऽपराधानां त्वमेव शरणं प्रभो ॥
अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदे पदे ।
कः परः सहनो लोके केवलं स्वामिनं विना ॥
अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर ॥
कोटयो ब्रह्महत्यानां गम्यागम्यस्य कोटयः ।
सद्यः प्रलयमायान्ति महादेवस्य कीर्तनात् ॥
वयं धन्या वयं धन्या वयं धन्या जगत्पते ।
शिवे भक्तिः शिवे भक्तिः शिवे भक्तिर्भवेद्भवे ॥
मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नस्त्वत्समो नहि ।
इति सञ्चिन्त्य सञ्चिन्त्य प्राणान् सन्धारयाम्यहम् ॥
मा मतिः परदारेषु परद्रव्येषु मा मतिः ।
परापवादिनी जिह्वा मा भूज्जन्मनि जन्मनि ॥
करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम् ।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ॥

शिवतत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर ।
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः ॥
अद्य मे सफलं जन्म ह्यद्य मे सफलं तपः ।
अद्य मे सफलं ज्ञानं शम्भो त्वत्पादसेवनात् ॥

नीराजनम्

ॐ जयदेव जयाजेय जय शङ्कर शाश्वत ।
जय सर्वसुराध्यक्ष जय सर्वसुरार्चित ॥१॥
जय सर्वगुणातीत जय सर्ववरप्रद ।
जय नित्यं निराधार जय विश्वम्भराव्यय ॥२॥
जय विश्वैकवन्द्येश जय नागेन्द्रभूषण ।
जय गौरीपते शम्भो जय चन्द्रार्कशेखर ॥३॥
जय कोट्यर्कसङ्काश जयानन्तगुणाश्रय ।
जय रुद्र विरूपाक्ष जयाचिन्त्य निरञ्जन ॥४॥
जय नाथ कृपासिन्धो जय भक्तार्तिभञ्जन ।
जय दुस्तरसंसारसागरोत्तारण प्रभो ॥५॥
प्रसीद मे महाभाग संसारार्तस्य खिद्यतः ।
सर्वपापक्षयं कृत्वा रक्ष मां परमेश्वर ॥६॥
महादारिद्र्यमग्नस्य महापापहतौजसः ।
महाशोकविनष्टस्य महारोगातुरस्य च ॥७॥
ऋणभारपरीतस्य दह्यमानस्य कर्म्मभिः ।
ग्रहैः प्रपीड्यमानस्य प्रसीद परमेश्वर ॥८॥
दरिद्रः प्रार्थयेद् देवं पूजान्ते गिरिजापतिम् ।
अर्थाढ्यो वापि राजा वा प्रार्थयेद् देवमीश्वरम् ॥९॥

दीर्घमायुः सदारोग्यं कोशवृद्धिर्बलोन्नतिः ।
ममास्तु नित्यमानन्दः प्रसादात्तव शङ्कर ॥१०॥
शत्रवः संक्षयं यान्ति प्रसीदन्तु मम ग्रहाः ।
नश्यन्तु दस्यवो राष्ट्रे जनाः सन्तु निरामयाः ॥११॥
दुर्भिक्षमारिसन्तापाः शमं यान्तु महीतले ।
सर्वसस्यसमृद्धिश्च भूयात्सुखमया दिशः ॥१२॥
चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च ।
त्वमेव सर्वज्योतींषि ह्यारार्तिं प्रतिगृह्यताम् ॥१३॥

इति नीराजनम् ।

मानसपूजनम्

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानञ्च दिव्याम्बरं,
नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदाङ्कितं चन्दनम् ।
जातीचम्पकबिल्वपत्ररचितं पुष्पञ्च धूपन्तथा,
दीपन्देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम् ॥१॥
सौवर्णे मणिखण्डरत्नरचिते पात्रे घृतं पायसं,
भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं फाणितम् ।
शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखण्डोज्ज्वलं,
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु ॥२॥
छत्रञ्चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं,
वीणाभेरिमृदङ्गकाहलकला गीतञ्च नृत्यन्तथा ।
साष्टाङ्गम्प्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत्समस्तं मया,
सङ्कल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो ॥३॥
आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं,
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः ।
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो,
यद्यत् कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ॥४॥

पुष्पाञ्जलि:

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा, श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम् ।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ॥१॥

शिव: पृथ्वी शिवो वारि: शिव: सूर्य: शिव: शशी ।
शिवो वह्नि: शिवो वायु: शिव: खं ॐ शिवोऽस्म्यहम् ॥२॥

शिवतत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर ।
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नम: ॥३॥

हर भव शिव रुद्र चन्द्रमौले गिरिश गणेश महेश पार्वतीश ।
इति मम वदतो दिनानि यान्तु स्मरहर किं बहुजल्पकल्पनाभि: ॥४॥

भूमौ स्खलितपादानां भूमिरेवावलम्बनम् ।
त्वयि जातापराधानां त्वमेव शरणं प्रभो ॥५॥

अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदे पदे ।
क: पर: सहनो लोके केवलं स्वामिना विना ॥६॥

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर ॥७॥

कोटयो ब्रह्महत्यानां गम्यागम्यस्य कोटय: ।
सद्य: प्रलयमायान्ति महादेवस्य कीर्तनात् ॥८॥

वयं धन्या वयं धन्या वयं धन्या जगत्पते ।
शिवे भक्ति: शिवे भक्ति: शिवे भक्तिर्भवेद् भवे ॥९॥

सदा भूयात्सदा भूयात् सदा भूयान्न संशय: ।
मत्सम: पातकी नास्ति पापघ्नस्त्वत्समो नहि ॥१०॥

इति सञ्चिन्त्य सञ्चिन्त्य प्राणान्सन्धारयाम्यहम् ।
मा मति: परदारेषु परद्रव्येषु मा मति: ।
परापवादिनी जिह्वा मा भूज्जन्मनि जन्मनि ॥११॥

ॐ पूर्णमद: पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते । पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ।

भाष्यकर्तुर्वंशवर्णनम्

माद्यदुद्दामविघ्नौघ-द्विरेफकुलतर्जकम् ।
सिन्दूरारुणशोभाढ्यं स्मेराऽऽस्यं हृदि भावये ॥

राराज्यते भारतभूर्महार्हैं रत्नैरशेषैरभितः प्रकीर्णैः ।
पर्युत्सुका यत्र निवासहेतोः स्वर्गीयसौख्यानि विहाय देवाः ॥१॥

तत्रैकदेशे यशसां निधानो विराजते **गुर्जरदेश** एषः ।
यत्राऽभवद् **गौतमगोत्र**जन्मा **सत्सामवेदी कुथुमाऽऽख्यशाखी** ॥२॥

लोकोत्तरज्ञानविकीर्णभाभिर्भास्वत्तनुः कोऽप्यवताररूपः ।
श्रीमान् सुधीर्नीतिविदां वरिष्ठः षट्शास्त्रवेत्ता विबुधावतंसः ॥३॥

चन्द्रश्रिया भूषितसर्वकायः **श्रीचन्द्र**नामा प्रथित**त्रिपाठी** ।
युग्माब्धिरामैकशकाब्दमध्ये विख्यातकीर्तिर्नृपतिर्बभूव ॥४॥

उद्यानचन्द्रः सुजनाभिरामः कूर्माचलीयोऽभिनवः शशाङ्कः ।
राज्ये तदीये **शुकदेव**नामा **श्रीचन्द्रदेवः** स्वसुतेन साकम् ॥५॥

कूर्माद्रिर्मुकुटे निसर्गरुचिरे **कोसी-सुवाँलाऽऽ**वृते-
श्रीग्वल्ला-गणनाथ-सैममहिते नन्दाऽऽख्यदेव्या युते ।
देवैः सिद्धमहर्षिभिर्बुधजनैः संसेविते प्राक्तनैर्-
अल्मोडानगरे समेत्य ससुखं वासं स्वकीयं व्यधात् ॥६॥

धरामूर्ध्नि रम्ये हिमाद्रेः प्रसारे समेषां जनानां मनोदृग्विहारे ।
चिरं पावने सर्वदा निर्विकारे निवासं स चक्रेऽथ **चौसार**सारे ॥७॥

स्वीकृत्य वासं नृपतेर्निदेशान्मन्त्रागमज्ञाननिधिः स तूष्णीम् ।
अभ्यर्च्य देवान् कुलदेवताश्च तत्रत्य भूमिं सजलामकार्षीत् ॥८॥

प्रसन्नेन राज्ञा तदा भूसुराय समभ्यर्च्य भूमिं धनं पुष्कलञ्च ।
समाहूय दत्तं सपुत्रेण तेन तदङ्गीकृतं सत्सभापण्डितेन ॥९॥

सम्मानसीमामधिरुह्य धीरः सद्धर्मनिष्ठः श्रुतिशास्त्रसम्मतान् ।
गृह्यान् बहून् यज्ञविधीन् विधाय पुत्रे समारोप्य गृहस्य भारम् ॥१०॥

विशेषसन्यासविधानतो यः सन्यस्तदेहः स चिरं चकास्ति ।
वंशे तदीये गुणगौरवाऽऽढ्ये जाता अनेके विदुषां वरेण्याः ॥११॥

तस्मिन् सुधांशुविमले सुकुले बभूव श्रीमान् सतां गुणधरो **मुरलीधरो**ऽयम् ।
यस्यावदातचरितान्यधुनापि मर्त्या आदर्शवद् व्यवहरन्ति न विस्मयोऽत्र ॥१२॥

तस्माद् बभूव सुदिने स्वकुलावतंसः प्राज्ञः प्रतापविमलो द्विजकर्मनिष्ठः ।
पित्रोर्मनोरथशतैः सुकृतैरनेकैर्मान्यो **मनोरथ** इति प्रथिताभिधानः॥१३॥

जातास्ततो बलपराक्रमशीलयुक्ताः पुत्राः कुशाग्रधिषणास्त्रय एव योग्याः ।
तेष्वग्रिमः सुविदितो **हरिदत्त** नामा स्वल्पायुरेव सुरलोकमगात् स्वपुण्यैः॥१४॥

तस्यानुजः सच्चरितः सुरूपः **श्रीकृष्ण** नामा महनीयकीर्तिः ।
भाषानुरागात् स गतो विदेशं स्निग्धान् समग्रान् प्रविहाय बन्धून् ॥१५॥

भ्राता चित्रकलासु तस्य निपुणः सङ्गीतवित् सात्त्विकः
सद्वैद्यः सुकृती परोपकरणो गृह्यागमे पारगः ।
नित्यं शम्भुपदारविन्दयुगले श्रद्धासमृद्धाशयस्-
तारादत्तबुधस्त्रिपाठिकुलजः समानसीमाश्रितः ॥१६॥

पत्नी तदीया गुणशीलयुक्ता **खष्टी**ति नाम्नी पतिभक्तिनिष्ठा ।
कन्याऽथ **पाण्डेयशिरोमणेः** सा प्रासूत पुत्रं दुहिताद्वयञ्च ॥१७॥

दिवङ्गता पञ्चखशून्ययुग्मे संवत्सरे श्रावणमासि कृष्णे ।
गौरीतिथौ पुण्यवती शनौ सा कुटुम्बहार्दं सहसा विहाय ॥१८॥

तत्सूनुर्जननीवियोगवशतः स्वाध्यायबुद्ध्या गृहात्
काशीम्प्राप्य भिषग्गुरोरधिजगे **श्रीलालचन्द्रा**भिधात् ।
आयुर्वेदमितःपरं गुरुवरात् **खिस्ते**ऽन्ववायोद्भवाद्
ब्रह्मानन्दबुधोऽपठत् सुललितां साहित्यविद्यामपि ॥१९॥

तत्पत्नी सकलाकलासु कुशला **तारा**ऽभिधा श्रीमती
पुत्रान् सा चतुरः सुताद्वयमपि प्रासूत काले शुभे ।
पुत्राः संस्कृतवाङ्मयं पुनरिमे पाश्चात्यविद्यामपि
श्रीविश्वेशकृपाकटाक्षवशतः सर्वे पठन्त्यादरात् ॥२०॥

कूर्माद्रौ **नयनीसरोवर**मिति ख्यातश्च यन्मण्डलं
तस्यैवास्ति समीपवर्ति सुमहद् **भीमाभिधानं सरः** ।
प्राक्तस्यास्ति **शिलावटी**तिविदितो ग्रामोऽभिरामो द्विजै-
स्तस्मिन् **ब्रह्मकुटी** तदीयवसतिः पुण्यव्रजैरर्जिता॥२१॥

त्रिपाठिकुलवर्य्याणां सदाचारपरायणा ।
सद्धर्मकर्मनिष्णाता राजिरेषा विराजताम् ॥२२॥

लघ्वतिलघुवस्तुनिष्ठप्रश्नोत्तराणि

लघूत्तरीयाणि प्रश्नोत्तराणि

१.प्रश्नः—शुक्लयजुर्वेदीयरुद्राष्टाध्यायाः परिचयो देयः?

उत्तरम्—यजुर्वेदे सर्वविधानां यज्ञयागादीनां वर्णनं समुपलभ्यते। तत्र द्वौ भागौ शुक्लकृष्णभेदेन। अत्र चत्वारिंशदध्यायाः सन्ति। तत्र पूर्वार्द्धे षोडशतमेऽध्याये शतरुद्रीयमन्त्राणां संग्रहः। शुक्लयजुर्वेदीयसंहितायाः महत्त्वपूर्णभागोऽस्ति रुद्राष्टाध्यायी। अत्र दशाध्यायानां संग्रहो विद्यते। अत्र प्रथमाध्यायतः अष्टमाध्यायपर्यन्तं मूलमन्त्रभागः। चरमस्य द्वावध्यायौ जगन्मङ्गलभावनया शान्ति एवं प्रार्थनास्वरूपं संगृहीतौ।

२.प्रश्नः—रुद्राष्टाध्यायीं पाठकरणेन किं फलं लभ्यते?

उत्तरम्—अस्याः पाठात् सर्वविधपापानां विनाशो भवति। यथा—

चमकं नमकं चैव पौरुषं सूक्तमेव च।
नित्यं त्रयं प्रयुञ्जानो ब्रह्मलोके महीयते।।

चमकं नमकं होतृञ्जयेत् पुरुषसूक्तकम्।
प्रविशेत् स महादेवं गृहं गृहपतिर्यथा।। इति।

३.प्रश्नः—अत्राष्टाध्यायां के के विषया प्रच्छन्नाः सन्ति?

उत्तरम्—अत्र ब्रह्मणो निर्गुणसगुणरूपयोर्वर्णनं विद्यते। एवमेवोपासनायाः विधिः, भक्तेर्महिमा, रोगनिवारणार्थं शान्तिविधिः, यज्ञविधानमित्यादीनां विषयाणां विवेचनं सम्यग्विहितमस्ति।

४.प्रश्नः—रुद्राष्टाध्यायीग्रन्थस्य किं वैशिष्ट्यम्?

उत्तरम्—अष्टमाध्यायस्य ४, ८, १२, १५, १८, २१, २३, २४, २५ एवं २७ विंशतितममन्त्राणां अन्तभागे 'न' इति लिखितमस्ति। एषां मन्त्राणां प्रयोजनं षडङ्गशतरुद्रीपाठे विद्यते।

५.प्रश्नः—षडङ्गशतरुद्रीपाठे को विधिः?

उत्तरम्—प्रथमं तावत् प्रथमतः सप्तमाध्यायपर्यन्तं पठनीयम्। ततोऽष्टमाध्यायस्य चत्वारो मन्त्रान् पठित्वा समग्रो पञ्चमाध्यायः पठनीयः। पुनरष्टमाध्यायस्य अग्रिमा मन्त्राश्चत्वारो पठनीयाः। इत्थं दशवारमष्टमाध्यायेन सदैव पञ्चमाध्यायस्यावृत्तिं दशवारं विदध्यात्।

६.प्रश्नः—पञ्चाङ्गं शतरुद्रीयं किम्?

उत्तरम्— वक्ष्ये रुद्रविमानन्तु पञ्चाङ्गः सर्वदं परम्।
हृदयं शिवसङ्कल्पं शिरःसूक्तञ्च पौरुषम्।।

शिखाहृदयसम्भृतं सूक्तमाशुः कवचमेव च।
वेदवादिभिराख्यातमस्त्रं वै शतरुद्रियम्।।

शतरुद्रियसंज्ञस्य रुद्रस्याङ्गानि पञ्च हि।
पञ्चाङ्गं न्यस्य तं ध्यात्वा जयेद्रुद्रास्ततः क्रमात्।। इति।

६.प्रश्नः—पञ्चाङ्गपक्षे कः पाठक्रमः?

उत्तरम्—'यज्जाग्रत' इत्यारभ्य पञ्चाङ्गानि सरुद्राणि पठित्वा मध्ये नववारं रुद्राध्यायं पठित्वा अन्ते च 'यज्जाग्रत' इत्यारभ्य सरुद्रं पञ्चाङ्गं सशीर्षं सजटं जप्त्वा 'ऋचं वाचम्' इति शान्त्यध्यायं पठित्वा 'ॐ शान्ति'रिति त्रिरुच्चारणम्।

८.प्रश्नः—भस्माभिमन्त्रणं केन मन्त्रेण भवति?

उत्तरम्—दक्षिणहस्ते भस्म गृहीत्वा वामहस्तेनाच्छाद्य ॐ अग्निरिति भस्म वायुरिति भस्म जलमिति भस्म स्थलमिति भस्म व्योमेति भस्म सर्वं ह वा इदं भस्म मन एतानि चक्षूंषि भस्मानि इति।

९.प्रश्नः—केन मन्त्रेण भस्मधारणम्?

उत्तरम्—'त्र्यायुषं यमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषं यद्देवेषु त्र्यायुषम् तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम्' इति मन्त्रेण।

१०.प्रश्नः—कस्मिन् कस्मिन् कर्मणि रुद्राक्षधारणमावश्यकम्?

उत्तरम्— स्नाने दाने जपे होमे वैश्वदेवे सुरार्चने।
प्रायश्चित्ते तथा श्राद्धे दीक्षाकाले विशेषतः।।

अरुद्राक्षधरो भूत्वा यत्किञ्चित् कर्म वैदिकम्।
कुर्याद्विप्रस्तु यो मोहात् स च नाप्नोति तत्फलम्।। इति।

११. प्रश्नः—अथ चमकानुसमन्वितो विधिः कः?

उत्तरम्—पूर्वं पञ्चाङ्गानि पठित्वा मध्ये शतरुद्रीयं नीलसूक्तं वा पठित्वा

वेदवेदाब्धिरामाश्च रामरामद्विकैककम्।
द्वौ द्वौ पृथक्च मन्त्रेण नमकाश्चमकाः स्मृताः।।

इत्थं क्रमेण अष्टप्रणवयुक्तं रुद्राध्यायं प्रतिचमकं पठेत्। अन्ते च वयं सोमेत्यष्टानां कण्डिकानाम्, उग्रश्चेति सप्तानां कण्डिकानां जपं कृत्वा ऋचं वाचमित्यादि शान्त्यध्यायं जपित्वा ॐ शान्तिः इति त्रिरुच्चारणम्।

१२. प्रश्नः—शान्त्यध्याये 'अभीषुण' इत्यादिमन्त्रस्य कोऽर्थः?

उत्तरम्—'अभिषुण सखीनामविताजरितॄणाम् शतम्भवास्यूतिभि'रिति मन्त्रस्वरूपम्। सखीनां मित्राणां स्तुतिकर्तॄणां पालयिता शतेन रक्षाभिः सह अस्माकं सुष्ठु सम्मुखो भव इह इति।

१३. प्रश्नः—याज्ञवल्क्यस्य परिचयो देयः?

उत्तरम्—याज्ञवल्क्यस्य पितुर्नाम देवराज आसीत्। अयं वेदव्यासस्य चतुर्भ्यः शिष्येभ्यश्चतुर्णां वेदानां सम्यगध्ययनं कृतवान्। शुक्लयजुर्वेदशाखा याज्ञवल्क्येनैव सम्पदिता; यतोहि सूर्यसकाशादधीत्य ज्ञानरत्नं समर्जितवानयम्।

●

अतिलघूत्तरीयाणि प्रश्नोत्तराणि

१.प्रश्नः– वेदस्य किं लक्षणम्?
उत्तरम्– अपौरुषेयवाक्यं वेदः।

२.प्रश्नः– केन प्रतिपादितं वेदस्य लक्षणम्?
उत्तरम्– सायणाचार्येण प्रतिपादितम्।

३.प्रश्नः– 'वेद'शब्दस्य कोऽर्थः?
उत्तरम्– विद्यन्ते धमार्थकाममोक्षसंज्ञकाः पुरुषार्थाः यैस्ते वेदाः इति वेदशब्दस्यार्थः।

४.प्रश्नः– कति सन्ति वेदाः?
उत्तरम्– चत्वारो वेदाः—ऋग्यजुःसामार्थवाख्याः।

५.प्रश्नः– वेदानां मुखं कः?
उत्तरम्– वेदानां मुखं व्याकरणशास्त्रं प्रोक्तम्।

६.प्रश्नः– को नाम स्वाध्यायः?
उत्तरम्– वेदानां सस्वरः पाठः स्वाध्यायः कथ्यते।

७.प्रश्नः– 'शन्नः कुरु प्रजाभ्यः' इति सूक्तिः कस्य वेदस्य?
उत्तरम्– यजुर्वेदस्य।

८.प्रश्नः– यजुर्वेदः कतिभागेषु विभक्तः?
उत्तरम्– द्वयोर्भागयोर्विभक्तः।

९.प्रश्नः– यजुर्वेदस्य कौ द्वौ भागौ?
उत्तरम्– शुक्लयजुर्वेदः कृष्णयजुर्वेदश्च।

१०.प्रश्नः– किमर्थं शुक्लयजुर्वेद इति नाम?
उत्तरम्– महर्षिणा याज्ञवल्क्येन सूर्योपासनया प्राप्तत्वात्।

१.प्रश्नः– रुद्राष्टाध्यायी इति कुतः संगृहीता?

उत्तरम्– रुद्राष्टाध्यायी शुक्लयजुर्वेदस्य महत्त्वपूर्णभागो वर्तते।

२.प्रश्नः– वेदशब्दस्य के समानार्थकाः?

उत्तरम्– आम्नायः वेदः श्रुतिः अनुश्रवः आगमः इत्यादिकाः शब्दाः वेदशब्दस्य समानार्थकाः।

३.प्रश्नः– सत्तायां विद्यते ज्ञाने वेत्ति विन्ते विचारणे।
विन्दते विन्दति प्राप्तौ श्यन लुक् श्नम् शेष्विदं क्रमात्॥
इति कारिकायाः का व्याख्या?

उत्तरम्– १. सत्तार्थकाद्विद्धातोः घञि प्रत्यये कृते सति यो वेदशब्दो व्युत्पद्यते तस्य विद्यते सत्तायां गृह्णाति वस्तु अनेन इति वेदः इत्यर्थो जायते।

२. ज्ञानार्थकाद्विद्धातोः घञि कृते सति विदन्ति एभिः धर्म ब्रह्मणि क्रिया ज्ञानमयं ब्रह्म वा इति वेदः इति वेदशब्दस्यार्थो निष्पद्यते।

३. विचारार्थकाद्विद्धातोः अचि प्रत्यये कृते निष्पन्नस्य वेदशब्दस्य विन्ते विचारयति धर्म ब्रह्मणी क्रियामयं ब्रह्म वेति वेदः इति अर्थो भवति।

४. लाभार्थकाद्विद्धातोः घञि प्रत्यये कृते निष्पन्नस्य विदशब्दस्य तु विदन्ते स्वरूपं लभन्ते वस्तु अनेन इति वेदः इत्युपजायते।

४.प्रश्नः– सायणाचार्यानुसारं के वेदाः?

उत्तरम्– ऋग्वेदभाष्यभूमिकायां सायणाचार्यः समुद्घोषितवान्—विदन्ति = जानन्ति, विद्यन्ते = भवन्ति, विन्ते = विचारयन्ति, विन्दते = लभन्ते सर्वे मनुष्याः सत्त्वविद्यां यैर्येषु वा तथा विद्वांसश्च भवन्ति ते वेदाः इति।

५.प्रश्नः– कति अध्यायाः सन्ति रुद्राष्टाध्याय्याम्?

उत्तरम्– अष्टौ अध्यायाः सन्ति।

६.प्रश्नः– ब्रह्मानन्दत्रिपाठिना सम्पादितायां रुद्राष्टाध्यायां कति अध्यायाः सन्ति?

उत्तरम्– तत्र तु दश अध्यायाः विभक्ताः सन्ति।

१७.प्रश्नः- रुद्राष्टाध्यायीभागस्य पाठः कुत्र कुत्र लभ्यते?

उत्तरम्- अस्योल्लेखः वेदेषु उपनिषत्सु स्मृतिषु पुराणेषु मीमांसासूत्रेषु च समुपलभ्यते।

१८.प्रश्नः- प्रथमाध्यायस्य किन्नामास्ति?

उत्तरम्- प्रथमोऽध्यायः शिवसङ्कल्पसूक्तनाम्ना प्रथितः।

१९.प्रश्नः- तत्र प्रथमेऽध्याये कतिसंख्याकाः मन्त्राः सन्ति?

उत्तरम्- तत्र प्रथमेऽध्याये ॐ गणानान्त्वा इत्यारभ्य सुषारथि इत्यन्ताः दश मन्त्राः सन्ति।

२०.प्रश्नः- शिवसङ्कल्पसूक्तपठनेन को लाभः?

उत्तरम्- शिवसङ्कल्पसूक्तपठनेन चित्तशुद्धिर्जायते।

२१.प्रश्नः- प्रथमाध्यायस्य चरममन्त्रस्य क आशयः?

उत्तरम्- प्रथमाध्यायस्य चरममन्त्रस्य मदीयं मनः कल्याणकारी सङ्कल्पवत् भवेदित्याशयः।

२२.प्रश्नः- रुद्राष्टाध्याय्यां द्वितीयाध्यायस्य किन्नामास्ति?

उत्तरम्- रुद्राष्टाध्याय्यां द्वितीयाध्यायस्य नारायणसूक्तम्पुरुषसूक्तं वा नाम।

२३.प्रश्नः- द्वितीयाध्याये कति मन्त्राः वर्तन्ते?

उत्तरम्- द्वितीयाध्याये द्वाविंशतिमन्त्राः विद्यन्ते।

२४.प्रश्नः- पुरुषसूक्तं कति मन्त्राणां संग्रहः?

उत्तरम्- पुरुषसूक्तं केवलषोडशमन्त्राणां संग्रहः।

२५.प्रश्नः- शिवसंकल्पसूक्तस्य को ऋषिः?

उत्तरम्- शिवसङ्कल्पसूक्तस्य याज्ञवल्क्यऋषिरस्ति।

२६.प्रश्नः- पुरुषसूक्तस्य ऋषिः कः?

उत्तरम्- पुरुषसूक्तस्य नारायणो ऋषिरस्ति।

२७.प्रश्नः- रुद्राष्टाध्याय्यां तृतीयाध्यायस्य किन्नाम?

उत्तरम्- तृतीयाध्यायस्य अप्रतिरथसूक्तम् नामास्ति।

२८.प्रश्नः- अप्रतिरथसूक्ते कति मन्त्राः सन्ति?

उत्तरम्– अप्रतिरथसूक्ते सप्तदशमन्त्राः सन्ति।

२९.**प्रश्नः– अप्रतिरथसूक्तस्य चरमो मन्त्रः कः?**

उत्तरम्– अप्रतिरथसूक्तस्य चरमो मन्त्रः 'मर्म्माणि ...... मदन्तु' इति विद्यते।

३०.**प्रश्नः– कस्य सूक्तस्य ऋषिरप्रतिरथोऽस्ति?**

उत्तरम्– अप्रतिरथसूक्तस्य ऋषिरप्रतिरथः।

३१.**प्रश्नः– अप्रतिरथसूक्तेन कस्य स्तुतिर्विधीयते?**

उत्तरम्– अप्रतिरथसूक्तेन इन्द्रस्य स्तुतिर्भवति।

३२.**प्रश्नः– रुद्राष्टाध्यायीग्रन्थस्य चतुर्थेऽध्याये किन्नाम सूक्तम्?**

उत्तरम्– चतुर्थेऽध्याये मैत्रसूक्तम्।

३३.**प्रश्नः– विभ्राट्शब्दस्य कोऽर्थः?**

उत्तरम्– विभ्राट्शब्दस्यार्थः सूर्यः।

३४.**प्रश्नः– मैत्रसूक्ते कतिसङ्ख्यका मन्त्राः विद्यन्ते?**

उत्तरम्– सूर्य(मैत्र)सूक्ते सप्तदशसङ्ख्यकाः मन्त्राः सन्ति।

३५.**प्रश्नः– सूर्यसूक्ते तरणीत्यादिमन्त्रस्य को ऋषिः?**

उत्तरम्– 'तरणी विश्वदर्शनो' इत्यादिमन्त्रस्य प्रष्कण्वऋषिः।

३६.**प्रश्नः– सूर्यसूक्ते कस्य मन्त्रस्य जमदग्निऋषिरस्ति?**

उत्तरम्– सूर्यसूक्ते 'वण्महा असि' इत्यादि त्रयोदशतममन्त्रस्य।

३७.**प्रश्नः– चतुर्थेऽध्याये कस्य मन्त्रस्य कुत्सऋषिः?**

उत्तरम्– चतुर्थेऽध्याये सूर्यसूक्ते 'तन्मित्रस्ये'त्यादिमन्त्रस्य कुत्सऋषिरस्ति।

३८.**प्रश्नः– रुद्राष्टाध्यायां पञ्चमाध्याये किन्नाम सूक्तम्?**

उत्तरम्– पञ्चमाध्यायस्य शतरुद्रीयं सूक्तं रुद्रसूक्तं वा नाम।

३९.**प्रश्नः– पञ्चमाध्याये रुद्रसूक्ते कति मन्त्राः सन्ति?**

उत्तरम्– तत्र षट्षष्टीसङ्ख्यकाः मन्त्राः वरीवर्तन्ते।

४०.**प्रश्नः– शतरुद्रीयं सूक्तस्य अपरं किन्नाम प्रथितम्?**

उत्तरम्– अस्य सूक्तस्य अपरं नाम नीलसूक्तं प्रसिद्धम्।

४१.प्रश्नः– षोडशकन्नामकं सूक्तं कतिमन्त्राणां समूहः?
उत्तरम्– शतरुद्रीयसूक्तस्य 'नमस्ते' इत्यारभ्य 'हवामहे' पर्यन्ताः षोडशमन्त्राः।

४२.प्रश्नः– षोडशमन्त्राणां समूहः अन्यत्र कुत्रास्ति?
उत्तरम्– द्वितीयाध्याये पुरुषसूक्ते सहस्रशीर्षेत्यादयो मन्त्राः षोडशसङ्ख्यकाः।

४३.प्रश्नः– नीलसूक्ते प्रथममन्त्रस्य को ऋषिः?
उत्तरम्– नीलसूक्तप्रथममन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः।

४४.प्रश्नः– रुद्रीयसूक्ते कस्य मन्त्रस्य प्रजापतिर्ऋषिः?
उत्तरम्– रुद्रीयसूक्ते 'अध्यवोचे'त्यारभ्य 'नमस्त आयुध' पर्यन्तं दशमन्त्रसमूहस्य प्रजापतिर्ऋषिः वर्तते।

४५.प्रश्नः– शतरुद्रीयसूक्तेन कस्य स्तुतिर्विधीयते?
उत्तरम्– शतरुद्रीयसूक्तेन रुद्रदेवस्य स्तुतिर्भवति।

४६.प्रश्नः– कियद्भिर्मन्त्रैः षोडशोपचारपूजा विधातव्या?
उत्तरम्– षोडशसङ्ख्याकैः मन्त्रैः षोडशोपचारपूजा विधातव्या।

४७.प्रश्नः– रुद्राष्टाध्यायीग्रन्थस्य षष्ठाध्यायस्य किन्नाम?
उत्तरम्– रुद्राष्टाध्यायीग्रन्थस्य षष्ठाध्यायस्य 'महच्छिरःसूक्तमि'ति नाम विद्यते।

४८.प्रश्नः– अनेन महच्छिरेण सूक्तेन कस्य स्तुतिर्भवति?
उत्तरम्– अनेन सूक्तेनापि रुद्रदेवस्यैव स्तुतिर्विधीयते।

४९.प्रश्नः– महच्छिरसूक्तस्थमन्त्राणां के ऋषयः?
उत्तरम्– अत्रत्यानां मन्त्राणां मध्ये चतुर्णां बन्धुऋषिः पञ्चमषष्ठमन्त्रयोः वसिष्ठ-ऋषिः, चरमयोर्मन्त्रयोः नारायण इति त्रयो ऋषयः।

५०.प्रश्नः– षष्ठाध्याये रुद्राष्टाध्याय्यां कति मन्त्राः विद्यन्ते?
उत्तरम्– रुद्राष्टध्याय्यां षष्ठाध्याये अष्टौ मन्त्राः सन्ति।

५१.प्रश्नः– रुद्राष्टाध्याय्याः सप्तमाध्यायस्य किन्नाम?
उत्तरम्– सप्तमाध्यायस्य रुद्रजटासूक्तन्नाम अस्ति।

५२.प्रश्नः– रुद्रजटासूक्तस्य कः कौ के वा ऋषयः?
उत्तरम्– रुद्रजटासूक्तस्य परमेष्ठी प्रजापतिश्च द्वौ ऋषी एव।

५३.प्रश्नः– रुद्रजटासूक्ते कियन्तो मन्त्रा?

उत्तरम्– तत्र रुद्रजटासूक्ते सप्तमेऽध्याये षण्मन्त्राः।

५४.प्रश्नः– उग्रश्चेत्यादिमन्त्रस्य को ऋषिः?

उत्तरम्– उग्रश्चेत्यादिमन्त्रस्य परमेष्ठी प्रजापतिश्च ऋषी स्तः।

५५.प्रश्नः– प्रेतदाहप्रकरणोक्तमन्त्राः के?

उत्तरम्– सप्तमाध्यायस्य चतुर्थमन्त्रतः सप्तममन्त्रं यावच्चत्वारो मन्त्राः प्रेतदाहप्रकरणोक्ताः।

५६.प्रश्नः– एतेषा मन्त्राणां प्रयोगः कुत्र भवति?

उत्तरम्– एतेषां मन्त्राणां प्रयोगः प्रेतदाहसमये भवति।

५७.प्रश्न– प्रेतदाहसमये कति आहूतयो दीयन्ते?

उत्तरम्– प्रेतदाहसमये द्विचत्वारिंशदाहूतयो दीयन्ते।

५८.प्रश्नः– सप्तमाध्यायस्य कश्चरमो मन्त्रः?

उत्तरम्– 'यमाय स्वाहान्तकाय स्वाहा मृत्यवे स्वाहा। ब्रह्मणे स्वाहा ब्रह्महत्यायै स्वाहा। विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा। द्यावापृथिव्यां स्वाहा।' इति।

५९.प्रश्नः– रुद्राष्टाध्यायाः अष्टमाध्यायस्य किन्नामास्ति?

उत्तरम्– अष्टमाध्यायस्य चमकानुवाक इति नाम वर्तते।

६०.प्रश्नः– अष्टमेऽध्याये कतिसङ्ख्याकाः मन्त्राः सन्ति?

उत्तरम्– अष्टमेऽध्याये एकोनत्रिंशन्मन्त्राः सन्ति।

६१.प्रश्नः– तत्र 'वाजश्चमे'त्यादिको कतमो मन्त्रः?

उत्तरम्– 'वाजश्चमे'त्यादिकोऽष्टमाध्यायस्य प्रथमो मन्त्रः।

६२.प्रश्नः– 'वाजश्चमे'त्यादिकानामेकोनत्रिंशन्मन्त्राणां केः ऋषयः?

उत्तरम्– अष्टमाध्यायगतानां समेषां मन्त्राणां ऋषिर्देवाः सन्ति।

६३.प्रश्नः– चमकानुवाकसंज्ञकेऽष्टमेऽध्याये कति मन्त्राः सन्ति?

उत्तरम्– अस्मिन्नष्टमेऽध्याये चमका मन्त्रा एव एकोनत्रिंशन्मिताः सन्ति।

६४.प्रश्नः– चमकानुवाकसंज्ञकेऽध्याये स्वाहान्ताः मन्त्राः कति सन्ति?

उत्तरम्- 'वाजाय स्वाहा' इति एक एव स्वाहान्तो मन्त्रः।

६५.प्रश्नः- रुद्राष्टाध्याय्याः नवमोऽध्यायस्य किन्नाम?

उत्तरम्- रुद्राष्टाध्याय्या नवमोऽध्यायस्य शान्त्यध्याय इति नाम।

६६.प्रश्नः- कस्य मन्त्रस्य ऋषिर्दधीचिः?

उत्तरम्- नवमोऽध्यायस्य प्रथममन्त्रस्य ऋषिः दधीचिरस्ति।

६७.प्रश्नः- शान्त्याख्ये नवमेऽध्याये कति मन्त्राः सन्ति?

उत्तरम्- नवमे शान्त्यध्याये चतुर्विंशतिसङ्ख्यका मन्त्राः सन्ति।

६८.प्रश्नः- चतुर्विंशतितममन्त्रस्य नवमेऽध्याये को ऋषिः?

उत्तरम्- अस्य मन्त्रस्य ऋषिः दधीचिरस्ति।

६९.प्रश्नः- रुद्राष्टाध्याय्यां दशमाध्यायः किन्नामधेयम्?

उत्तरम्- रुद्राष्टाध्यायां दशमाध्यायस्य स्वस्तिप्रार्थनाध्याय इति नाम।

७०.प्रश्नः- स्वस्तिप्रार्थनाध्यायस्य प्रथममन्त्रस्य को ऋषिः?

उत्तरम्- अस्याध्यायस्य प्रथममन्त्रस्य ऋषिः गौतम अस्ति।

७१.प्रश्नः- 'स्वस्तिन' इत्यादि मन्त्रस्य को देवता?

उत्तरम्- अस्य मन्त्रस्य विश्वेदेवा देवता विद्यते।

७२.प्रश्नः- कति मन्त्राः सन्ति दशमेऽध्याये रुद्राष्टाध्यायाम्?

उत्तरम्- तत्र दशमेऽध्याये त्रयोदशमन्त्राः सन्ति।

७३.प्रश्नः- दशमेऽध्याये चरमो मन्त्रः कः?

उत्तरम्- दशमेऽध्याये चरमो मन्त्रः 'सर्वेषां वा एष' इत्यादिकः।

७४.प्रश्नः- 'द्यौः शान्तिरि'त्यादिमन्त्रस्य को ऋषिः कश्च देवता?

उत्तरम्- अस्य मन्त्रस्य ऋषिर्दधीचिः देवता च विश्वेदेवा।

●

वस्तुनिष्ठप्रश्नाः

१. यजुर्वेदस्य प्रतिपाद्यविषयः कः?

(क) ज्ञानम् (ग) स्तुतिः

(ख) कर्मकाण्डम् (घ) गायनम्

२. ऋग्वेदस्य देवताः कतिसङ्ख्याकाः?

(क) त्रि (ग) पञ्चविंशति

(ख) पञ्चत्रिंशत् (घ) सप्तत्रिंशत्

३. कियन्ति मण्डलानि ऋग्वेदे सन्ति?

(क) पञ्च (ग) सप्तदश

(ख) त्रिंशत् (घ) दश

४. कति सन्ति ऋक्सूक्तयः?

(क) ८५ (ख) १०२८

(ग) १०१६ (घ) १०८५०

५. ब्रह्मणः केन वेदेन सम्बन्धः?

(क) ऋग्वेदेन (ग) यजुर्वेदेन

(ख) सामवेदेन (घ) अथर्ववेदेन

६. संगच्छध्वं संवदध्वं संवो मनांसि जानतामिति कस्य वेदस्य मन्त्रः?

(क) ऋग्वेदस्य (ग) सामवेदस्य

(ख) यजुर्वेदस्य (घ) अथर्ववेदस्य

७. शुक्लयजुर्वेदीयरुद्रविधौ शतरुद्रीयविधिः कतीनां मन्त्राणां पाठो भवति?

(क) १०० (ग) ८५

(ख) १५० (घ) ५५

८. रुद्राष्टाध्यायां प्रथमेऽध्याये कति मन्त्राः?

(क) १० मन्त्राः (ग) १५ मन्त्राः
(ख) १२ मन्त्राः (घ) १३ मन्त्राः

९. द्वितीयाध्यायस्थमन्त्राणां रुद्राष्टाध्याय्यां का सङ्ख्या?

(क) २० (ग) १७
(ख) २५ (घ) २२

१०. रुद्राष्टाध्याय्यां तृतीयाध्याये किन्नाम सूक्तम्?

(क) आदित्यसूक्तम् (ग) पुरुषसूक्तम्
(ख) अप्रतिरथसूक्तम् (घ) श्रीसूक्तम्

११. रुद्राष्टाध्याय्यामप्रतिरथसूक्ते कति मन्त्राः सन्ति?

(क) १७ (ग) १८
(ख) १५ (घ) २०

१२. रुद्राष्टाध्याय्यां शतरुद्रीयसंज्ञकः कोऽध्यायः?

(क) प्रथमोऽध्यायः (ग) चतुर्थोऽध्यायः
(ख) तृतीयोऽध्यायः (घ) पञ्चमोऽध्यायः

१३. रुद्राष्टाध्याय्यां चतुर्थेऽध्याये कति मन्त्राः?

(क) १७ (ग) १८
(ख) १५ (घ) १४

१४. रुद्राष्टाध्याय्यां कति मन्त्राः शतरुद्रीयेऽध्याये?

(क) ६४ (ग) ६६
(ख) ६५ (घ) ७०

१५. रुद्राष्टाध्याय्यां पार्थिवपूजनविधिः कस्मिन्नध्याये वर्तते?

(क) द्वितीयेऽध्याये (ग) परिशिष्टे भागे
(ख) प्रथमेऽध्याये (घ) तृतीयेऽध्याये

१६. रुद्राष्टाध्याय्यां कस्मिन्नध्याये शान्त्यध्यायः?

(क) नवमेऽध्याये (ग) द्वितीयेऽध्याये
(ख) चतुर्थेऽध्याये (घ) पञ्चमेऽध्याये

१७. रुद्राष्टाध्याय्यां कस्मिन्नध्याये महच्छिर:सूक्तम्?

(क) षष्ठेऽध्याये (ग) तृतीयेऽध्याये
(ख) द्वितीयेऽध्याये (घ) चतुर्थेऽध्याये

१८. रुद्राष्टाध्याय्यां चमकानुवाकः कस्मिन्नध्याये?

(क) प्रथमेऽध्याये (ग) द्वितीयेऽध्याये
(ख) अष्टमे ध्याये (घ) चतुर्थेऽध्याये

१९. रुद्राष्टाध्याय्यामष्टमेऽध्याये कति मन्त्राः सन्ति?

(क) २९ मन्त्राः (ग) १८ मन्त्राः
(ख) २४ मन्त्राः (घ) २० मन्त्राः

२०. रुद्राष्टाध्यायां रुद्रजरासूक्तं कस्मिन्नध्याये?

(क) सप्तमेऽध्याये (ग) पञ्चमेऽध्याये
(ख) तृतीयेऽध्याये (घ) चतुर्थेऽध्याये

२१. रुद्राष्टाध्याय्यां सप्तसङ्ख्याकाः मन्त्राः कस्मिन्नध्याये सन्ति?

(क) सप्तमेऽध्याये (ग) चतुर्थेऽध्याये
(ख) पञ्चमेऽध्याये (घ) द्वितीयेऽध्याये

●

उत्तरमाला

१. ख	८. क	१५. ग
२. क	९. घ	१६. क
३. घ	१०. ख	१७. क
४. ख	११. क	१८. ख
५. घ	१२. घ	१९. क
६. क	१३. क	२०. क
७. क	१४. ग	२१. क

●

कर्मकाण्ड-ग्रन्थाः
(हिन्दी-टीकासहिताः)

पं० वेणीरामगौडकृत—

- यज्ञमीमांसा २७५-००
- यज्ञहवनमन्त्रसंग्रह ३५-००
- रुद्रयागहवनविधि ५-००
- श्रौतयज्ञपरिचय ५०-००
- यज्ञप्रसाद ३०-००
- यज्ञप्रवचन ५०-००
- यज्ञपरिचय ३०-००
- यज्ञमाहात्म्य ५०-००

पं० अशोककुमारगौडकृत—

- अन्नपूर्णारहस्यम् १५०-००
- श्रीकृष्णरहस्यम् १००-००
- गणपतिरहस्यम् १००-००
- गायत्रीरहस्यम् १५०-००
- गङ्गारहस्यम् १००-००
- नृसिंहरहस्यम् १००-००
- पूजारहस्यम् ६०-००
- रामरहस्यम् १२५-००
- राधारहस्यम् १००-००
- रुद्रयागरहस्यम् १२५-००
- लक्ष्मीरहस्यम् १५०-००
- विष्णुयागरहस्यम् १००-००
- विष्णुरहस्यम् ९०-००
- खाँटूबाबा श्याम र० १००-००
- शिवरहस्यम् ७५-००
- सरस्वतीरहस्यम् १००-००
- सूर्यरहस्यम् ४०-००
- सूर्ययागरहस्यम् १००-००
- हनुमद्यागरहस्यम् १००-००
- पञ्चदेव-प्रतिष्ठारहस्यम् १५०-००
- वेदीपूजारहस्यम् १५०-००

महर्षि अभयकात्यायनकृतटीका—

- कुण्डमण्डपसिद्धिः ६०-००
- कुण्डार्कः ६०-००
- कुण्डरत्नावली यन्त्रस्थ

अन्यकृतग्रन्थ—

- सन्ध्योपासनपद्धति ४०-००
- निर्णयसिन्धु ४२५-००
- धर्मसिन्धु ३५०-००
- हिन्दू संस्कार १५०-००
- गृहप्रवेशपद्धति ४५-००
- पौराणकर्मदर्पण (मूलमात्र) ५००-००
- रुद्राध्याय : नमक-चमक (मूलमात्र) १५-००
- आह्निकसूत्रावलि (मूलमात्र) ७५-००
- ऋग्ब्रह्मकर्मसमुच्चय (मूलमात्र) २५०-००
- कर्मकाण्डप्रदीप (मूलमात्र) २५०-००
- नित्यनैमित्तिककर्मसमुच्चयः (मूल) १२५-००
- बृहत्स्तोत्ररत्नाकर ७०-००
- श्रीमद्भागवत कथा (साप्ताहिक) १-२ भाग : शिवप्रसाद द्विवेदी ३००-००
- नवाह्निक वाल्मीकि रामायण कथा ४००-००
- शुक्लयजुर्विधानसूत्रम् ('यजुर्मञ्जरी' संस्कृत व्याख्या संहित) २५०-००

धर्मशास्त्र-कर्मकाण्ड-ग्रन्थ

- **अन्नपूर्णा-रहस्यम्**—पं. अशोककुमार गौड़
- **कुण्डार्कः**—महर्षि अभय कात्यायन
- **कालभैरवरहस्यम्**—पं. अशोक कुमार गौड़
- **श्रीकृणारहस्यम्**—पं. अशोककुमार गौड़
- **गणपतिरहस्यम्**—पं. अशोक कुमार गौड़
- **गायत्रीरहस्यम्**—पं. अशोककुमार गौड़
- **नवग्रहयाग रहस्यम्**—पं. अशोक कुमार गौड़
- **नृसिंहरहस्यम्**—पं. अशोककुमार गौड़
- **नारदभक्तिसूत्र**—हिन्दी टीका सहित
- **पञ्चदेव-प्रतिष्ठा-रहस्यम्**—अशोककुमार गौड़
- **पारस्करगृह्यसूत्रम्**—डॉ. जगदीशचन्द मिश्र
- **भुवनेश्वरी-रहस्यम्**—पं. अशोक कुमार गौड़
- **मण्डपकुण्डसिद्धिः**—महर्षि अभय कात्यायन
- **मनुस्मृतिः**—आचार्व शिवराज कौण्डिन्यायन
- **महामृत्युजययाग-रहस्यम्**—पं. अशोक कुमार गौड़
- **यज्ञमीमांसा**—पं. वेणीरामशर्मा 'गौड़'
- **याज्ञवल्क्यस्मृतिः**—डॉ. गङ्गासागर राय
- **रामरहस्यम्**—पं. अशोककुमार गौड़
- **रुद्रपद्धतिः**—पं. दौलतराम गौड़
- **रुद्रयागरहस्यम्**—पं. अशोककुमार गौड़
- **लक्ष्मीरहस्थम्**—पं. अशोककुमार गौड़
- **वेदी पूजा-रहस्यम्**—पं. अशोक कुमार गौड़
- **श्रीश्यामरहस्यम्**—पं. अशोक कुमार गौड़
- **सूर्ययागरहस्यम्**—पं. अशोक कुमार गौड़
- **हनुमदयागरहस्यम्**—पं. अशोककुमार गौड़

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

चौखम्बा पब्लिशिंग हाउस
दिल्ली